नव-ग्रह साधना

नौ ग्रहों-सहित
ब्रह्माण्ड की सृष्टि

यथा ब्रह्माण्डे
तथा पिण्डे

नौ ग्रहों को गुरु-वत्, दिव्य प्रेरणा-दायक शक्ति
के रूप में स्वीकार करें।

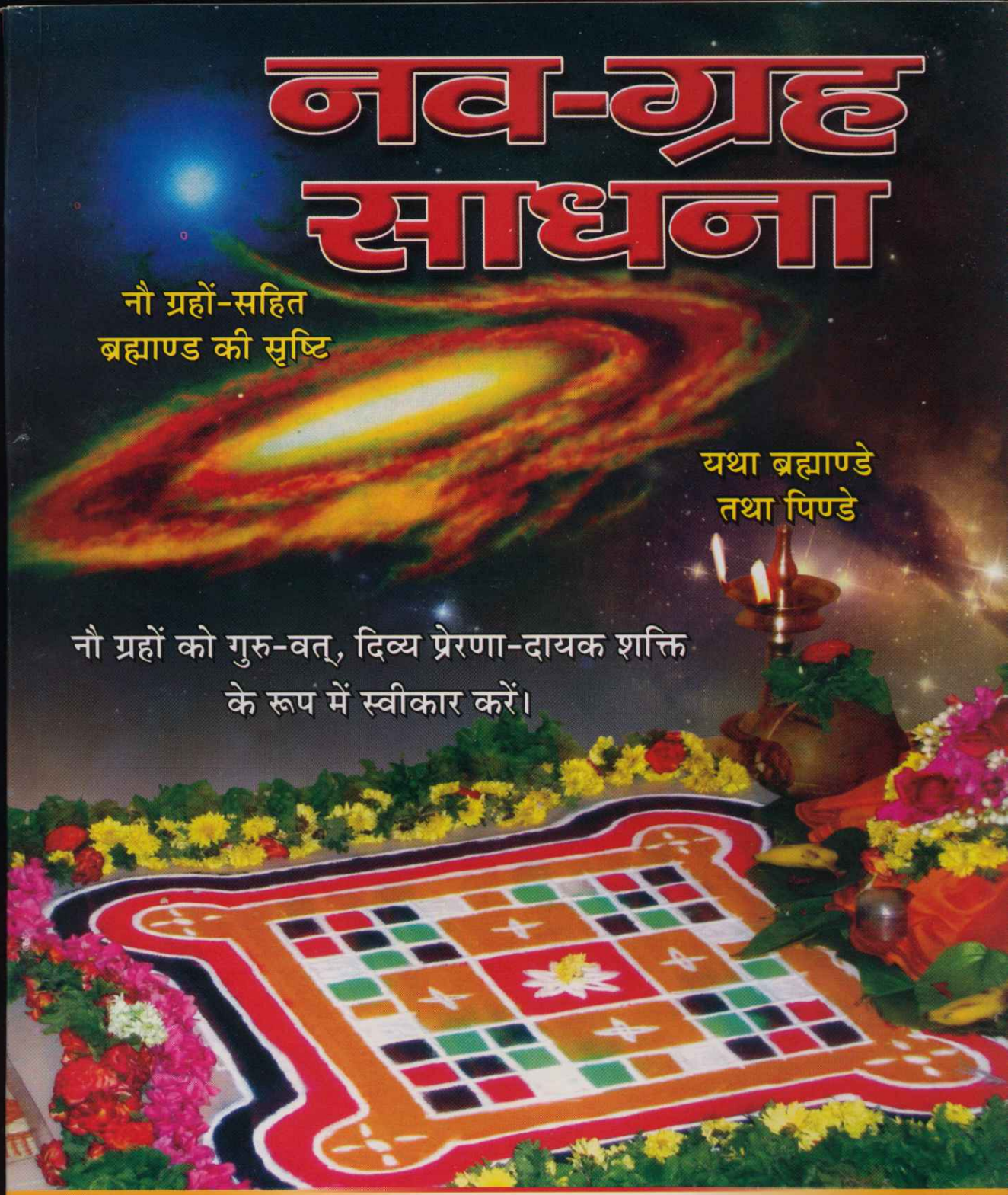

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

नौ ग्रहों का संक्षिप्त पूजन

नौ ग्रहों के संक्षिप्त पूजन के लिए अपने सम्मुख एक पात्र (बर्तन) या मिट्टी का प्याला रख लें। फिर हाथ में गन्ध, अक्षत व पुष्प लेकर भावना से सामूहिक रूप में नौ ग्रहों का आवाहन करें। यथा–

ॐ सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनिश्चर-राहु-केतु-नव-ग्रहेभ्यो नमः। ॐ नव-ग्रहाः! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।

उक्त मन्त्र पढ़कर अपने सम्मुख रक्खे पात्र में गन्धाछत व पुष्प छोड़े। फिर निम्न मन्त्रों से सूर्यादि नौ ग्रहों का क्रमशः पूजन करें। यथा–

१. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
२. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
३. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
४. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि।
५. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः धूपं घ्रापयामि।
६. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।
७. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
८. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।
९. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
१०. ॐ सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि।

अन्त में हाथ जोड़कर सभी नौ ग्रहों की प्रार्थना करें। यथा–

ॐ ब्रह्मा-मुरारिस्त्रिपुरान्त-कारी,
भानुः शशी भूमि-सुतोबुधश्च।।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः,
सर्वे ग्रहाः शान्ति-करा भवन्तु।।

'कौल-कल्पतरु' चण्डी की विशेष प्रस्तुति

नव-ग्रह-साधना

सचित्र नवीन संस्करण

आदि-सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

★

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Email : chandi_dham@rediffmail.com

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्रद्धाञ्जलि !

।। श्रीगुरु कुलानन्दमयी देव्यम्बा-सहित
श्रीकुल-भूषणानन्द-नाथ
श्रीपादुकां नमो नमः ।।

कुल-भूषण

पं० रमादत्त शुक्ल

तृतीय पुण्य-तिथि
शरत् पूर्णिमा, विश्वावसु सं० २०६९ वि०-२९ अक्टूबर, २०१२

द्वितीय संस्करण
शरत् पूर्णिमा, विश्वावसु सं० २०६९ वि०-२९ अक्टूबर, २०१२
सर्वाधिकार सुरक्षित
परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रम

नव-ग्रहों के सूक्ष्म देव-स्वरूप ..... (पाँच)

(१) 'मन्त्र-कोष' में दिए गए मन्त्रों का विधान १-५४

१. श्रीसूर्य (मार्तण्ड-भैरव)-द्व्यक्षर-मन्त्र-साधना, २. श्रीसूर्य-त्र्यक्षर-मन्त्र-साधना, ३. श्रीसूर्य-चतुरक्षर-मन्त्र-साधना, ४. श्रीसूर्य-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना, ५. श्रीसूर्य-दशाक्षर-मन्त्र-साधना, ६. श्रीचन्द्र-एकाक्षर-मन्त्र-साधना, ७. श्रीचन्द्र-त्र्यक्षर-मन्त्र-साधना, ८. श्रीचन्द्र-षडक्षर-मन्त्र-साधना, ९. श्रीमङ्गल-षडक्षर-मन्त्र-साधना, १०. श्रीमङ्गल-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना, ११. श्रीमङ्गल-दशाक्षर-मन्त्र-साधना, १२. श्रीबुध-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना, १३. श्रीवृहस्पति-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना, १४. श्रीशुक्र-नवाक्षर-मन्त्र-साधना, १५. श्रीशुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना (१), १६. श्रीशुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना (२), १७. श्रीशनैश्चर-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना, १८. श्री राहु-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना, १९. श्रीकेतु-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना, २०. ग्रहों की माताओं के मन्त्रों की साधना(१. श्रीसूर्य-जननी पिङ्गला-त्रयोदशाक्षर-मन्त्र-साधना, २. श्रीचन्द्र-जननी मङ्गला-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना, ३. श्रीमङ्गल-जननी भ्रामरी-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना, ४. श्रीबुध-जननी भद्रिका-त्रयोविंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना, ५. श्रीगुरु-जननी धान्या-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना, ६. श्रीशुक्र-जननी सिद्धा-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना, ७. श्रीशनि-जननी उल्का-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना, ८. श्रीराहु-जननी सङ्कटा-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना, ९. श्रीकेतु-जननी विकटा-एक-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना), २१. नव-ग्रह-गायत्री-विधान।

(२) नव-ग्रह-शान्ति-विधान ५५-६४

१. सूर्य-शान्ति-विधान, २. चन्द्र-शान्ति-विधान, ३. मङ्गल-शान्ति-विधान, ४. बुध-शान्ति-विधान, ५. बृहस्पति-शान्ति-विधान, ६. शुक्र-शान्ति-विधान, ७. शनि-शान्ति-विधान, ८. राहु-शान्ति-विधान, ९. केतु-शान्ति-विधान।

(३) नव-ग्रह-शान्ति-प्रयोग ६५-७४

१. सूर्य-शान्ति, २. चन्द्र-शान्ति, ३. मङ्गल-शान्ति, ४. बुध-शान्ति, ५. बृहस्पति-शान्ति, ६. शुक्र-शान्ति, ७. शनि-शान्ति, ८. राहु-शान्ति, ९. केतु-शान्ति, १०. सर्व-ग्रह-पीड़ा-नाशक विधान।

(४) नव-ग्रह-स्तोत्र-संग्रह ७५-९०

१. श्रीत्रैलोक्य-मङ्गल-सूर्य-कवचम्, २. आदित्याष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्, ३. श्रीचन्द्र-कवचम्, ४. श्रीचन्द्राष्ट-विंशति-नाम-स्तोत्रम्, ५. श्रीअङ्गारक (मङ्गल, भौम) कवचम्, ६. श्रीअङ्गारक-स्तोत्रम्, ७. ऋण-मोचक-श्रीमङ्गल-स्तोत्रम्, ८. श्रीबुध-कवचम्, ९. श्रीबुध-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम्, १०. श्रीबृहस्पति-कवचम्, ११. श्रीबृहस्पति-स्तोत्रम्, १२. श्रीशुक्र-कवचम्, १३. श्रीशुक्र-स्तव-राज-स्तोत्रम्, १४. श्रीशुक्र-स्तोत्रम्, १५. श्रीशनि-नाम-स्तुतिम्, १६. श्रीशनि-वज्र-पञ्जर-कवचम्, १७. श्रीशनि-रक्षा-स्तवम्, १८. श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नाम, १९. श्रीराहु-कवचम्, २०. श्रीराहु-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम्, २०. श्रीकेतु-कवचम्, २१. श्रीकेतु-विंशति-नाम-स्तोत्रम्, २२. श्रीनव-ग्रह-पीड़ा-हर-स्तोत्रम्।

(५) नव-ग्रह-अष्टोत्तर-शत-नामावली-विधान ९१-११२

१. सङ्कल्प, ध्यान एवं पूजन, २. श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ३. श्रीसोम (चन्द्र) - अष्टोत्तर-शत-नामावली, ४. श्रीमङ्गल-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ५. श्रीबुध-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ६. श्रीवृहस्पति-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ७. श्रीशुक्र-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ८. श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ९. श्रीराहु-अष्टोत्तर-शत-नामावली, १०. श्रीकेतु-अष्टोत्तर-शत-नामावली, ११. अष्टोत्तर-शत-नामों द्वारा 'पूजन', 'तर्पण' एवं 'हवन'।

(६) नव-ग्रह 'वार'-व्रत-विधि एवं कुछ विशिष्ट प्रयोग ११३-१२८

१. 'सूर्य'-ग्रह हेतु 'रवि-वार का व्रत', २. 'चन्द्र'-ग्रह हेतु 'सोम-वार का व्रत', ३. 'मङ्गल'-ग्रह हेतु 'मङ्गल-वार का व्रत', ४. 'बुध'-ग्रह हेतु 'बुध-वार का व्रत', ५. 'गुरु'-ग्रह हेतु 'गुरु-वार का व्रत', ६. 'शुक्र'-ग्रह हेतु 'शुक्र-वार का व्रत', ७. 'शनि'-ग्रह हेतु 'शनि-वार का व्रत', ८. 'राहु' एवं 'केतु'-ग्रह हेतु कुछ उपाय, ९. सर्व-रोग-नाशक श्रीसूर्य-स्तव-राज-स्तोत्र-विधान, १०. पद्म-पुराणोक्त नीरोग-कारी आदित्य-हृदय-प्रयोग, ११. वाल्मीक-रामायणोक्त शत्रु-विनाशक आदित्य-हृदय, १२. ऋण, रोग, दुर्घटना, तनाव, वैमनस्य-नाशक मङ्गल-स्तोत्र-विधान, १३. नव-ग्रह-यन्त्र-साधना, १४. श्रीशनि एवं शनि-भार्या-स्तोत्र।

★★★

नव-ग्रहों के सूक्ष्म देव-स्वरूप

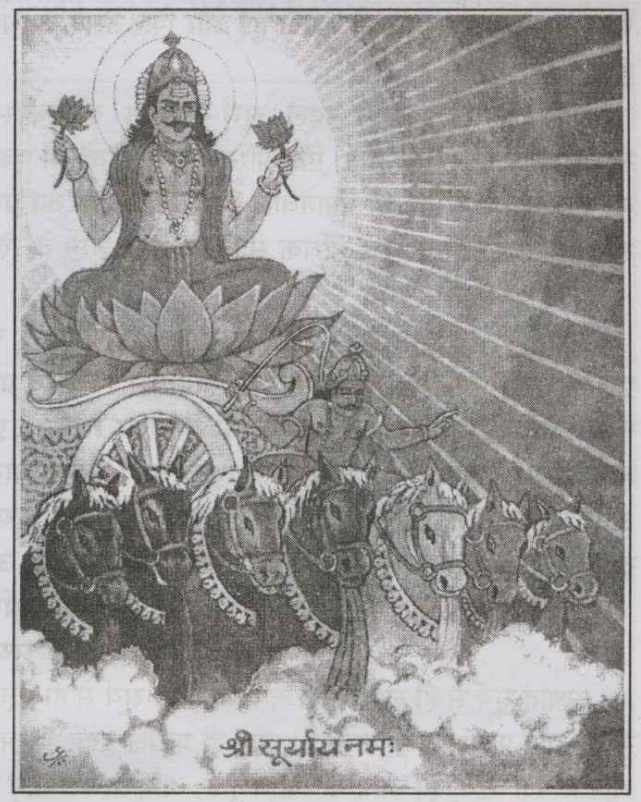

भारत में '**ग्रहों**' के स्थूल स्वरूप के साथ-साथ **सूक्ष्म देव-स्वरूप** के सम्बन्ध में भी विशेष रूप से अनुसन्धान हुआ है। अनुसन्धान के फल-स्वरूप; मानव-जीवन की नाना प्रकार की विषमताओं को सही रूप में समझने एवं उन्हें दूर करने के लिए, '**ग्रहों**' के **सूक्ष्म देव-स्वरूपों की उपासनाएँ** भी हमारे यहाँ बताई गई हैं। भारत का यह **अनुसन्धान-मय प्राचीन ज्ञान-विज्ञान** आज बहुत महत्त्व-पूर्ण है क्योंकि साधारण-से-साधारण मनुष्य भी आज अपने जीवन को हर तरह से सुखी, समृद्ध बनाने हेतु तत्पर दिखाई देता है।

आधुनिक विज्ञान-'**ग्रहों**' के सम्बन्ध में प्राचीन भारत के स्थूल ज्ञान को तो मान्यता प्रदान करता है, किन्तु '**ग्रहों**' के **सूक्ष्म देव-स्वरूप-सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान** को वह न केवल अस्वीकार करता है, अपितु उपहास की दृष्टि से उसका तिरस्कार भी करता है। इस प्रकार आधुनिक सोच अत्यन्त संकुचित, केवल भौतिक दृश्यों तक सीमित है और ऐसी संकुचित मान्यताओं के कारण आज का पढ़ा-लिखा समाज-प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाले '**सूर्य**' आदि ग्रहों से वह प्रेरणाएँ, शक्ति, मार्ग-दर्शन प्राप्त नहीं कर पा रहा है, जो उसे अत्यन्त सहज रूप में प्राप्त हो सकती हैं।

करोड़ों-अरबों की धन-राशि को व्यय कर, आज सर्व-साधारण को '**ग्रहों**' के सम्बन्ध में मात्र स्थूल स्वरूप की जानकारियाँ दी जा रही हैं। यही नहीं, करोड़ों-अरबों लोगों को यह बताया जा रहा है कि बस अब हम सभी लोग विभिन्न '**ग्रहों**' पर पहुँचनेवाले ही हैं। जब कि सत्य यह है कि सब कुछ सम्पन्न धरती पर, केवल भौतिकता को मान्यता प्रदान करनेवाली आधुनिक समझ के कारण आज का मानव स्वयं अपना शत्रु बन गया है। मानव-मानव को ही मार-काट रहा है! अब क्या इसी अपूर्ण सोच या समझ को लेकर, हम अपनी धरती से बहुत दूर स्थित '**ग्रहों**' को भी सङ्कट में डालना चाहते हैं? नहीं, कदापि नहीं! हमें अपने अपरिपक्व ज्ञान को परिपक्व करना ही होगा!! मानव-जीवन के विविध पक्षों को एक समग्र दृष्टि से देखना व समझना होगा तथा क्या सफलताएँ और क्या असफलताएँ-दोनों को सही सन्दर्भों में पहचानना होगा एवं

इसके लिए हमें **भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान** के पास पुनः जाना होगा क्योंकि वहीं इस सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारियाँ हैं।

अतः आइए, संक्षेप में **भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान** को देखें और यह समझें कि किस प्रकार **'ग्रहों'** के **सूक्ष्म देव-स्वरूपों की खोज** हुई और फिर उसके आधार पर नाना प्रकार की उपासनाओं का प्रचलन हुआ।

प्राचीन भारत में; सबसे पहले **'सूर्य-मण्डल'** को एक स्थूल पिण्ड मात्र न समझते हुए, उसे **परमात्मा के प्रत्यक्ष रूप में** देखा गया। फिर प्रसिद्ध **'पञ्च-देवों'** में एक नाम–**भगवान् सूर्य** का निश्चित हुआ। **'सूर्य'** को स्पष्ट रूप में संसार को बनानेवाले **ईश्वर की शक्ति का प्रतीक** माना गया और इस सुतर्क के आधार पर उस शक्ति का अधिक-से-अधिक सान्निध्य प्राप्त करने के लिए अनेक विधियों की खोज हुई।

देखिए, **'सूर्योपनिषत्'**–

सूर्याद्वै खलु इमानि भूतानि जायन्ते । सूर्याद्यज्ञः पर्जन्योऽन्नमात्मा नमस्ते आदित्य। त्वमेव प्रत्यक्षं कर्म कर्त्तासि । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि । त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि। त्वमेव प्रत्यक्षं ऋगसि । त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि । त्वमेव प्रत्यक्षं सामासि । त्वमेव प्रत्यक्षमर्थं वासि। त्वमेव सर्वं छन्दोऽसि । आदित्याद्वायुर्जायते। आदित्याद्-भूमिर्जायते । आदित्यादापो जायन्ते । आदित्याज्ज्योतिर्जायते । आदित्याद्-व्योम-दिशो जायन्ते । आदित्याद्देवा जायन्ते । आदित्या-द्वेदा जायन्ते । आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपति । असावादित्यो ब्रह्म .....

सूर्याद् भवन्ति भूतानि, सूर्येण पालितानि तु ।
सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति, यः सूर्यः सोऽहमेव च ।।

अर्थात् सूर्य से ही सभी जीव उत्पन्न होते हैं। सूर्य से ही यज्ञ, मेघ, अन्न और आत्मा है। हे आदित्य आपको नमः। आप प्रत्यक्ष कर्म-कर्त्ता हैं। आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्मा हैं। आप ही प्रत्यक्ष विष्णु हैं। आप ही प्रत्यक्ष रुद्र हैं। आप प्रत्यक्ष ऋक् हैं। आप प्रत्यक्ष यजु हैं, आप प्रत्यक्ष साम हैं, आप प्रत्यक्ष अथर्व हैं। आप सभी छन्द हैं, आदित्य से वायु उत्पन्न होता है, आदित्य से भूमि उत्पन्न होती है, आदित्य से जल उत्पन्न होता है, आदित्य से ज्योति उत्पन्न होती है, आदित्य से आकाश और दिक् उत्पन्न होते हैं, आदित्य से देव-गण उत्पन्न होते हैं, आदित्य से वेद उत्पन्न होते हैं। आदित्य ही वह मण्डल है, जिससे यह ताप मिलता है। यह आदित्य ब्रह्म है।.....

सूर्य से पञ्च-तत्त्वात्मक भूत उत्पन्न होते हैं, सूर्य से पालित होते हैं और सूर्य में लय होते हैं। जो सूर्य है, वही मैं हूँ।

'सूर्य-तापिन्युपनिषत्' उक्त बातों को और भी अधिक स्पष्ट रूप में कहते हुए सूर्योपासना के बारे में स्पष्ट निर्देश देता है कि–

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च, रुद्र एष हि भास्करः ।
त्रि-मूर्त्यात्मा त्रि-वेदात्मा, सर्व-देव-मयो रविः ।।
प्रत्यक्ष-दैवतं सूर्यः, परोक्षं सर्व-देवताः ।
सूर्योस्योपासनं कार्यं, गच्छेत् सूर्य-सँसदम् ।।

अर्थात् सूर्य ही ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और भास्कर हैं। सर्व-देव-स्वरूप रवि त्रि-मूर्ति और त्रि-वेद हैं। सूर्य-प्रत्यक्ष और देव परोक्ष हैं। सूर्य की उपासना करनी चाहिए। इससे सूर्य का सान्निध्य प्राप्त होता है।

इस प्रकार **'सूर्योपनिषत्'**, **'सूर्य-तापिन्युपनिषत्'**–जैसे प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर हमारे यहाँ **'सूर्य' की उपासना** विधि-वत् प्रारम्भ हुई और आगे चलकर उसी क्रम में **'सौर्योपासकों'** का अपना एक विशिष्ट सम्प्रदाय भी बना, जिसके द्वारा **'ब्रह्म' के प्रत्यक्ष प्रतीक 'सूर्य'-देव की उपासना-प्रणाली** विस्तार से प्रकाश में आई। यही नहीं, कालान्तर में मानव-जीवन की अन्य विविधताओं को समेटने के उद्देश्य से **'सूर्य'-मण्डल की अन्य शक्तियों–चन्द्रमा, मङ्गल, बुध आदि की उपासनाएँ** भी प्रचलित हुईं। ऐसी उपासनाओं का ही एक छोटा-सा संग्रह यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है। आशा है कि इससे **प्राचीन मान्यताओं का सु-सङ्गत-रूप में प्रचलन** होगा और पूरा मानव-समाज लाभान्वित होगा।

सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और **केतु**–सभी के **ध्यान, मन्त्र, यन्त्र, स्तोत्र** यहाँ प्रस्तुत हुए हैं। इन्हें समझकर अथवा अनुभवी लोगों से इनका मर्म जानकर–इच्छुक बन्धु इनसे लाभ उठा सकते हैं। समझने के लिए **'ध्यान'** व **'स्तोत्रों'** को श्रद्धा-पूर्वक हृदयङ्गम करना आवश्यक है। **'नामों'**, **'मन्त्रों'** में भी रहस्य छिपे हुए हैं। साथ ही यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि **'सूर्य'-आदि नव-ग्रहों** के पीछे **साक्षात् ईश्वर की शक्ति** है, जिन्हें हृदयङ्गम कर हम अपने स्तर पर आवश्यक **शक्ति, ज्ञान** प्राप्त कर सकते हैं।

'सूर्य-मण्डल' के **सूक्ष्म देव-स्वरूप** को हृदयङ्गम करने के लिए ही हमारे यहाँ प्राय: **देवी-देवताओं के ध्यान 'सूर्य'-मण्डल में** कर साधना करने के स्पष्ट निर्देश भी दिए गए हैं। **सरस्वती, गायत्री, त्रिपुरा** आदि प्रधान देवियों और **ब्रह्मा, नारायण, शिव** आदि प्रमुख देवों का ध्यान-**'सूर्य'-मण्डल** में करने के सम्बन्ध में स्पष्ट विवरण मिलते हैं। यथा–

'सूर्य'-मण्डल में **माँ गायत्री** के **ध्यान** हेतु कहा गया है कि–

श्वेत - वर्णा समुद्दिष्टा, कौशेय - वसना तथा । श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ।
आदित्य-मण्डलस्था च, ब्रह्म-लोक-गताथवा । अक्ष-सूत्र-धरा देवी, पद्मासन-गता शुभा ।।

अर्थात माँ गायत्री श्वेत-वर्णा, रेशमी वस्त्रधारी, श्वेत-चन्दन, पुष्प, अलङ्कारों से भूषित, आदित्य-मण्डल अथवा ब्रह्म-लोक में स्थित हैं।

श्रीललिता-सहस्त्र-नाम में **भगवती ललिता** का एक नाम '**भानु-मण्डल-मध्यस्था**' बताया गया है। **भगवती त्रिपुरा** के **ध्यान** के सम्बन्ध में कहा गया है कि–

सूर्य - मण्डल-मध्यस्थां, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।
पाशांकुश-धनुर्वाण-हस्तां ध्यायेत् सु-साधकः ।।

ठीक इसी प्रकार, **नारायण** के **ध्यान** के सम्बन्ध में भी निर्देश प्राप्त होता है कि–

दृश्यो हिरण्मयो देव, आदित्यो नित्य-संस्थितः ।
यः सूक्ष्मं सोऽहमित्येव, चिन्तयाम सदैव तु ।।

अन्त में, यहाँ यह उल्लेखनीय है कि **ग्रह-सम्बन्धी सूक्ष्म भावों** को हृदयङ्गम कराने के लिए प्रस्तुत संग्रह–विशेषाङ्क में **ग्रह-जननी, ग्रह-भार्या, ग्रह-पुत्र** आदि के रूप में भी कुछ चुनी हुई सामग्री प्रस्तुत हुई है। हमें विश्वास है कि '**ग्रह**'-साधना-सम्बन्धी यह छोटा-सा संग्रह उन सभी लोगों को उपयोगी सिद्ध होगा, जो **भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के प्रेमी** हैं और जो आधुनिक एक-मात्र भौतिक दृष्टिवाली जानकारियों की अपूर्णता से परिचित हो चुके हैं।

वसन्त पञ्चमी, सं० २०६२ वि०
(३ फरवरी, २००६)

–ऋतशील शर्मा

नव-ग्रह-साधना

(१)

'मन्त्र-कोष' में दिए गए मन्त्रों का विधान

'मन्त्र-कोष' में 'सूर्य' आदि 'नव-ग्रहों' के मन्त्र उद्धार-सहित क्रम से दिए गए हैं। यहाँ उनमें से कुछ प्रमुख मन्त्रों का विधान विस्तार से प्रस्तुत है।

मन्त्रों का 'जप' करने से पूर्व यह देखना चाहिए कि मन्त्र अनुकूल है या नहीं। इसके लिए विधि विस्तार से 'मन्त्र-सिद्धि के उपाय' नामक पुस्तक में सरल हिन्दी-भाषा में आवश्यक रेखा-चित्रों के साथ दी गई है। 'कुलाकुल-चक्र', 'राशि-चक्र', 'ऋणि-धनी-चक्र' आदि 'चक्रों' से विचार करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि कौन-सा मन्त्र अनुकूल है। 'अनुकूल मन्त्र' को गुरु-देव के मुख से तीन बार सुने और तीन बार ही स्वयं उसका उच्चारण कर गुरु-देव को सुनाए। तब उसका विधि-वत् 'प्रयोग' करे। इस प्रकार मन्त्र का प्रयोग करने पर निश्चय ही 'विपरीत ग्रह' की बाधाएँ दूर होंगी और सब प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त होगी।

गुरु-देव यदि उपलब्ध न हों, तो आदि-गुरु भगवान् शङ्कर को गुरु-देव मानकर मन-ही-मन उनसे तीन बार 'मन्त्र' को सुनना चाहिए और तीन बार स्वयं 'मन्त्र' का उच्चारण कर मन-ही-मन उन्हें सुनाकर उसे प्रयोग में लाना चाहिए।

मन्त्रों को विशेष रूप में अपने अनुकूल बनाने के लिए 'वर्ण-माला' में 'जप' करना चाहिए। 'वर्ण-माला' में 'जप' करने से मन्त्र अपने अनुकूल तो होता ही है, साथ-ही वह जाग्रत भी हो जाता है। अतः यहाँ 'नव-ग्रह' के मन्त्रों को 'वर्ण-माला' में किस प्रकार 'जप' करें, यह भी प्रस्तुत है। इच्छुक बन्धु चाहें तो, अपनी सुविधा के लिए 'वर्ण-माला' में जप को एक पुस्तिका में नित्य निश्चित समय पर लिखकर भी लाभ उठा सकते हैं।-सं०

१. श्री सूर्य (मार्तण्ड-भैरव)-द्व्यक्षर-मन्त्र-साधना ३
२. श्री सूर्य-त्र्यक्षर-मन्त्र-साधना ५
३. श्री सूर्य-चतुरक्षर-मन्त्र-साधना ७
४. श्री सूर्य-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना ९
५. श्री सूर्य-दशाक्षर-मन्त्र-साधना १२
६. श्री चन्द्र-एकाक्षर-मन्त्र-साधना १५

७. श्री चन्द्र-त्र्यक्षर-मन्त्र-साधना १७
८. श्री चन्द्र-षडक्षर-मन्त्र-साधना १९
९. श्री मङ्गल-षडक्षर-मन्त्र-साधना २१
१०. श्री मङ्गल-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना २३
११. श्री मङ्गल-दशाक्षर-मन्त्र-साधना २५
१२. श्री बुध-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना २८
१३. श्री वृहस्पति-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना ३०
१४. श्री शुक्र-नवाक्षर-मन्त्र-साधना ३२
१५. श्री शुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना ३५
१६. श्री शुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना ३८
१७. श्री शनैश्चर-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना ४१
१८. श्री राहु-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना ४३
१९. श्री केतु-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना ४५
२०. ग्रहों की माताओं के मन्त्रों की साधना ४७
१. श्री सूर्य-जननी पिङ्गला-त्रयोदशाक्षर-मन्त्र-साधना ४७
२. श्री चन्द्र-जननी मङ्गला-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना ५०
३. श्री मङ्गल-जननी भ्रामरी-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना ५०
४. श्री बुध-जननी भद्रिका-त्रयोविंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना ५१
५. श्री गुरु-जननी धान्या-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना ५१
६. श्री शुक्र-जननी सिद्धा-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना ५१
७. श्री शनि-जननी उल्का-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना ५२
८. श्री राहु-जननी सङ्कटा-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना ५२
९. श्री केतु-जननी विकटा-एक-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना ५३
२१. नव-ग्रह-गायत्री-विधान ५३

★★★

श्री सूर्य(मार्तण्ड-भैरव)-द्व्यक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीसूर्य (मार्तण्ड-भैरव)-द्व्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीदेव-भाग ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीआदित्य देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीदेवभाग-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीआदित्याय देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ठ्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ठ्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ठ्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ठ्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ठ्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ठ्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ठ्रां हृदयाय नमः। ठ्रीं शिरसे स्वाहा। ठ्रूं शिखायै वषट्। ठ्रैं कवचाय हुम्। ठ्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ठ्रः अस्त्राय फट्।

मूर्ति-न्यास-अंगुष्ठ-द्वये 'ठ्रं सूर्याय नमः'। तर्जनी-द्वये 'ठ्रिं भास्कराय नमः'। मध्यमा-द्वये 'ठ्रुं भानवे नमः'। अनामिका-द्वये 'ठ्रें रवये नमः'। कनिष्ठा-द्वये 'ठ्रों दिवाकराय नमः'। शिरसि 'ठ्रं सूर्याय नमः'। मुखे 'ठ्रिं भास्कराय नमः'। हृदये 'ठ्रुं भानवे नमः'। गुह्ये 'ठ्रें रवये नमः'। पद-द्वये 'ठ्रों दिवाकराय नमः'।

ध्यान-

हेमाम्भोज-प्रवाल-प्रतिम-निज-रुचिं चारु-खट्वाङ्ग-पद्मम्,
चक्रं शक्तिं च पाशं सृणिमति-रुचिरामक्ष-मालां कपालम् ।
हस्ताम्भोजैर्दधानं त्रि-नयन-विलसद्-वेद-वक्त्राभिरामम्,
मार्तण्डं वल्लभार्द्धं मणि-मय-मुकुटं हार-दीप्तं भजामः।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ठ्रिं ह्र्यूं (२ अक्षर)। ठ्रिं-विश्व या बिम्ब-बीज। ह्र्यूं-मार्तण्ड-भैरव-वीज।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

	८. ऋं ठ्रिं ह्र्यूं ऋं	१६. अः ठ्रिं ह्र्यूं अः
१. अं ठ्रिं ह्र्यूं अं	९. लं ठ्रिं ह्र्यूं लं	१७. कं ठ्रिं ह्र्यूं कं
२. आं ठ्रिं ह्र्यूं आं	१०. लृं ठ्रिं ह्र्यूं लृं	१८. खं ठ्रिं ह्र्यूं खं
३. इं ठ्रिं ह्र्यूं इं	११. एं ठ्रिं ह्र्यूं एं	१९. गं ठ्रिं ह्र्यूं गं
४. ईं ठ्रिं ह्र्यूं ईं	१२. ऐं ठ्रिं ह्र्यूं ऐं	२०. घं ठ्रिं ह्र्यूं घं
५. उं ठ्रिं ह्र्यूं उं	१३. ओं ठ्रिं ह्र्यूं ओं	२१. ङं ठ्रिं ह्र्यूं ङं
६. ऊं ठ्रिं ह्र्यूं ऊं	१४. औं ठ्रिं ह्र्यूं औं	२२. चं ठ्रिं ह्र्यूं चं
७. ऋं ठ्रिं ह्र्यूं ऋं	१५. अं ठ्रिं ह्र्यूं अं	२३. छं ठ्रिं ह्र्यूं छं

२४. जं ठ्रिं ह्यूं जं
२५. झं ठ्रिं ह्यूं झं
२६. ञं ठ्रिं ह्यूं ञं
२७. टं ठ्रिं ह्यूं टं
२८. ठं ठ्रिं ह्यूं ठं
२९. डं ठ्रिं ह्यूं डं
३०. ढं ठ्रिं ह्यूं ढं
३१. णं ठ्रिं ह्यूं णं
३२. तं ठ्रिं ह्यूं तं
३३. थं ठ्रिं ह्यूं थं
३४. दं ठ्रिं ह्यूं दं
३५. धं ठ्रिं ह्यूं धं
३६. नं ठ्रिं ह्यूं नं
३७. पं ठ्रिं ह्यूं पं
३८. फं ठ्रिं ह्यूं फं
३९. बं ठ्रिं ह्यूं बं
४०. भं ठ्रिं ह्यूं भं
४१. मं ठ्रिं ह्यूं मं
४२. यं ठ्रिं ह्यूं यं
४३. रं ठ्रिं ह्यूं रं
४४. लं ठ्रिं ह्यूं लं
४५. वं ठ्रिं ह्यूं वं
४६. शं ठ्रिं ह्यूं शं
४७. षं ठ्रिं ह्यूं षं
४८. सं ठ्रिं ह्यूं सं
४९. हं ठ्रिं ह्यूं हं
५०. ळं ठ्रिं ह्यूं ळं
क्ष
५१. ळं ठ्रिं ह्यूं ळं
५२. हं ठ्रिं ह्यूं हं
५३. सं ठ्रिं ह्यूं सं
५४. षं ठ्रिं ह्यूं षं
५५. शं ठ्रिं ह्यूं शं
५६. वं ठ्रिं ह्यूं वं
५७. लं ठ्रिं ह्यूं लं
५८. रं ठ्रिं ह्यूं रं
५९. यं ठ्रिं ह्यूं यं
६०. मं ठ्रिं ह्यूं मं
६१. भं ठ्रिं ह्यूं भं
६२. बं ठ्रिं ह्यूं बं
६३. फं ठ्रिं ह्यूं फं
६४. पं ठ्रिं ह्यूं पं
६५. नं ठ्रिं ह्यूं नं
६६. धं ठ्रिं ह्यूं धं
६७. दं ठ्रिं ह्यूं दं
६८. थं ठ्रिं ह्यूं थं
६९. तं ठ्रिं ह्यूं तं
७०. णं ठ्रिं ह्यूं णं
७१. ढं ठ्रिं ह्यूं ढं
७२. डं ठ्रिं ह्यूं डं
७३. ठं ठ्रिं ह्यूं ठं
७४. टं ठ्रिं ह्यूं टं
७५. ञं ठ्रिं ह्यूं ञं
७६. झं ठ्रिं ह्यूं झं
७७. जं ठ्रिं ह्यूं जं
७८. छं ठ्रिं ह्यूं छं
७९. चं ठ्रिं ह्यूं चं
८०. ङं ठ्रिं ह्यूं ङं
८१. घं ठ्रिं ह्यूं घं
८२. गं ठ्रिं ह्यूं गं
८३. खं ठ्रिं ह्यूं खं
८४. कं ठ्रिं ह्यूं कं
८५. अः ठ्रिं ह्यूं अः
८६. अं ठ्रिं ह्यूं अं
८७. औं ठ्रिं ह्यूं औं
८८. ओं ठ्रिं ह्यूं ओं
८९. ऐं ठ्रिं ह्यूं ऐं
९०. एं ठ्रिं ह्यूं एं
९१. ऌं ठ्रिं ह्यूं ऌं
९२. लं ठ्रिं ह्यूं लं
९३. ॠं ठ्रिं ह्यूं ॠं
९४. ऋं ठ्रिं ह्यूं ऋं
९५. ऊं ठ्रिं ह्यूं ऊं
९६. उं ठ्रिं ह्यूं उं
९७. ईं ठ्रिं ह्यूं ईं
९८. इं ठ्रिं ह्यूं इं
९९. आं ठ्रिं ह्यूं आं
१००. अं ठ्रिं ह्यूं अं
१०१. अं ठ्रिं ह्यूं अं
१०२. कं ठ्रिं ह्यूं कं
१०३. चं ठ्रिं ह्यूं चं
१०४. टं ठ्रिं ह्यूं टं
१०५. तं ठ्रिं ह्यूं तं
१०६. पं ठ्रिं ह्यूं पं
१०७. यं ठ्रिं ह्यूं यं
१०८. शं ठ्रिं ह्यूं शं

होम-(१) घृत, (२) मधु और (३) शर्करा-युक्त विकसित पद्मों से 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से कान्ति, पुत्र, धन, वाक्-सिद्धि और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

★★★

श्रीसूर्य-त्र्यक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीसूर्य-त्र्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीदेव-भाग ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीआदित्य देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीदेवभाग-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीआदित्याय देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

मन्त्र-न्यास-मूलाधार से पादाग्र तक 'ह्रां नमः'। कण्ठ से मूलाधार तक 'ह्रीं नमः'। मस्तक से कण्ठ तक 'सः नमः'।

ध्यान-

रक्ताम्बुजासनमशेष-गुणैक-सिन्धुम्,
भानुं समस्त-जगतामधिपं भजामि ।
पद्म-द्वयाभय-वरान् दधतं कराब्जै-
र्माणिक्य-मौलिमरुणाङ्ग-रुचिं त्रिनेत्रम् ।।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ह्रां ह्रीं सः (३ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ह्रां ह्रीं सः अं
२. आं ह्रां ह्रीं सः आं
३. इं ह्रां ह्रीं सः इं
४. ईं ह्रां ह्रीं सः ईं
५. उं ह्रां ह्रीं सः उं
६. ऊं ह्रां ह्रीं सः ऊं
७. ऋं ह्रां ह्रीं सः ऋं
८. ॠं ह्रां ह्रीं सः ॠं
९. ऌं ह्रां ह्रीं सः ऌं
१०. ॡं ह्रां ह्रीं सः ॡं
११. एं ह्रां ह्रीं सः एं
१२. ऐं ह्रां ह्रीं सः ऐं
१३. ओं ह्रां ह्रीं सः ओं
१४. औं ह्रां ह्रीं सः औं
१५. अं ह्रां ह्रीं सः अं
१६. अः ह्रां ह्रीं सः अः
१७. कं ह्रां ह्रीं सः कं
१८. खं ह्रां ह्रीं सः खं
१९. गं ह्रां ह्रीं सः गं
२०. घं ह्रां ह्रीं सः घं
२१. ङं ह्रां ह्रीं सः ङं
२२. चं ह्रां ह्रीं सः चं
२३. छं ह्रां ह्रीं सः छं
२४. जं ह्रां ह्रीं सः जं
२५. झं ह्रां ह्रीं सः झं
२६. ञं ह्रां ह्रीं सः ञं

२७. टं ह्रां ह्रीं सः टं
२८. ठं ह्रां ह्रीं सः ठं
२९. डं ह्रां ह्रीं सः डं
३०. ढं ह्रां ह्रीं सः ढं
३१. णं ह्रां ह्रीं सः णं
३२. तं ह्रां ह्रीं सः तं
३३. थं ह्रां ह्रीं सः थं
३४. दं ह्रां ह्रीं सः दं
३५. धं ह्रां ह्रीं सः धं
३६. नं ह्रां ह्रीं सः नं
३७. पं ह्रां ह्रीं सः पं
३८. फं ह्रां ह्रीं सः फं
३९. बं ह्रां ह्रीं सः बं
४०. भं ह्रां ह्रीं सः भं
४१. मं ह्रां ह्रीं सः मं
४२. यं ह्रां ह्रीं सः यं
४३. रं ह्रां ह्रीं सः रं
४४. लं ह्रां ह्रीं सः लं
४५. वं ह्रां ह्रीं सः वं
४६. शं ह्रां ह्रीं सः शं
४७. षं ह्रां ह्रीं सः षं
४८. सं ह्रां ह्रीं सः सं
४९. हं ह्रां ह्रीं सः हं
५०. ळं ह्रां ह्रीं सः ळं
क्ष
५१. ळं ह्रां ह्रीं सः ळं
५२. हं ह्रां ह्रीं सः हं
५३. सं ह्रां ह्रीं सः सं
५४. षं ह्रां ह्रीं सः षं
५५. शं ह्रां ह्रीं सः शं
५६. वं ह्रां ह्रीं सः वं
५७. लं ह्रां ह्रीं सः लं
५८. रं ह्रां ह्रीं सः रं
५९. यं ह्रां ह्रीं सः यं
६०. मं ह्रां ह्रीं सः मं
६१. भं ह्रां ह्रीं सः भं
६२. बं ह्रां ह्रीं सः बं
६३. फं ह्रां ह्रीं सः फं
६४. पं ह्रां ह्रीं सः पं
६५. नं ह्रां ह्रीं सः नं
६६. धं ह्रां ह्रीं सः धं
६७. दं ह्रां ह्रीं सः दं
६८. थं ह्रां ह्रीं सः थं
६९. तं ह्रां ह्रीं सः तं
७०. णं ह्रां ह्रीं सः णं
७१. ढं ह्रां ह्रीं सः ढं
७२. डं ह्रां ह्रीं सः डं
७३. ठं ह्रां ह्रीं सः ठं
७४. टं ह्रां ह्रीं सः टं
७५. ञं ह्रां ह्रीं सः ञं
७६. झं ह्रां ह्रीं सः झं
७७. जं ह्रां ह्रीं सः जं
७८. छं ह्रां ह्रीं सः छं
७९. चं ह्रां ह्रीं सः चं
८०. ङं ह्रां ह्रीं सः ङं
८१. घं ह्रां ह्रीं सः घं
८२. गं ह्रां ह्रीं सः गं
८३. खं ह्रां ह्रीं सः खं
८४. कं ह्रां ह्रीं सः कं
८५. अः ह्रां ह्रीं सः अः
८६. अं ह्रां ह्रीं सः अं
८७. औं ह्रां ह्रीं सः औं
८८. ओं ह्रां ह्रीं सः ओं
८९. ऐं ह्रां ह्रीं सः ऐं
९०. एं ह्रां ह्रीं सः एं
९१. ॡं ह्रां ह्रीं सः ॡं
९२. ऌं ह्रां ह्रीं सः ऌं
९३. ॠं ह्रां ह्रीं सः ॠं
९४. ऋं ह्रां ह्रीं सः ऋं
९५. ऊं ह्रां ह्रीं सः ऊं
९६. उं ह्रां ह्रीं सः उं
९७. ईं ह्रां ह्रीं सः ईं
९८. इं ह्रां ह्रीं सः इं
९९. आं ह्रां ह्रीं सः आं
१००.अं ह्रां ह्रीं सः अं
१०१.अं ह्रां ह्रीं सः अं
१०२.कं ह्रां ह्रीं सः कं
१०३.चं ह्रां ह्रीं सः चं
१०४.टं ह्रां ह्रीं सः टं
१०५.तं ह्रां ह्रीं सः तं
१०६.पं ह्रां ह्रीं सः पं
१०७.यं ह्रां ह्रीं सः यं
१०८.शं ह्रां ह्रीं सः शं

होम-घृत या घृत-मधु और शर्करा-युक्त तिल द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

★★★

श्रीसूर्य-चतुरक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीसूर्य-चतुरक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीआदित्य देवता। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीआदित्याय देवतायै नमः। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

देदीप्यमान - रत्नौघ - मुकुट-विराजितम् ।
पाशांकुश-वराभीति-करं रक्तं भजे रविम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ ह्रीं हंसः (४ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ ह्रीं हंसः अं
२. आं ॐ ह्रीं हंसः आं
३. इं ॐ ह्रीं हंसः इं
४. ईं ॐ ह्रीं हंसः ईं
५. उं ॐ ह्रीं हंसः उं
६. ऊं ॐ ह्रीं हंसः ऊं
७. ऋं ॐ ह्रीं हंसः ऋं
८. ॠं ॐ ह्रीं हंसः ॠं
९. ऌं ॐ ह्रीं हंसः ऌं
१०. ॡं ॐ ह्रीं हंसः ॡं
११. एं ॐ ह्रीं हंसः एं
१२. ऐं ॐ ह्रीं हंसः ऐं
१३. ओं ॐ ह्रीं हंसः ओं
१४. औं ॐ ह्रीं हंसः औं
१५. अं ॐ ह्रीं हंसः अं
१६. अः ॐ ह्रीं हंसः अः
१७. कं ॐ ह्रीं हंसः कं
१८. खं ॐ ह्रीं हंसः खं
१९. गं ॐ ह्रीं हंसः गं
२०. घं ॐ ह्रीं हंसः घं
२१. ङं ॐ ह्रीं हंसः ङं
२२. चं ॐ ह्रीं हंसः चं
२३. छं ॐ ह्रीं हंसः छं
२४. जं ॐ ह्रीं हंसः जं
२५. झं ॐ ह्रीं हंसः झं
२६. ञं ॐ ह्रीं हंसः ञं
२७. टं ॐ ह्रीं हंसः टं
२८. ठं ॐ ह्रीं हंसः ठं
२९. डं ॐ ह्रीं हंसः डं
३०. ढं ॐ ह्रीं हंसः ढं
३१. णं ॐ ह्रीं हंसः णं
३२. तं ॐ ह्रीं हंसः तं
३३. थं ॐ ह्रीं हंसः थं
३४. दं ॐ ह्रीं हंसः दं
३५. धं ॐ ह्रीं हंसः धं
३६. नं ॐ ह्रीं हंसः नं
३७. पं ॐ ह्रीं हंसः पं
३८. फं ॐ ह्रीं हंसः फं

३९. बं ॐ ह्रीं हंसः बं
४०. भं ॐ ह्रीं हंसः भं
४१. मं ॐ ह्रीं हंसः मं
४२. यं ॐ ह्रीं हंसः यं
४३. रं ॐ ह्रीं हंसः रं
४४. लं ॐ ह्रीं हंसः लं
४५. वं ॐ ह्रीं हंसः वं
४६. शं ॐ ह्रीं हंसः शं
४७. षं ॐ ह्रीं हंसः षं
४८. सं ॐ ह्रीं हंसः सं
४९. हं ॐ ह्रीं हंसः हं
५०. ळं ॐ ह्रीं हंसः ळं

क्ष

५१. ळं ॐ ह्रीं हंसः ळं
५२. हं ॐ ह्रीं हंसः हं
५३. सं ॐ ह्रीं हंसः सं
५४. षं ॐ ह्रीं हंसः षं
५५. शं ॐ ह्रीं हंसः शं
५६. वं ॐ ह्रीं हंसः वं
५७. लं ॐ ह्रीं हंसः लं
५८. रं ॐ ह्रीं हंसः रं
५९. यं ॐ ह्रीं हंसः यं
६०. मं ॐ ह्रीं हंसः मं
६१. भं ॐ ह्रीं हंसः भं
६२. बं ॐ ह्रीं हंसः बं
६३. फं ॐ ह्रीं हंसः फं
६४. पं ॐ ह्रीं हंसः पं
६५. नं ॐ ह्रीं हंसः नं
६६. धं ॐ ह्रीं हंसः धं
६७. दं ॐ ह्रीं हंसः दं
६८. थं ॐ ह्रीं हंसः थं
६९. तं ॐ ह्रीं हंसः तं
७०. णं ॐ ह्रीं हंसः णं
७१. ढं ॐ ह्रीं हंसः ढं
७२. डं ॐ ह्रीं हंसः डं
७३. ठं ॐ ह्रीं हंसः ठं
७४. टं ॐ ह्रीं हंसः टं
७५. ञं ॐ ह्रीं हंसः ञं
७६. झं ॐ ह्रीं हंसः झं
७७. जं ॐ ह्रीं हंसः जं
७८. छं ॐ ह्रीं हंसः छं
७९. चं ॐ ह्रीं हंसः चं
८०. ङं ॐ ह्रीं हंसः ङं
८१. घं ॐ ह्रीं हंसः घं
८२. गं ॐ ह्रीं हंसः गं
८३. खं ॐ ह्रीं हंसः खं
८४. कं ॐ ह्रीं हंसः कं
८५. अः ॐ ह्रीं हंसः अः
८६. अं ॐ ह्रीं हंसः अं
८७. औं ॐ ह्रीं हंसः औं
८८. ओं ॐ ह्रीं हंसः ओं
८९. ऐं ॐ ह्रीं हंसः ऐं
९०. एं ॐ ह्रीं हंसः एं
९१. ॡं ॐ ह्रीं हंसः ॡं
९२. ऌं ॐ ह्रीं हंसः ऌं
९३. ॠं ॐ ह्रीं हंसः ॠं
९४. ऋं ॐ ह्रीं हंसः ऋं
९५. ऊं ॐ ह्रीं हंसः ऊं
९६. उं ॐ ह्रीं हंसः उं
९७. ईं ॐ ह्रीं हंसः ईं
९८. इं ॐ ह्रीं हंसः इं
९९. आं ॐ ह्रीं हंसः आं
१००.अं ॐ ह्रीं हंसः अं
१०१.अं ॐ ह्रीं हंसः अं
१०२.कं ॐ ह्रीं हंसः कं
१०३.चं ॐ ह्रीं हंसः चं
१०४.टं ॐ ह्रीं हंसः टं
१०५.तं ॐ ह्रीं हंसः तं
१०६.पं ॐ ह्रीं हंसः पं
१०७.यं ॐ ह्रीं हंसः यं
१०८.शं ॐ ह्रीं हंसः शं

होम-ब्रह्म-वृक्ष (पीपल) की समिधा, त्रि-मधु-युक्त कमल पुष्प द्वारा 'होम' करना चाहिए।
फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से अतुल धन तथा पुत्र-पौत्र की प्राप्ति होती है।

★★★

श्रीसूर्य-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीसूर्य-अष्टाक्षर-मन्त्रस्य श्रीदेव-भाग ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीआदित्य देवता। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीदेव-भाग-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीआदित्याय देवतायै नमः। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-सत्याय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ब्रह्मणे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। विष्णवे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्। रुद्राय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां हुम्। अग्नये तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौषट्। सर्वाय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-सत्याय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः। ब्रह्मणे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा। विष्णवे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट्। रुद्राय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुम्। अग्नये तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा नेत्र-त्रयाय वौषट्। सर्वाय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

मूर्ति-न्यास-शिरसि ओं आदित्याय नमः। मुखे एं रवये नमः। हृदये उं भानवे नमः। गुह्ये ईं भास्कराय नमः। चरणयोः अं सूर्याय नमः।

मन्त्र-न्यास-शिरसि ॐ ॐ नमः। मुखे ॐ घृ नमः। कण्ठे ॐ णि नमः। हृदये ॐ सू नमः कुक्षौ ॐ र्य नमः। नाभौ ॐ आ नमः। लिङ्गे ॐ दि नमः। पादयोः ॐ त्य नमः।

ध्यान-

रक्ताब्ज-युग्माभय-दान-हस्तं, केयूर - हाराङ्गद - कुण्डलाढ्यम् ।
माणिक्य-मौलिं दिन-नाथमीडे, बन्धूक-कान्तिं विलसत्-त्रिनेत्रम् ।।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ घृणिः सूर्य आदित्य (८ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अं
२. आं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य आं
३. इं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य इं
४. ईं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ईं
५. उं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य उं
६. ऊं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ऊं
७. ऋं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ऋं
८. ॠं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ॠं
९. ऌं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ऌं

१०. लृं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य लृं
११. एं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य एं
१२. ऐं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ऐं
१३. ओं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ओं
१४. औं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य औं
१५. अं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अं
१६. अः ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अः
१७. कं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य कं
१८. खं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य खं
१९. गं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य गं
२०. घं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य घं
२१. ङं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ङं
२२. चं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य चं
२३. छं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य छं
२४. जं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य जं
२५. झं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य झं
२६. ञं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ञं
२७. टं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य टं
२८. ठं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ठं
२९. डं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य डं
३०. ढं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ढं
३१. णं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य णं
३२. तं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य तं
३३. थं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य थं
३४. दं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य दं
३५. धं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य धं
३६. नं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य नं
३७. पं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य पं
३८. फं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य फं
३९. बं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य बं
४०. भं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य भं
४१. मं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य मं
४२. यं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य यं
४३. रं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य रं
४४. लं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य लं
४५. वं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य वं
४६. शं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य शं
४७. षं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य षं
४८. सं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य सं
४९. हं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य हं
५०. ळं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ळं

क्ष

५१. ळं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ळं
५२. हं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य हं
५३. सं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य सं
५४. षं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य षं
५५. शं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य शं
५६. वं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य वं
५७. लं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य लं
५८. रं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य रं
५९. यं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य यं
६०. मं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य मं
६१. भं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य भं
६२. बं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य बं
६३. फं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य फं
६४. पं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य पं
६५. नं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य नं
६६. धं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य धं
६७. दं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य दं
६८. थं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य थं
६९. तं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य तं
७०. णं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य णं
७१. ढं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ढं
७२. डं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य डं

७३. ठं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ठं
७४. टं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य टं
७५. ञं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ञं
७६. झं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य झं
७७. जं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य जं
७८. छं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य छं
७९. चं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य चं
८०. ङं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ङं
८१. घं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य घं
८२. गं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य गं
८३. खं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य खं
८४. कं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य कं
८५. अः ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अः
८६. अं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अं
८७. औं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य औं
८८. ओं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ओं
८९. ऐं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ऐं
९०. एं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य एं
९१. ॡं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ॡं
९२. ॡं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ॡं
९३. ॠं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ॠं
९४. ॠं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ॠं
९५. ऊं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ऊं
९६. उं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य उं
९७. ईं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ईं
९८. इं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य इं
९९. आं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य आं
१००.अं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अं
१०१.अं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य अं
१०२.कं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य कं
१०३.चं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य चं
१०४.टं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य टं
१०५.तं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य तं
१०६.पं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य पं
१०७.यं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य यं
१०८.शं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य शं

होम-दुग्ध-मिश्रित वट या पीपल की समिधा द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। आयु-आरोग्य में वृद्धि होकर ज्ञान व वैभव की प्राप्ति होती है।

★★★

श्रीसूर्य-प्रणाम-मन्त्र

ॐ जपा-कुसुम-सङ्काशं, काश्यपेयं महा-द्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्व-पापघ्नं, प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।
ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो, लोक - रक्षण-कारकः ।
विषम - स्थान-सम्भूतां, पीडां हरतु मे रविः ।।

श्रीसूर्य-दशाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीसूर्य-दशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीदेव-भाग ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीदिवसेश्वरः देवता। 'ह्रीं' बीजं। 'श्रीं' शक्तिः। अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीदेव-भाग-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्री दिवसेश्वराय देवतायै नमः। लिङ्गे 'ह्रीं' बीजाय नमः। नाभौ 'श्रीं' शक्त्यै नमः। अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-सत्याय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ब्रह्मणे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। विष्णवे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्। रुद्राय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां हुम्। अग्नये तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौषट्। सर्वाय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-सत्याय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः। ब्रह्मणे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा। विष्णवे तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट्। रुद्राय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुम्। अग्नये तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा नेत्र-त्रयाय वौषट्। सर्वाय तेजो-ज्वाला-मणे हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान-

शोणाम्भोरुह-संस्थितं त्रि-नयनं वेद-त्रयी-विग्रहम्,
दानाम्भोज-युगाभयानि दधतं हस्तैः प्रवाल-प्रभम्।
केयूराङ्गद-हार-कङ्कण-धरं कर्णोल्लसत्-कुण्डलम्,
लोकोत्पत्ति-विनाश-पालन-करं सूर्यं गुणाब्धिं भजे।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं (१० अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अं
२. आं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं आं
३. इं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं इं
४. ईं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ईं
५. उं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं उं
६. ऊं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऊं
७. ऋं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऋं
८. ॠं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ॠं
९. लृं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं लृं
१०. लॄं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं लॄं
११. एं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं एं

१२. ऐं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऐं
१३. ओं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ओं
१४. औं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं औं
१५. अं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अं
१६. अः ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अः
१७. कं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं कं
१८. खं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं खं
१९. गं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं गं
२०. घं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं घं
२१. ङं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ङं
२२. चं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं चं
२३. छं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं छं
२४. जं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं जं
२५. झं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं झं
२६. ञं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ञं
२७. टं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं टं
२८. ठं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ठं
२९. डं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं डं
३०. ढं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ढं
३१. णं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं णं
३२. तं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं तं
३३. थं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं थं
३४. दं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं दं
३५. धं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं धं
३६. नं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं नं
३७. पं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं पं
३८. फं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं फं
३९. बं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं बं
४०. भं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं भं
४१. मं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं मं
४२. यं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं यं
४३. रं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं रं
४४. लं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं लं
४५. वं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं वं
४६. शं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं शं
४७. षं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं षं
४८. सं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं सं
४९. हं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं हं
५०. ळं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ळं
क्षं
५१. ळं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ळं
५२. हं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं हं
५३. सं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं सं
५४. षं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं षं
५५. शं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं शं
५६. वं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं वं
५७. लं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं लं
५८. रं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं रं
५९. यं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं यं
६०. मं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं मं
६१. भं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं भं
६२. बं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं बं
६३. फं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं फं
६४. पं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं पं
६५. नं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं नं
६६. धं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं धं
६७. दं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं दं
६८. थं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं थं
६९. तं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं तं
७०. णं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं णं
७१. ढं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ढं
७२. डं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं डं
७३. ठं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ठं
७४. टं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं टं

७५. ञं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ञं
७६. झं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं झं
७७. जं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं जं
७८. छं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं छं
७९. चं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं चं
८०. ङं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ङं
८१. घं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं घं
८२. गं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं गं
८३. खं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं खं
८४. कं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं कं
८५. अः ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अः
८६. अं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अं
८७. औं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं औं
८८. ओं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ओं
८९. ऐं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऐं
९०. एं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं एं
९१. ऌं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऌं
९२. ऍं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऍं
९३. ॠं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ॠं
९४. ऋं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऋं
९५. ऊं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ऊं
९६. उं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं उं
९७. ईं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं ईं
९८. इं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं इं
९९. आं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं आं
१००. अं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अं
१०१. अं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं अं
१०२. कं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं कं
१०३. चं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं चं
१०४. टं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं टं
१०५. तं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं तं
१०६. पं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं पं
१०७. यं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं यं
१०८. शं ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं शं

होम-कमल या तिल द्वारा 'होम' करना चाहिए।
फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से सभी अभीष्ट पूर्ण होते हैं।

★★★

श्रीचन्द्र-प्रणाम-मन्त्र

ॐ दधि-शङ्ख-तुषाराभं, क्षीरोदार्णव - सम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं, शम्भोर्मुकुट - भूषणम् ।।
ॐ रोहणीशः सुधा-मूर्तिः, सुधा-गात्रः सुधाशनः ।
विषम - स्थान-सम्भूतां, पीडां हरतु मे विधुः ।।

श्रीचन्द्र-एकाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीचन्द्र-एकाक्षर-मन्त्रस्य श्रीभार्गव ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीचन्द्रमा देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीभार्गव-ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदये श्रीचन्द्रमा-देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ॐचां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐचीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐचूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐचैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐचौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐचः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ॐचां हृदयाय नमः। ॐचीं शिरसे स्वाहा। ॐचूं शिखायै वषट्। ॐचैं कवचाय हुम्। ॐचौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐचः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

श्वेताब्ज-संस्थं रजत-कान्ति-हार-विराजितम्,
नील - केशं च कुमुदं वामे दक्ष - करे वरम्।
दधानं भावयेदेवं मृगाङ्कं मणि - मौलिकम्।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-सौं (एक अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं सौं अं
२. आं सौं आं
३. इं सौं इं
४. ईं सौं ईं
५. उं सौं उं
६. ऊं सौं ऊं
७. ऋं सौं ऋं
८. ॠं सौं ॠं
९. ऌं सौं ऌं
१०. ॡं सौं ॡं
११. एं सौं एं
१२. ऐं सौं ऐं
१३. ओं सौं ओं
१४. औं सौं औं
१५. अं सौं अं
१६. अः सौं अः
१७. कं सौं कं
१८. खं सौं खं
१९. गं सौं गं
२०. घं सौं घं
२१. ङं सौं ङं
२२. चं सौं चं
२३. छं सौं छं
२४. जं सौं जं
२५. झं सौं झं
२६. ञं सौं ञं
२७. टं सौं टं
२८. ठं सौं ठं
२९. डं सौं डं
३०. ढं सौं ढं
३१. णं सौं णं
३२. तं सौं तं
३३. थं सौं थं
३४. दं सौं दं
३५. धं सौं धं

३६. नं सौं नं
३७. पं सौं पं
३८. फं सौं फं
३९. बं सौं बं
४०. भं सौं भं
४१. मं सौं मं
४२. यं सौं यं
४३. रं सौं रं
४४. लं सौं लं
४५. वं सौं वं
४६. शं सौं शं
४७. षं सौं षं
४८. सं सौं सं
४९. हं सौं हं
५०. ळं सौं ळं

क्ष

५१. ळं सौं ळं
५२. हं सौं हं
५३. सं सौं सं
५४. षं सौं षं
५५. शं सौं शं
५६. वं सौं वं
५७. लं सौं लं
५८. रं सौं रं
५९. यं सौं यं
६०. मं सौं मं
६१. भं सौं भं
६२. बं सौं बं
६३. फं सौं फं
६४. पं सौं पं
६५. नं सौं नं
६६. धं सौं धं
६७. दं सौं दं
६८. थं सौं थं
६९. तं सौं तं
७०. णं सौं णं
७१. ढं सौं ढं
७२. डं सौं डं
७३. ठं सौं ठं
७४. टं सौं टं
७५. ञं सौं ञं
७६. झं सौं झं
७७. जं सौं जं
७८. छं सौं छं
७९. चं सौं चं
८०. ङं सौं ङं
८१. घं सौं घं
८२. गं सौं गं
८३. खं सौं खं
८४. कं सौं कं
८५. अः सौं अः
८६. अं सौं अं
८७. औं सौं औं
८८. ओं सौं ओं
८९. ऐं सौं ऐं
९०. एं सौं एं
९१. ॡं सौं ॡं
९२. लृं सौं लृं
९३. ॠं सौं ॠं
९४. ऋं सौं ऋं
९५. ऊं सौं ऊं
९६. उं सौं उं
९७. ईं सौं ईं
९८. इं सौं इं
९९. आं सौं आं
१००.अं सौं अं
१०१.अं सौं अं
१०२.कं सौं कं
१०३.चं सौं चं
१०४.टं सौं टं
१०५.तं सौं तं
१०६.पं सौं पं
१०७.यं सौं यं
१०८.शं सौं शं

होम-घृत-मिश्रित हवि द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- सिर में चन्द्रमा का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' करने से राजैश्वर्य, भूमि-गत धन की प्राप्ति होती है। ज्वर, शिरो-रोग की शान्ति भी होती है।

★★★

श्रीचन्द्र-त्र्यक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीचन्द्र-त्र्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीएक-तत्त्व ऋषिः। श्रीछन्दः। श्रीसोमः देवता। 'रुं' बीजं। 'आं' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीएक-तत्त्व-ऋषये नमः। मुखे श्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीसोम-देवतायै नमः। लिङ्गे 'रुं'-बीजाय नमः। नाभौ 'आं'-शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ॐरां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐरीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐरूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐरैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐरौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐरः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ॐरां हृदयाय नमः। ॐरीं शिरसे स्वाहा। ॐरूं शिखायै वषट्। ॐरैं कवचाय हुम्। ॐरौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐरः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

कर्पूर-स्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दु-बिम्बाननम्।
मुक्ता-दाम-विभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः।।
हस्ताभ्यां कुमुदं वरं विदधतं नीलालकोद्भासितम्।
स्वस्याङ्कस्थ-मृगोदिताश्रय-गुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-वं सं वं (३ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं वं सं वं अं
२. आं वं सं वं आं
३. इं वं सं वं इं
४. ईं वं सं वं ईं
५. उं वं सं वं उं
६. ऊं वं सं वं ऊं
७. ऋं वं सं वं ऋं
८. ॠं वं सं वं ॠं
९. ऌं वं सं वं ऌं
१०. ॡं वं सं वं ॡं
११. एं वं सं वं एं
१२. ऐं वं सं वं ऐं
१३. ओं वं सं वं ओं
१४. औं वं सं वं औं
१५. अं वं सं वं अं
१६. अः वं सं वं अः
१७. कं वं सं वं कं
१८. खं वं सं वं खं
१९. गं वं सं वं गं
२०. घं वं सं वं घं
२१. ङं वं सं वं ङं
२२. चं वं सं वं चं
२३. छं वं सं वं छं
२४. जं वं सं वं जं
२५. झं वं सं वं झं
२६. ञं वं सं वं ञं
२७. टं वं सं वं टं
२८. ठं वं सं वं ठं
२९. डं वं सं वं डं

३०. ढं वं सं वं ढं
३१. णं वं सं वं णं
३२. तं वं सं वं तं
३३. थं वं सं वं थं
३४. दं वं सं वं दं
३५. धं वं सं वं धं
३६. नं वं सं वं नं
३७. पं वं सं वं पं
३८. फं वं सं वं फं
३९. बं वं सं वं बं
४०. भं वं सं वं भं
४१. मं वं सं वं मं
४२. यं वं सं वं यं
४३. रं वं सं वं रं
४४. लं वं सं वं लं
४५. वं वं सं वं वं
४६. शं वं सं वं शं
४७. षं वं सं वं षं
४८. सं वं सं वं सं
४९. हं वं सं वं हं
५०. ळं वं सं वं ळं

क्ष

५१. ळं वं सं वं ळं
५२. हं वं सं वं हं
५३. सं वं सं वं सं
५४. षं वं सं वं षं
५५. शं वं सं वं शं
५६. वं वं सं वं वं
५७. लं वं सं वं लं
५८. रं वं सं वं रं
५९. यं वं सं वं यं
६०. मं वं सं वं मं
६१. भं वं सं वं भं
६२. बं वं सं वं बं
६३. फं वं सं वं फं
६४. पं वं सं वं पं
६५. नं वं सं वं नं
६६. धं वं सं वं धं
६७. दं वं सं वं दं
६८. थं वं सं वं थं
६९. तं वं सं वं तं
७०. णं वं सं वं णं
७१. ढं वं सं वं ढं
७२. डं वं सं वं डं
७३. ठं वं सं वं ठं
७४. टं वं सं वं टं
७५. ञं वं सं वं ञं
७६. झं वं सं वं झं
७७. जं वं सं वं जं
७८. छं वं सं वं छं
७९. चं वं सं वं चं
८०. ङं वं सं वं ङं
८१. घं वं सं वं घं
८२. गं वं सं वं गं
८३. खं वं सं वं खं
८४. कं वं सं वं कं
८५. अः वं सं वं अः
८६. अं वं सं वं अं
८७. औं वं सं वं औं
८८. ओं वं सं वं ओं
८९. ऐं वं सं वं ऐं
९०. एं वं सं वं एं
९१. ॡं वं सं वं ॡं
९२. ऌं वं सं वं ऌं
९३. ॠं वं सं वं ॠं
९४. ऋं वं सं वं ऋं
९५. ऊं वं सं वं ऊं
९६. उं वं सं वं उं
९७. ईं वं सं वं ईं
९८. इं वं सं वं इं
९९. आं वं सं वं आं
१००.अं वं सं वं अं
१०१.अं वं सं वं अं
१०२.कं वं सं वं कं
१०३.चं वं सं वं चं
१०४.टं वं सं वं टं
१०५.तं वं सं वं तं
१०६.पं वं सं वं पं
१०७.यं वं सं वं यं
१०८.शं वं सं वं शं

फल- चन्द्र-मण्डल में उक्त मन्त्र को ध्यान कर उससे स्रवित अमृत द्वारा अपने शरीर को आप्लावित होने की भावना कर 'जप' करने से आयु में वृद्धि होती है।

★★★

श्रीचन्द्र-षडक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीचन्द्र-षडक्षर-मन्त्रस्य श्रीभृगुः ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीसोमः देवता। 'स्वौं' बीजं। 'नमः' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीभृगु-ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदये श्रीसोम-देवतायै नमः। लिङ्गे 'स्वौं'-बीजाय नमः। नाभौ 'नमः'-शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ॐस्वां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐस्वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐस्वूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐस्वैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐस्वौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐस्वः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ॐस्वां हृदयाय नमः। ॐस्वीं शिरसे स्वाहा। ॐस्वूं शिखायै वषट्। ॐस्वैं कवचाय हुम्। ॐस्वौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐस्वः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

कर्पूर-स्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दु-बिम्बाननम्।
मुक्ता-दाम-विभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः।।
हस्ताभ्यां कुमुदं वरं विदधतं नीलालकोद्भासितम्।
स्वस्याङ्कस्थ-मृगोदिताश्रय-गुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-स्वौं सोमाय नमः (६ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं स्वौं सोमाय नमः अं
२. आं स्वौं सोमाय नमः आं
३. इं स्वौं सोमाय नमः इं
४. ईं स्वौं सोमाय नमः ईं
५. उं स्वौं सोमाय नमः उं
६. ऊं स्वौं सोमाय नमः ऊं
७. ऋं स्वौं सोमाय नमः ऋं
८. ॠं स्वौं सोमाय नमः ॠं
९. ऌं स्वौं सोमाय नमः ऌं
१०. ॡं स्वौं सोमाय नमः ॡं
११. एं स्वौं सोमाय नमः एं
१२. ऐं स्वौं सोमाय नमः ऐं
१३. ओं स्वौं सोमाय नमः ओं
१४. औं स्वौं सोमाय नमः औं
१५. अं स्वौं सोमाय नमः अं
१६. अः स्वौं सोमाय नमः अः
१७. कं स्वौं सोमाय नमः कं
१८. खं स्वौं सोमाय नमः खं
१९. गं स्वौं सोमाय नमः गं
२०. घं स्वौं सोमाय नमः घं
२१. ङं स्वौं सोमाय नमः ङं
२२. चं स्वौं सोमाय नमः चं
२३. छं स्वौं सोमाय नमः छं
२४. जं स्वौं सोमाय नमः जं
२५. झं स्वौं सोमाय नमः झं
२६. ञं स्वौं सोमाय नमः ञं
२७. टं स्वौं सोमाय नमः टं
२८. ठं स्वौं सोमाय नमः ठं
२९. डं स्वौं सोमाय नमः डं
३०. ढं स्वौं सोमाय नमः ढं
३१. णं स्वौं सोमाय नमः णं
३२. तं स्वौं सोमाय नमः तं
३३. थं स्वौं सोमाय नमः थं
३४. दं स्वौं सोमाय नमः दं
३५. धं स्वौं सोमाय नमः धं
३६. नं स्वौं सोमाय नमः नं
३७. पं स्वौं सोमाय नमः पं
३८. फं स्वौं सोमाय नमः फं

३९. बं स्वौं सोमाय नमः बं
४०. भं स्वौं सोमाय नमः भं
४१. मं स्वौं सोमाय नमः मं
४२. यं स्वौं सोमाय नमः यं
४३. रं स्वौं सोमाय नमः रं
४४. लं स्वौं सोमाय नमः लं
४५. वं स्वौं सोमाय नमः वं
४६. शं स्वौं सोमाय नमः शं
४७. षं स्वौं सोमाय नमः षं
४८. सं स्वौं सोमाय नमः सं
४९. हं स्वौं सोमाय नमः हं
५०. ळं स्वौं सोमाय नमः ळं

क्षं

५१. ळं स्वौं सोमाय नमः ळं
५२. हं स्वौं सोमाय नमः हं
५३. सं स्वौं सोमाय नमः सं
५४. षं स्वौं सोमाय नमः षं
५५. शं स्वौं सोमाय नमः शं
५६. वं स्वौं सोमाय नमः वं
५७. लं स्वौं सोमाय नमः लं
५८. रं स्वौं सोमाय नमः रं
५९. यं स्वौं सोमाय नमः यं
६०. मं स्वौं सोमाय नमः मं
६१. भं स्वौं सोमाय नमः भं
६२. बं स्वौं सोमाय नमः बं
६३. फं स्वौं सोमाय नमः फं
६४. पं स्वौं सोमाय नमः पं
६५. नं स्वौं सोमाय नमः नं
६६. धं स्वौं सोमाय नमः धं
६७. दं स्वौं सोमाय नमः दं
६८. थं स्वौं सोमाय नमः थं
६९. तं स्वौं सोमाय नमः तं
७०. णं स्वौं सोमाय नमः णं
७१. ढं स्वौं सोमाय नमः ढं
७२. डं स्वौं सोमाय नमः डं
७३. ठं स्वौं सोमाय नमः ठं
७४. टं स्वौं सोमाय नमः टं
७५. ञं स्वौं सोमाय नमः ञं
७६. झं स्वौं सोमाय नमः झं
७७. जं स्वौं सोमाय नमः जं
७८. छं स्वौं सोमाय नमः छं
७९. चं स्वौं सोमाय नमः चं
८०. ङं स्वौं सोमाय नमः ङं
८१. घं स्वौं सोमाय नमः घं
८२. गं स्वौं सोमाय नमः गं
८३. खं स्वौं सोमाय नमः खं
८४. कं स्वौं सोमाय नमः कं
८५. अः स्वौं सोमाय नमः अः
८६. अं स्वौं सोमाय नमः अं
८७. औं स्वौं सोमाय नमः औं
८८. ओं स्वौं सोमाय नमः ओं
८९. ऐं स्वौं सोमाय नमः ऐं
९०. एं स्वौं सोमाय नमः एं
९१. ऌं स्वौं सोमाय नमः ऌं
९२. लृं स्वौं सोमाय नमः लृं
९३. ॠं स्वौं सोमाय नमः ॠं
९४. ऋं स्वौं सोमाय नमः ऋं
९५. ऊं स्वौं सोमाय नमः ऊं
९६. उं स्वौं सोमाय नमः उं
९७. ईं स्वौं सोमाय नमः ईं
९८. इं स्वौं सोमाय नमः इं
९९. आं स्वौं सोमाय नमः आं
१००.अं स्वौं सोमाय नमः अं
१०१.अं स्वौं सोमाय नमः अं
१०२.कं स्वौं सोमाय नमः कं
१०३.चं स्वौं सोमाय नमः चं
१०४.टं स्वौं सोमाय नमः टं
१०५.तं स्वौं सोमाय नमः तं
१०६.पं स्वौं सोमाय नमः पं
१०७.यं स्वौं सोमाय नमः यं
१०८.शं स्वौं सोमाय नमः शं

प्रयोग– (१) हृदय में '**चन्द्र-देव**' का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का 'जप' करें, तो '**लक्ष्मी**' की प्राप्ति होती है। (२) मस्तक में '**चन्द्र-देव**' का ध्यान करते हुए '**जप**' करे, तो **रोग, अकाल-मृत्यु** और **दुःखों से छुटकारा** मिलता है और **दीर्घायु की प्राप्ति** होती है। (३) जितेन्द्रिय होकर '**पूर्णिमा**' में '**जप**' करने से '**सर्व-सौभाग्य की प्राप्ति**' होती है।

विशेष प्रयोग–'**पूर्णिमा**' में निराहार रह कर चन्द्रोदय के समय चाँदी के पात्र में दूध भरकर रखें। पात्र को स्पर्श करते हुए १०८ बार उक्त मन्त्र का '**जप**' करें। फिर निम्न-लिखित मन्त्र पढ़ते हुए सर्व-कामना-सिद्धि हेतु चन्द्रमा को उक्त दूध से अर्घ्य प्रदान करें-

'ॐ विद्ये विद्या-मालिनि चन्द्रिणि चारु-मुखि! स्वाहा'

इस प्रकार प्रति मास '**पूर्णिमा**' के दिन करें। शीघ्र ही सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। कन्या को **उत्तम वर**, वर को **कन्या, धन-धान्य, सौभाग्य, यश**–सभी कुछ इस प्रयोग से मिलता है।

★★★

श्रीमङ्गल-षडक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीमङ्गल-षडक्षर-मन्त्रस्य श्रीविरूप ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीधरात्मजः देवता। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीविरूप-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीधरात्मजाय देवतायै नमः। सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। हां तर्जनीभ्यां स्वाहा। हं मध्यमाभ्यां वषट्। सः अनामिकाभ्यां हुम्। खं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। खः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ॐ हृदयाय नमः। हां शिरसे स्वाहा। हं शिखायै वषट्। सः कवचाय हुम्। खं नेत्र-त्रयाय वौषट्। खः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

(१) जपाभं शिव-स्वेदजं हस्त-पद्मे, गदा-शूल-शक्तीर्वरं धारयन्तम् ।
अवन्ती-समुत्थं सु-मेषासनस्थं, धरा-नन्दनं रक्त - वस्त्रं समीडे ।। अथवा

(२) जपा-कुसुम-सङ्काशं, शक्ति-शूल-गदा-धरम् ।
मेष - संस्थं रक्त-वस्त्रं, तं वन्देऽहं धरात्मजम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ हां हंसः खं खः (६ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ हां हंसः खं खः अं
२. आं ॐ हां हंसः खं खः आं
३. इं ॐ हां हंसः खं खः इं
४. ईं ॐ हां हंसः खं खः ईं
५. उं ॐ हां हंसः खं खः उं
६. ऊं ॐ हां हंसः खं खः ऊं
७. ऋं ॐ हां हंसः खं खः ऋं
८. ॠं ॐ हां हंसः खं खः ॠं
९. ऌं ॐ हां हंसः खं खः ऌं
१०. ॡं ॐ हां हंसः खं खः ॡं
११. एं ॐ हां हंसः खं खः एं
१२. ऐं ॐ हां हंसः खं खः ऐं
१३. ओं ॐ हां हंसः खं खः ओं
१४. औं ॐ हां हंसः खं खः औं
१५. अं ॐ हां हंसः खं खः अं
१६. अः ॐ हां हंसः खं खः अः
१७. कं ॐ हां हंसः खं खः कं
१८. खं ॐ हां हंसः खं खः खं
१९. गं ॐ हां हंसः खं खः गं
२०. घं ॐ हां हंसः खं खः घं
२१. ङं ॐ हां हंसः खं खः ङं
२२. चं ॐ हां हंसः खं खः चं
२३. छं ॐ हां हंसः खं खः छं
२४. जं ॐ हां हंसः खं खः जं
२५. झं ॐ हां हंसः खं खः झं
२६. ञं ॐ हां हंसः खं खः ञं
२७. टं ॐ हां हंसः खं खः टं
२८. ठं ॐ हां हंसः खं खः ठं
२९. डं ॐ हां हंसः खं खः डं
३०. ढं ॐ हां हंसः खं खः ढं
३१. णं ॐ हां हंसः खं खः णं
३२. तं ॐ हां हंसः खं खः तं

३३. थं ॐ हां हंसः खं खः थं
३४. दं ॐ हां हंसः खं खः दं
३५. धं ॐ हां हंसः खं खः धं
३६. नं ॐ हां हंसः खं खः नं
३७. पं ॐ हां हंसः खं खः पं
३८. फं ॐ हां हंसः खं खः फं
३९. बं ॐ हां हंसः खं खः बं
४०. भं ॐ हां हंसः खं खः भं
४१. मं ॐ हां हंसः खं खः मं
४२. यं ॐ हां हंसः खं खः यं
४३. रं ॐ हां हंसः खं खः रं
४४. लं ॐ हां हंसः खं खः लं
४५. वं ॐ हां हंसः खं खः वं
४६. शं ॐ हां हंसः खं खः शं
४७. षं ॐ हां हंसः खं खः षं
४८. सं ॐ हां हंसः खं खः सं
४९. हं ॐ हां हंसः खं खः हं
५०. ळं ॐ हां हंसः खं खः ळं

क्ष

५१. ळं ॐ हां हंसः खं खः ळं
५२. हं ॐ हां हंसः खं खः हं
५३. सं ॐ हां हंसः खं खः सं
५४. षं ॐ हां हंसः खं खः षं
५५. शं ॐ हां हंसः खं खः शं
५६. वं ॐ हां हंसः खं खः वं
५७. लं ॐ हां हंसः खं खः लं
५८. रं ॐ हां हंसः खं खः रं
५९. यं ॐ हां हंसः खं खः यं
६०. मं ॐ हां हंसः खं खः मं
६१. भं ॐ हां हंसः खं खः भं
६२. बं ॐ हां हंसः खं खः बं
६३. फं ॐ हां हंसः खं खः फं
६४. पं ॐ हां हंसः खं खः पं
६५. नं ॐ हां हंसः खं खः नं
६६. धं ॐ हां हंसः खं खः धं
६७. दं ॐ हां हंसः खं खः दं
६८. थं ॐ हां हंसः खं खः थं
६९. तं ॐ हां हंसः खं खः तं
७०. णं ॐ हां हंसः खं खः णं
७१. ढं ॐ हां हंसः खं खः ढं
७२. डं ॐ हां हंसः खं खः डं
७३. ठं ॐ हां हंसः खं खः ठं
७४. टं ॐ हां हंसः खं खः टं
७५. ञं ॐ हां हंसः खं खः ञं
७६. झं ॐ हां हंसः खं खः झं
७७. जं ॐ हां हंसः खं खः जं
७८. छं ॐ हां हंसः खं खः छं
७९. चं ॐ हां हंसः खं खः चं
८०. ङं ॐ हां हंसः खं खः ङं
८१. घं ॐ हां हंसः खं खः घं
८२. गं ॐ हां हंसः खं खः गं
८३. खं ॐ हां हंसः खं खः खं
८४. कं ॐ हां हंसः खं खः कं
८५. अः ॐ हां हंसः खं खः अः
८६. अं ॐ हां हंसः खं खः अं
८७. औं ॐ हां हंसः खं खः औं
८८. ओं ॐ हां हंसः खं खः ओं
८९. ऐं ॐ हां हंसः खं खः ऐं
९०. एं ॐ हां हंसः खं खः एं
९१. ऌं ॐ हां हंसः खं खः ऌं
९२. ऍं ॐ हां हंसः खं खः ऍं
९३. ॠं ॐ हां हंसः खं खः ॠं
९४. ऋं ॐ हां हंसः खं खः ऋं
९५. ऊं ॐ हां हंसः खं खः ऊं
९६. उं ॐ हां हंसः खं खः उं
९७. ईं ॐ हां हंसः खं खः ईं
९८. इं ॐ हां हंसः खं खः इं
९९. आं ॐ हां हंसः खं खः आं
१००. अं ॐ हां हंसः खं खः अं
१०१. अं ॐ हां हंसः खं खः अं
१०२. कं ॐ हां हंसः खं खः कं
१०३. चं ॐ हां हंसः खं खः चं
१०४. टं ॐ हां हंसः खं खः टं
१०५. तं ॐ हां हंसः खं खः तं
१०६. पं ॐ हां हंसः खं खः पं
१०७. यं ॐ हां हंसः खं खः यं
१०८. शं ॐ हां हंसः खं खः शं

होम-खैर की समिधा व तिल द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से अभीष्ट कामनाएँ पूरी होती हैं। ऋण का निवारण होता है।

★★★

श्रीमङ्गल-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीमङ्गल-अष्टाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीभूमि-पुत्र-अङ्गारकः देवता। सर्व-रोग-निवारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीभूमि-पुत्र-अङ्गारकाय देवतायै नमः। सर्व-रोग-निवारणार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-अं अंगुष्ठाभ्यां नमः। आं तर्जनीभ्यां स्वाहा। इं मध्यमाभ्यां वषट्। ईं अनामिकाभ्यां हुम्। उं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ऊं करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-अं हृदयाय नमः। आं शिरसे स्वाहा। इं शिखायै वषट्। ईं कवचाय हुम्। उं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ऊं अस्त्राय फट्।

ध्यान-

नमाम्यङ्गारकं रक्तं, रक्ताम्बर - विभूषणम् ।
जानुस्थ-वाम-हस्ताढ्यं, भाजनेतर-पाणिकम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-अं अङ्गारकाय नमः (८ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं अं अङ्गारकाय नमः अं
२. आं अं अङ्गारकाय नमः आं
३. इं अं अङ्गारकाय नमः इं
४. ईं अं अङ्गारकाय नमः ईं
५. उं अं अङ्गारकाय नमः उं
६. ऊं अं अङ्गारकाय नमः ऊं
७. ऋं अं अङ्गारकाय नमः ऋं
८. ॠं अं अङ्गारकाय नमः ॠं
९. ऌं अं अङ्गारकाय नमः ऌं
१०. ॡं अं अङ्गारकाय नमः ॡं
११. एं अं अङ्गारकाय नमः एं
१२. ऐं अं अङ्गारकाय नमः ऐं
१३. ओं अं अङ्गारकाय नमः ओं
१४. औं अं अङ्गारकाय नमः औं
१५. अं अं अङ्गारकाय नमः अं
१६. अः अं अङ्गारकाय नमः अः
१७. कं अं अङ्गारकाय नमः कं
१८. खं अं अङ्गारकाय नमः खं
१९. गं अं अङ्गारकाय नमः गं
२०. घं अं अङ्गारकाय नमः घं
२१. ङं अं अङ्गारकाय नमः ङं
२२. चं अं अङ्गारकाय नमः चं
२३. छं अं अङ्गारकाय नमः छं
२४. जं अं अङ्गारकाय नमः जं
२५. झं अं अङ्गारकाय नमः झं
२६. ञं अं अङ्गारकाय नमः ञं
२७. टं अं अङ्गारकाय नमः टं
२८. ठं अं अङ्गारकाय नमः ठं
२९. डं अं अङ्गारकाय नमः डं
३०. ढं अं अङ्गारकाय नमः ढं
३१. णं अं अङ्गारकाय नमः णं
३२. तं अं अङ्गारकाय नमः तं
३३. थं अं अङ्गारकाय नमः थं
३४. दं अं अङ्गारकाय नमः दं
३५. धं अं अङ्गारकाय नमः धं
३६. नं अं अङ्गारकाय नमः नं
३७. पं अं अङ्गारकाय नमः पं
३८. फं अं अङ्गारकाय नमः फं

३९. बं अं अङ्गारकाय नमः बं
४०. भं अं अङ्गारकाय नमः भं
४१. मं अं अङ्गारकाय नमः मं
४२. यं अं अङ्गारकाय नमः यं
४३. रं अं अङ्गारकाय नमः रं
४४. लं अं अङ्गारकाय नमः लं
४५. वं अं अङ्गारकाय नमः वं
४६. शं अं अङ्गारकाय नमः शं
४७. षं अं अङ्गारकाय नमः षं
४८. सं अं अङ्गारकाय नमः सं
४९. हं अं अङ्गारकाय नमः हं
५०. ळं अं अङ्गारकाय नमः ळं

क्षं

५१. ळं अं अङ्गारकाय नमः ळं
५२. हं अं अङ्गारकाय नमः हं
५३. सं अं अङ्गारकाय नमः सं
५४. षं अं अङ्गारकाय नमः षं
५५. शं अं अङ्गारकाय नमः शं
५६. वं अं अङ्गारकाय नमः वं
५७. लं अं अङ्गारकाय नमः लं
५८. रं अं अङ्गारकाय नमः रं
५९. यं अं अङ्गारकाय नमः यं
६०. मं अं अङ्गारकाय नमः मं
६१. भं अं अङ्गारकाय नमः भं
६२. बं अं अङ्गारकाय नमः बं
६३. फं अं अङ्गारकाय नमः फं
६४. पं अं अङ्गारकाय नमः पं
६५. नं अं अङ्गारकाय नमः नं
६६. धं अं अङ्गारकाय नमः धं
६७. दं अं अङ्गारकाय नमः दं
६८. थं अं अङ्गारकाय नमः थं
६९. तं अं अङ्गारकाय नमः तं
७०. णं अं अङ्गारकाय नमः णं
७१. ढं अं अङ्गारकाय नमः ढं
७२. डं अं अङ्गारकाय नमः डं
७३. ठं अं अङ्गारकाय नमः ठं
७४. टं अं अङ्गारकाय नमः टं
७५. ञं अं अङ्गारकाय नमः ञं
७६. झं अं अङ्गारकाय नमः झं
७७. जं अं अङ्गारकाय नमः जं
७८. छं अं अङ्गारकाय नमः छं
७९. चं अं अङ्गारकाय नमः चं
८०. ङं अं अङ्गारकाय नमः ङं
८१. घं अं अङ्गारकाय नमः घं
८२. गं अं अङ्गारकाय नमः गं
८३. खं अं अङ्गारकाय नमः खं
८४. कं अं अङ्गारकाय नमः कं
८५. अः अं अङ्गारकाय नमः अः
८६. अं अं अङ्गारकाय नमः अं
८७. औं अं अङ्गारकाय नमः औं
८८. ओं अं अङ्गारकाय नमः ओं
८९. ऐं अं अङ्गारकाय नमः ऐं
९०. एं अं अङ्गारकाय नमः एं
९१. ऌं अं अङ्गारकाय नमः ऌं
९२. लृं अं अङ्गारकाय नमः लृं
९३. ॠं अं अङ्गारकाय नमः ॠं
९४. ऋं अं अङ्गारकाय नमः ऋं
९५. ऊं अं अङ्गारकाय नमः ऊं
९६. उं अं अङ्गारकाय नमः उं
९७. ईं अं अङ्गारकाय नमः ईं
९८. इं अं अङ्गारकाय नमः इं
९९. आं अं अङ्गारकाय नमः आं
१००. अं अं अङ्गारकाय नमः अं
१०१. अं अं अङ्गारकाय नमः अं
१०२. कं अं अङ्गारकाय नमः कं
१०३. चं अं अङ्गारकाय नमः चं
१०४. टं अं अङ्गारकाय नमः टं
१०५. तं अं अङ्गारकाय नमः तं
१०६. पं अं अङ्गारकाय नमः पं
१०७. यं अं अङ्गारकाय नमः यं
१०८. शं अं अङ्गारकाय नमः शं

होम-खैर की समिधा व तिल द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र का 'जप' करने से सभी प्रकार के रोगों का निवारण होता है।

★★★

श्रीमङ्गल-दशाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीमङ्गल-दशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीविरूपाक्ष ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीमङ्गलः देवता। 'ह्रीं' बीजं। 'श्रीं' शक्तिः। 'क्लीं' कीलकं। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीविरूपाक्ष-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीमङ्गलाय देवतायै नमः। लिङ्गे 'ह्रीं' बीजाय नमः। नाभौ 'श्रीं' शक्तये नमः। पादयोः 'क्लीं' कीलकाय नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

वर्ण-न्यास-१. ब्रह्म-रन्ध्रे 'ॐ' नमः। २. दक्ष-कर्णे 'श्रीं' नमः। ३. वाम-कर्णे 'क्लीं' नमः। ४. दक्ष-नेत्रे 'मं' नमः। ५. वाम-नेत्रे 'नुं' नमः। ६. दक्ष-नासायाम् 'भौं' नमः। ७. वाम-नासायाम् 'मां' नमः। ८. मुखे 'यं' नमः। ९. लिङ्गे 'नं' नमः। १०. गुदे 'मः' नमः।

बीस नामों द्वारा न्यास- १. शिखायै 'ॐ मङ्गलाय नमः'।२. मूर्ध्ने (सिर में) 'ॐ भूमि-पुत्राय नमः'। ३. मस्तके 'ऋण-हर्त्रे नमः'। ४. दक्ष-वाम-नेत्रे 'ॐ धन-प्रदाय नमः'। ५. दक्ष-वाम-कर्णे 'ॐ स्थिरासनाय नमः'। ६. दक्ष-वाम-नासिकायां 'ॐ महा-कायाय नमः'। ७. मुखे 'ॐ सर्व-कर्मावरोधकाय नमः'। ८. चिबुके 'ॐ लोहिताय नमः'। ९. कण्ठे 'ॐ लोहिताक्षाय नमः'। १०. दक्ष-वाम-स्कन्धे 'ॐ साम-गानां कृपा-कराय नमः'। ११. दक्ष-वाम-बाहवे 'ॐ धरात्मजाय नमः'। १२. दक्ष-वाम-हस्ते 'ॐ कुजाय नमः'। १३. उदरे 'ॐ भौमाय नमः'। १४. नाभौ 'ॐ भूमिदाय नमः'। १५. कट्यां 'ॐ भूमि-नन्दनाय नमः'। १६. लिङ्गे 'ॐ अङ्गारकाय नमः'। १७. स्फिचे (नितम्ब में)' ॐ यमाय नमः'।१८. दक्ष-वाम-जाह्नौ (दाहिने एवं बाएँ पैर के घुटने में) 'ॐ सर्व-रोगोपहारकाय नमः'। १९. दक्ष-वाम-जङ्घयोः 'ॐ वृष्टि-कर्तापहर्त्रे नमः'। २०. दक्ष-वाम-अंघ्रे (दाहिने एवं बाएँ पैर के अँगूठे में) 'ॐ सर्व-कर्म-फल-प्रदाय नमः'।

ध्यान-

ध्याये भौमं रक्त-वर्णं, रक्त-माल्यांशुकावृतम् ।
कण्ठे कमल-मालाढ्यं, करयोः शक्ति-शूलके ।।
भगवन् ! देव - देवेश ! एह्येहि त्वं महा-प्रभो !
ऐश्वर्यं वशमायातु, भू - तलेषु समाश्रितम् ।
मङ्गलानां मङ्गलं च, सर्व-काम-फल-प्रदम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः (१०अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अं
२. आं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः आं
३. इं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः इं
४. ईं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ईं
५. उं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः उं
६. ऊं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऊं
७. ऋं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऋं
८. ॠं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ॠं
९. ऌं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऌं
१०. ॡं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ॡं
११. एं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः एं
१२. ऐं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऐं
१३. ओं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ओं
१४. औं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः औं
१५. अं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अं
१६. अः ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अः
१७. कं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः कं
१८. खं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः खं
१९. गं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः गं
२०. घं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः घं
२१. ङं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ङं
२२. चं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः चं
२३. छं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः छं
२४. जं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः जं
२५. झं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः झं
२६. ञं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ञं
२७. टं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः टं
२८. ठं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ठं
२९. डं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः डं
३०. ढं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ढं
३१. णं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः णं
३२. तं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः तं
३३. थं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः थं
३४. दं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः दं
३५. धं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः धं
३६. नं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः नं
३७. पं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः पं
३८. फं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः फं
३९. बं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः बं
४०. भं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः भं
४१. मं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः मं
४२. यं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः यं
४३. रं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः रं
४४. लं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः लं
४५. वं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः वं
४६. शं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः शं
४७. षं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः षं
४८. सं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः सं
४९. हं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः हं
५०. ळं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ळं

क्ष

५१. ळं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ळं
५२. हं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः हं
५३. सं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः सं
५४. षं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः षं
५५. शं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः शं
५६. वं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः वं

५७. लं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः लं
५८. रं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः रं
५९. यं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः यं
६०. मं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः मं
६१. भं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः भं
६२. बं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः बं
६३. फं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः फं
६४. पं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः पं
६५. नं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः नं
६६. धं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः धं
६७. दं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः दं
६८. थं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः थं
६९. तं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः तं
७०. णं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः णं
७१. ढं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ढं
७२. डं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः डं
७३. ठं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ठं
७४. टं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः टं
७५. ञं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ञं
७६. झं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः झं
७७. जं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः जं
७८. छं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः छं
७९. चं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः चं
८०. ङं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ङं
८१. घं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः घं
८२. गं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः गं
८३. खं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः खं
८४. कं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः कं
८५. अः ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अः
८६. अं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अं
८७. औं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः औं
८८. ओं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ओं
८९. ऐं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऐं
९०. एं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः एं
९१. ॡं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ॡं
९२. ऌं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऌं
९३. ॠं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ॠं
९४. ऋं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऋं
९५. ऊं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ऊं
९६. उं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः उं
९७. ईं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः ईं
९८. इं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः इं
९९. आं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः आं
१००.अं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अं
१०१.अं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः अं
१०२.कं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः कं
१०३.चं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः चं
१०४.टं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः टं
१०५.तं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः तं
१०६.पं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः पं
१०७.यं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः यं
१०८.शं ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः शं

होम-त्रि-मधु-युक्त करवीर, जपादि पुष्पों द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र के 'जप' से सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। ऋण का निवारण होता है। धन की प्राप्ति होती है। सभी रोगों की शान्ति होती है।

★★★

श्रीबुध-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीबुध-सप्ताक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीबुधः देवता। 'बं' बीजं। 'वं' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदये श्रीबुधाय देवतायै नमः। लिङ्गे 'बं' बीजाय नमः। नाभौ 'वं' शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान-

वन्दे बुधं सदा देवं, पीताम्बर - सुभूषणम् ।
जानुस्थ-वाम-हस्ताढ्यं, साभयेतर-पाणिकम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ बं बुधाय नमः (७ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ बं बुधाय नमः अं
२. आं ॐ बं बुधाय नमः आं
३. इं ॐ बं बुधाय नमः इं
४. ईं ॐ बं बुधाय नमः ईं
५. उं ॐ बं बुधाय नमः उं
६. ऊं ॐ बं बुधाय नमः ऊं
७. ऋं ॐ बं बुधाय नमः ऋं
८. ॠं ॐ बं बुधाय नमः ॠं
९. ऌं ॐ बं बुधाय नमः ऌं
१०. ॡं ॐ बं बुधाय नमः ॡं
११. एं ॐ बं बुधाय नमः एं
१२. ऐं ॐ बं बुधाय नमः ऐं
१३. ओं ॐ बं बुधाय नमः ओं
१४. औं ॐ बं बुधाय नमः औं
१५. अं ॐ बं बुधाय नमः अं
१६. अः ॐ बं बुधाय नमः अः
१७. कं ॐ बं बुधाय नमः कं
१८. खं ॐ बं बुधाय नमः खं
१९. गं ॐ बं बुधाय नमः गं
२०. घं ॐ बं बुधाय नमः घं
२१. ङं ॐ बं बुधाय नमः ङं
२२. चं ॐ बं बुधाय नमः चं
२३. छं ॐ बं बुधाय नमः छं
२४. जं ॐ बं बुधाय नमः जं
२५. झं ॐ बं बुधाय नमः झं
२६. ञं ॐ बं बुधाय नमः ञं
२७. टं ॐ बं बुधाय नमः टं
२८. ठं ॐ बं बुधाय नमः ठं
२९. डं ॐ बं बुधाय नमः डं
३०. ढं ॐ बं बुधाय नमः ढं
३१. णं ॐ बं बुधाय नमः णं
३२. तं ॐ बं बुधाय नमः तं
३३. थं ॐ बं बुधाय नमः थं
३४. दं ॐ बं बुधाय नमः दं
३५. धं ॐ बं बुधाय नमः धं
३६. नं ॐ बं बुधाय नमः नं
३७. पं ॐ बं बुधाय नमः पं
३८. फं ॐ बं बुधाय नमः फं
३९. बं ॐ बं बुधाय नमः बं
४०. भं ॐ बं बुधाय नमः भं
४१. मं ॐ बं बुधाय नमः मं
४२. यं ॐ बं बुधाय नमः यं
४३. रं ॐ बं बुधाय नमः रं
४४. लं ॐ बं बुधाय नमः लं
४५. वं ॐ बं बुधाय नमः वं
४६. शं ॐ बं बुधाय नमः शं
४७. षं ॐ बं बुधाय नमः षं

४८. सं ॐ बं बुधाय नमः सं
४९. हं ॐ बं बुधाय नमः हं
५०. ळं ॐ बं बुधाय नमः ळं

क्षं

५१. ळं ॐ बं बुधाय नमः ळं
५२. हं ॐ बं बुधाय नमः हं
५३. सं ॐ बं बुधाय नमः सं
५४. षं ॐ बं बुधाय नमः षं
५५. शं ॐ बं बुधाय नमः शं
५६. वं ॐ बं बुधाय नमः वं
५७. लं ॐ बं बुधाय नमः लं
५८. रं ॐ बं बुधाय नमः रं
५९. यं ॐ बं बुधाय नमः यं
६०. मं ॐ बं बुधाय नमः मं
६१. भं ॐ बं बुधाय नमः भं
६२. बं ॐ बं बुधाय नमः बं
६३. फं ॐ बं बुधाय नमः फं
६४. पं ॐ बं बुधाय नमः पं
६५. नं ॐ बं बुधाय नमः नं
६६. धं ॐ बं बुधाय नमः धं
६७. दं ॐ बं बुधाय नमः दं
६८. थं ॐ बं बुधाय नमः थं
६९. तं ॐ बं बुधाय नमः तं
७०. णं ॐ बं बुधाय नमः णं
७१. ढं ॐ बं बुधाय नमः ढं
७२. डं ॐ बं बुधाय नमः डं
७३. ठं ॐ बं बुधाय नमः ठं
७४. टं ॐ बं बुधाय नमः टं
७५. ञं ॐ बं बुधाय नमः ञं
७६. झं ॐ बं बुधाय नमः झं
७७. जं ॐ बं बुधाय नमः जं
७८. छं ॐ बं बुधाय नमः छं
७९. चं ॐ बं बुधाय नमः चं
८०. ङं ॐ बं बुधाय नमः ङं
८१. घं ॐ बं बुधाय नमः घं
८२. गं ॐ बं बुधाय नमः गं
८३. खं ॐ बं बुधाय नमः खं
८४. कं ॐ बं बुधाय नमः कं
८५. अः ॐ बं बुधाय नमः अः
८६. अं ॐ बं बुधाय नमः अं
८७. औं ॐ बं बुधाय नमः औं
८८. ओं ॐ बं बुधाय नमः ओं
८९. ऐं ॐ बं बुधाय नमः ऐं
९०. एं ॐ बं बुधाय नमः एं
९१. ऌं ॐ बं बुधाय नमः ऌं
९२. लृं ॐ बं बुधाय नमः लृं
९३. ॠं ॐ बं बुधाय नमः ॠं
९४. ऋं ॐ बं बुधाय नमः ऋं
९५. ऊं ॐ बं बुधाय नमः ऊं
९६. उं ॐ बं बुधाय नमः उं
९७. ईं ॐ बं बुधाय नमः ईं
९८. इं ॐ बं बुधाय नमः इं
९९. आं ॐ बं बुधाय नमः आं
१००.अं ॐ बं बुधाय नमः अं
१०१.अं ॐ बं बुधाय नमः अं
१०२.कं ॐ बं बुधाय नमः कं
१०३.चं ॐ बं बुधाय नमः चं
१०४.टं ॐ बं बुधाय नमः टं
१०५.तं ॐ बं बुधाय नमः तं
१०६.पं ॐ बं बुधाय नमः पं
१०७.यं ॐ बं बुधाय नमः यं
१०८.शं ॐ बं बुधाय नमः शं

होम-घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र के जप से अद्भुत शक्ति की प्राप्ति होती है।

★★★

श्रीवृहस्पति-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीवृहस्पति-अष्टाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसुराचार्यः (वृहस्पति) देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदये श्रीसुराचार्य-(वृहस्पति) देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-व्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। व्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। व्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। व्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। व्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। व्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-व्रां हृदयाय नमः। व्रीं शिरसे स्वाहा। व्रूं शिखायै वषट्। व्रैं कवचाय हुम्। व्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। व्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

(१) रत्नाष्टापद - वस्त्र - राशिममलं दक्षात् किरन्तम्,
करादासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादि-राशौ परम् ।
पीतालेपन - पुष्प - वस्त्रमखिलालङ्कार-सम्भूषितम्,
विद्या - सागर - पारगं सुर - गुरुं वन्दे सुवर्ण-प्रभम् ।। अथवा

(२) सुवर्णाभं पीत-वस्त्रं, रत्न-स्वर्णाम्बरादिकम्,
किरन्तं दक्ष-हस्तेन, रत्नादीन् वाम-पाणिना।
स्पृशन्तं सम्यगपरं, वृषणौ कनकादिकम्,
नानालङ्कार-शोभाढ्यं, विद्या-सागर-पारगम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-वृं वृहस्पतये नमः अथवा बृं बृहस्पतये नमः (८ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं वृं वृहस्पतये नमः अं	१०. लृं वृं वृहस्पतये नमः लृं	२०. घं वृं वृहस्पतये नमः घं
२. आं वृं वृहस्पतये नमः आं	११. एं वृं वृहस्पतये नमः एं	२१. ङं वृं वृहस्पतये नमः ङं
३. इं वृं वृहस्पतये नमः इं	१२. ऐं वृं वृहस्पतये नमः ऐं	२२. चं वृं वृहस्पतये नमः चं
४. ईं वृं वृहस्पतये नमः ईं	१३. ओं वृं वृहस्पतये नमः ओं	२३. छं वृं वृहस्पतये नमः छं
५. उं वृं वृहस्पतये नमः उं	१४. औं वृं वृहस्पतये नमः औं	२४. जं वृं वृहस्पतये नमः जं
६. ऊं वृं वृहस्पतये नमः ऊं	१५. अं वृं वृहस्पतये नमः अं	२५. झं वृं वृहस्पतये नमः झं
७. ऋं वृं वृहस्पतये नमः ऋं	१६. अः वृं वृहस्पतये नमः अः	२६. ञं वृं वृहस्पतये नमः ञं
८. ॠं वृं वृहस्पतये नमः ॠं	१७. कं वृं वृहस्पतये नमः कं	२७. टं वृं वृहस्पतये नमः टं
९. ऌं वृं वृहस्पतये नमः ऌं	१८. खं वृं वृहस्पतये नमः खं	२८. ठं वृं वृहस्पतये नमः ठं
	१९. गं वृं वृहस्पतये नमः गं	२९. डं वृं वृहस्पतये नमः डं

३०. ढं वृं वृहस्पतये नमः ढं
३१. णं वृं वृहस्पतये नमः णं
३२. तं वृं वृहस्पतये नमः तं
३३. थं वृं वृहस्पतये नमः थं
३४. दं वृं वृहस्पतये नमः दं
३५. धं वृं वृहस्पतये नमः धं
३६. नं वृं वृहस्पतये नमः नं
३७. पं वृं वृहस्पतये नमः पं
३८. फं वृं वृहस्पतये नमः फं
३९. बं वृं वृहस्पतये नमः बं
४०. भं वृं वृहस्पतये नमः भं
४१. मं वृं वृहस्पतये नमः मं
४२. यं वृं वृहस्पतये नमः यं
४३. रं वृं वृहस्पतये नमः रं
४४. लं वृं वृहस्पतये नमः लं
४५. वं वृं वृहस्पतये नमः वं
४६. शं वृं वृहस्पतये नमः शं
४७. षं वृं वृहस्पतये नमः षं
४८. सं वृं वृहस्पतये नमः सं
४९. हं वृं वृहस्पतये नमः हं
५०. ळं वृं वृहस्पतये नमः ळं

क्षं

५१. ळं वृं वृहस्पतये नमः ळं
५२. हं वृं वृहस्पतये नमः हं
५३. सं वृं वृहस्पतये नमः सं
५४. षं वृं वृहस्पतये नमः षं
५५. शं वृं वृहस्पतये नमः शं
५६. वं वृं वृहस्पतये नमः वं
५७. लं वृं वृहस्पतये नमः लं
५८. रं वृं वृहस्पतये नमः रं
५९. यं वृं वृहस्पतये नमः यं
६०. मं वृं वृहस्पतये नमः मं
६१. भं वृं वृहस्पतये नमः भं
६२. बं वृं वृहस्पतये नमः बं
६३. फं वृं वृहस्पतये नमः फं
६४. पं वृं वृहस्पतये नमः पं
६५. नं वृं वृहस्पतये नमः नं
६६. धं वृं वृहस्पतये नमः धं
६७. दं वृं वृहस्पतये नमः दं
६८. थं वृं वृहस्पतये नमः थं
६९. तं वृं वृहस्पतये नमः तं
७०. णं वृं वृहस्पतये नमः णं
७१. ढं वृं वृहस्पतये नमः ढं
७२. डं वृं वृहस्पतये नमः डं
७३. ठं वृं वृहस्पतये नमः ठं
७४. टं वृं वृहस्पतये नमः टं
७५. ञं वृं वृहस्पतये नमः ञं
७६. झं वृं वृहस्पतये नमः झं
७७. जं वृं वृहस्पतये नमः जं
७८. छं वृं वृहस्पतये नमः छं
७९. चं वृं वृहस्पतये नमः चं
८०. ङं वृं वृहस्पतये नमः ङं
८१. घं वृं वृहस्पतये नमः घं
८२. गं वृं वृहस्पतये नमः गं
८३. खं वृं वृहस्पतये नमः खं
८४. कं वृं वृहस्पतये नमः कं
८५. अः वृं वृहस्पतये नमः अः
८६. अं वृं वृहस्पतये नमः अं
८७. औं वृं वृहस्पतये नमः औं
८८. ओं वृं वृहस्पतये नमः ओं
८९. ऐं वृं वृहस्पतये नमः ऐं
९०. एं वृं वृहस्पतये नमः एं
९१. ऌं वृं वृहस्पतये नमः ऌं
९२. ऌं वृं वृहस्पतये नमः ऌं
९३. ॠं वृं वृहस्पतये नमः ॠं
९४. ऋं वृं वृहस्पतये नमः ऋं
९५. ऊं वृं वृहस्पतये नमः ऊं
९६. उं वृं वृहस्पतये नमः उं
९७. ईं वृं वृहस्पतये नमः ईं
९८. इं वृं वृहस्पतये नमः इं
९९. आं वृं वृहस्पतये नमः आं
१००. अं वृं वृहस्पतये नमः अं
१०१. अं वृं वृहस्पतये नमः अं
१०२. कं वृं वृहस्पतये नमः कं
१०३. चं वृं वृहस्पतये नमः चं
१०४. टं वृं वृहस्पतये नमः टं
१०५. तं वृं वृहस्पतये नमः तं
१०६. पं वृं वृहस्पतये नमः पं
१०७. यं वृं वृहस्पतये नमः यं
१०८. शं वृं वृहस्पतये नमः शं

होम-अन्न या घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

प्रयोग- (१) घृत-युक्त कुंकुम और हल्दी से उक्त मन्त्र द्वारा तीन दिन २७०० आहुतियाँ दे, तो वस्त्र,वैभव आदि की प्राप्ति होती है। (२) शत्रु, रोग आदि कष्टों में एवं स्व-जनों के कलह की शान्ति के लिए पीपल की समिधा द्वारा 'होम' करे, तो अभीष्ट की सिद्धि होकर सभी प्रकार की सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं।

विशेष-'मन्त्र-कोष' में उक्त दो अष्टाक्षर मन्त्रों के साथ तीसरा अष्टाक्षर मन्त्र 'बृं बृहस्पतये नमः' दिया गया है। साथ ही 'ॐ' युक्त नवाक्षर मन्त्र 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' भी दिया गया है। इन सभी मन्त्रों को ऊपर दी गई संक्षिप्त विधि के अनुसार 'जप' कर वाञ्छित लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

★★★

श्रीशुक्र-नवाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीशुक्र-नवाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीशुक्रः देवता। 'शुं' बीजं। 'स्वाहा' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदये श्रीशुक्राय देवतायै नमः। लिङ्गे 'शुं' बीजाय नमः। नाभौ 'स्वाहा' शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान-

सन्तप्त-काञ्चन-निभं द्वि-भुजं दयालुम्,
पीताम्बरं धृत - सरोरुह - केश-युग्मम् ।
क्रौञ्चासनं असुर - सेवित - पाद-पद्मम्,
शुक्रं भजे द्वि - नयनं हृदि पङ्कजेऽहम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा (९ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अं
२. आं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा आं
३. इं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा इं
४. ईं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ईं
५. उं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा उं
६. ऊं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऊं
७. ऋं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऋं
८. ॠं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ॠं
९. ऌं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऌं
१०. ॡं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ॡं
११. एं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा एं
१२. ऐं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऐं
१३. ओं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ओं
१४. औं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा औं
१५. अं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अं
१६. अः ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अः
१७. कं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा कं
१८. खं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा खं
१९. गं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा गं
२०. घं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा घं
२१. ङं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ङं
२२. चं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा चं
२३. छं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा छं
२४. जं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा जं
२५. झं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा झं
२६. ञं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ञं
२७. टं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा टं

२८. ठं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ठं
२९. डं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा डं
३०. ढं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ढं
३१. णं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा णं
३२. तं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा तं
३३. थं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा थं
३४. दं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा दं
३५. धं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा धं
३६. नं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा नं
३७. पं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा पं
३८. फं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा फं
३९. बं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा बं
४०. भं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा भं
४१. मं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा मं
४२. यं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा यं
४३. रं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा रं
४४. लं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा लं
४५. वं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा वं
४६. शं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा शं
४७. षं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा षं
४८. सं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा सं
४९. हं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा हं
५०. ळं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ळं

क्ष

५१. ळं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ळं
५२. हं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा हं
५३. सं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा सं
५४. षं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा षं
५५. शं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा शं
५६. वं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा वं
५७. लं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा लं
५८., रं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा रं
५९. यं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा यं
६०. मं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा मं
६१. भं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा भं
६२. बं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा बं
६३. फं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा फं
६४. पं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा पं
६५. नं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा नं
६६. धं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा धं
६७. दं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा दं
६८. थं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा थं
६९. तं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा तं
७०. णं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा णं
७१. ढं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ढं
७२. डं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा डं
७३. ठं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ठं
७४. टं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा टं
७५. ञं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ञं
७६. झं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा झं
७७. जं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा जं
७८. छं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा छं
७९. चं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा चं
८०. ङं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ङं
८१. घं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा घं
८२. गं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा गं
८३. खं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा खं
८४. कं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा कं
८५. अः ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अः
८६. अं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अं
८७. औं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा औं
८८. ओं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ओं
८९. ऐं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऐं
९०. एं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा एं

९१. ॡं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ॡं
९२. लृं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा लृं
९३. ॠं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ॠं
९४. ऋं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऋं
९५. ऊं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ऊं
९६. उं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा उं
९७. ईं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा ईं
९८. इं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा इं
९९. आं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा आं
१००.अं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अं
१०१.अं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा अं
१०२.कं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा कं
१०३.चं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा चं
१०४.टं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा टं
१०५.तं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा तं
१०६.पं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा पं
१०७.यं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा यं
१०८.शं ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा शं

होम- घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र के जप से सभी प्रकार की कामनाएँ पूरी होती हैं।

★★★

श्रीमङ्गल-प्रणाम-मन्त्र

ॐ धरणी-गर्भ-सम्भूतं, विद्युत्-कान्ति-सम-प्रभम् ।
कुमारं शक्ति - हस्तं च, मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ भूमि-पुत्रो महा-तेजा, जगतां भय - कृत-सदा ।
वृष्टि - कृत् वृष्टि - हर्ता च, पीडां हरतु मे कुजः ।।

श्रीबुध-प्रणाम-मन्त्र

ॐ प्रियंगु-कलिका श्यामं, रूपोणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्य-गुणोपेतं, तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ उत्पात-रूपो जगतां, चन्द्र-पुत्रो महा-द्युतिः ।
सूर्य-प्रिय-करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः ।।

श्रीशुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना (१)

विनियोग-ॐ अस्य श्रीशुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीदैत्य-पूजितः देवता। 'ॐ' बीजं। 'स्वाहा' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे विराट्-छन्दसे नमः। हृदये श्रीदैत्य-पूजित-देवतायै नमः। लिङ्गे 'ॐ' बीजाय नमः। नाभौ 'स्वाहा' शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। वस्त्रं तर्जनीभ्यां स्वाहा। मे मध्यमाभ्यां वषट्। देहि अनामिकाभ्यां हुम्। शुक्राय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ॐ हृदयाय नमः। वस्त्रं शिरसे स्वाहा। मे शिखायै वषट्। देहि कवचाय हुम्। शुक्राय नेत्र-त्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान–

श्वेताम्भोज - निषण्णमापण-तटे श्वेताम्बर-लेपनम्,
नित्यं भक्त-जनाय सम्प्रददतं वासो मणीन् हाटकम् ।
वामेनैव करेण दक्षिण - करे व्याख्यान-मुद्राङ्कितम्,
शुक्रं दैत्य-वरार्चितं स्मित-मुखं वन्दे सिताङ्ग-प्रभम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निबेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा (११ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा–

ॐ

१. अं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अं
२. आं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा आं
३. इं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा इं
४. ईं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ईं
५. उं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा उं
६. ऊं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऊं
७. ऋं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऋं
८. ॠं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ॠं
९. ऌं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऌं
१०. ॡं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ॡं
११. एं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा एं
१२. ऐं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऐं
१३. ओं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ओं
१४. औं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा औं
१५. अं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अं
१६. अः ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अः
१७. कं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा कं
१८. खं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा खं
१९. गं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा गं

२०. घं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा घं
२१. ङं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ङं
२२. चं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा चं
२३. छं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा छं
२४. जं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा जं
२५. झं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा झं
२६. ञं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ञं
२७. टं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा टं
२८. ठं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ठं
२९. डं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा डं
३०. ढं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ढं
३१. णं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा णं
३२. तं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा तं
३३. थं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा थं
३४. दं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा दं
३५. धं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा धं
३६. नं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा नं
३७. पं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा पं
३८. फं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा फं
३९. बं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा बं
४०. भं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा भं
४१. मं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा मं
४२. यं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा यं
४३. रं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा रं
४४. लं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा लं
४५. वं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा वं
४६. शं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा शं
४७. षं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा षं
४८. सं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा सं
४९. हं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा हं
५०. ळं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ळं
५१. ळं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ळं
५२. हं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा हं
५३. सं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा सं
५४. षं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा षं
५५. शं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा शं
५६. वं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा वं
५७. लं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा लं
५८. रं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा रं
५९. यं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा यं
६०. मं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा मं
६१. भं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा भं
६२. बं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा बं
६३. फं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा फं
६४. पं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा पं
६५. नं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा नं
६६. धं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा धं
६७. दं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा दं
६८. थं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा थं
६९. तं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा तं
७०. णं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा णं
७१. ढं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ढं
७२. डं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ड़ं
७३. ठं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ठं
७४. टं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा टं
७५. ञं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ञं
७६. झं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा झं
७७. जं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा जं
७८. छं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा छं
७९. चं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा चं
८०. ङं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ङं
८१. घं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा घं
८२. गं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा गं

८३. खं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा खं
८४. कं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा कं
८५. अः ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अः
८६. अं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अं
८७. औं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा औं
८८. ओं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ओं
८९. ऐं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऐं
९०. एं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा एं
९१. ऌं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऌं
९२. लृं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा लृं
९३. ॠं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ॠं
९४. ऋं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऋं
९५. ऊं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ऊं
९६. उं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा उं
९७. ईं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ईं
९८. इं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा इं
९९. आं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा आं
१००.अं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अं
१०१.अं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा अं
१०२.कं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा कं
१०३.चं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा चं
१०४.टं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा टं
१०५.तं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा तं
१०६.पं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा पं
१०७.यं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा यं
१०८.शं ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा शं

होम- घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल-उक्त 'मन्त्र' के 'जप' के द्वारा सुवर्ण, वस्त्र आदि की प्राप्ति होकर सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

★★★

श्रीवृहस्पति-प्रणाम-मन्त्र

ॐ देवानां च ऋषीणां च, गुरुं काञ्चन-सन्निभम् ।
बुद्धि-भूतं-त्रिलोकेशं, तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
ॐ देव-मन्त्री विशालाक्षः, सदा लोक-हिते रतः ।
अनेक - शिष्य-सम्पूर्णः, पीडां हरतु मे गुरुः ।।

श्रीशुक्र-प्रणाम-मन्त्र

ॐ हिम-कुन्द-मृणालाभं, दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्व-शास्त्र-प्रवक्तारं, भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ दैत्य-मन्त्री गुरुस्तेषां, प्राणदश्च महा-मतिः ।
प्रभुस्तारा-ग्रहाणां च, पीडां हरतु मे भृगुः ।।

श्रीशुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना (२)

विनियोग-ॐ अस्य श्रीशुक्र-एकादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। विराट् छन्दः। श्रीशुक्रः देवता। 'ॐ' बीजं। 'स्वाहा' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे विराट्-छन्दसे नमः। हृदये श्रीशुक्राय देवतायै नमः। लिङ्गे 'ॐ' बीजाय नमः। नाभौ 'स्वाहा' शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास-वस्त्रं अंगुष्ठाभ्यां नमः। मे तर्जनीभ्यां स्वाहा। देहि मध्यमाभ्यां वषट्। शुं अनामिकाभ्यां हुम्। शुक्राय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। नमः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-वस्त्रं हृदयाय नमः। मे शिरसे स्वाहा। देहि शिखायै वषट्। शुं कवचाय हुम्। शुक्राय नेत्र-त्रयाय वौषट्। नमः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

शुक्रं नमाम्यासनस्थं मुक्ताभरण - भूषितम् ।
स्वर्ण-वासो रत्न-धारा चिन्मुद्रात्त-कर-द्वयम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः (११ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अं
२. आं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः आं
३. इं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः इं
४. ईं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ईं
५. उं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः उं
६. ऊं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऊं
७. ऋं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऋं
८. ॠं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ॠं
९. ऌं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऌं
१०. ॡं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ॡं
११. एं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः एं
१२. ऐं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऐं
१३. ओं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ओं
१४. औं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः औं
१५. अं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अं
१६. अः वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अः
१७. कं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः कं
१८. खं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः खं
१९. गं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः गं
२०. घं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः घं
२१. ङं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ङं
२२. चं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः चं
२३. छं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः छं

२४. जं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः जं
२५. झं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः झं
२६. ञं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ञं
२७. टं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः टं
२८. ठं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ठं
२९. डं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः डं
३०. ढं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ढं
३१. णं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः णं
३२. तं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः तं
३३. थं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः थं
३४. दं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः दं
३५. धं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः धं
३६. नं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः नं
३७. पं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः पं
३८. फं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः फं
३९. बं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः बं
४०. भं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः भं
४१. मं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः मं
४२. यं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः यं
४३. रं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः रं
४४. लं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः लं
४५. वं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः वं
४६. शं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः शं
४७. षं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः षं
४८. सं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः सं
४९. हं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः हं
५०. ळं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ळं

क्ष

५१. ळं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ळं
५२. हं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः हं
५३. सं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः सं
५४. षं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः षं
५५. शं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः शं
५६. वं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः वं
५७. लं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः लं
५८. रं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः रं
५९. यं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः यं
६०. मं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः मं
६१. भं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः भं
६२. बं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः बं
६३. फं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः फं
६४. पं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः पं
६५. नं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः नं
६६. धं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः धं
६७. दं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः दं
६८. थं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः थं
६९. तं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः तं
७०. णं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः णं
७१. ढं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ढं
७२. डं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः डं
७३. ठं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ठं
७४. टं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः टं
७५. ञं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ञं
७६. झं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः झं
७७. जं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः जं
७८. छं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः छं
७९. चं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः चं
८०. ङं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ङं
८१. घं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः घं
८२. गं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः गं
८३. खं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः खं
८४. कं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः कं
८५. अः वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अः
८६. अं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अं

८७. औं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः औं
८८. ओं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ओं
८९. ऐं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऐं
९०. एं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः एं
९१. ऌं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऌं
९२. लं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः लं
९३. ॠं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ॠं
९४. ऋं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऋं
९५. ऊं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ऊं
९६. उं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः उं
९७. ईं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः ईं
९८. इं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः इं
९९. आं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः आं
१००.अं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अं
१०१.अं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः अं
१०२.कं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः कं
१०३.चं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः चं
१०४.टं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः टं
१०५.तं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः तं
१०६.पं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः पं
१०७.यं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः यं
१०८.शं वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः शं

होम- घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल-उक्त 'मन्त्र' के 'जप' के द्वारा सुवर्ण, वस्त्र आदि की प्राप्ति होकर सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

★★★

श्रीशनि-प्रणाम-मन्त्र

ॐ नीलाञ्जन - समाभासं, रवि - पुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया-मार्तण्ड - सम्भूतं, तं नमामि शनैश्चरम् ।।
ॐ सूर्य-पुत्रो दीर्घ-देहो, विशालाक्षः शिव-प्रियः ।
मंद - चारः प्रसन्नात्मा, पीडां हरतु मे शनिः ।।

श्रीशनैश्चर-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीशनैश्चर-अष्टाक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीशनैश्चरः देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीशनैश्चराय देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान-

वन्दे शनैश्चरं वक्र-दंष्ट्रं नील - विभूषणम् ।
वाम-जानु-स्थितं वाम-करं दक्षे वरं दधत् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-शं शनैश्चराय नमः (८ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं शं शनैश्चराय नमः अं
२. आं शं शनैश्चराय नमः आं
३. इं शं शनैश्चराय नमः इं
४. ईं शं शनैश्चराय नमः ईं
५. उं शं शनैश्चराय नमः उं
६. ऊं शं शनैश्चराय नमः ऊं
७. ऋं शं शनैश्चराय नमः ऋं
८. ॠं शं शनैश्चराय नमः ॠं
९. ऌं शं शनैश्चराय नमः ऌं
१०. ॡं शं शनैश्चराय नमः ॡं
११. एं शं शनैश्चराय नमः एं
१२. ऐं शं शनैश्चराय नमः ऐं
१३. ओं शं शनैश्चराय नमः ओं
१४. औं शं शनैश्चराय नमः औं
१५. अं शं शनैश्चराय नमः अं
१६. अः शं शनैश्चराय नमः अः
१७. कं शं शनैश्चराय नमः कं
१८. खं शं शनैश्चराय नमः खं
१९. गं शं शनैश्चराय नमः गं
२०. घं शं शनैश्चराय नमः घं
२१. ङं शं शनैश्चराय नमः ङं
२२. चं शं शनैश्चराय नमः चं
२३. छं शं शनैश्चराय नमः छं
२४. जं शं शनैश्चराय नमः जं
२५. झं शं शनैश्चराय नमः झं
२६. ञं शं शनैश्चराय नमः ञं
२७. टं शं शनैश्चराय नमः टं
२८. ठं शं शनैश्चराय नमः ठं
२९. डं शं शनैश्चराय नमः डं
३०. ढं शं शनैश्चराय नमः ढं
३१. णं शं शनैश्चराय नमः णं
३२. तं शं शनैश्चराय नमः तं
३३. थं शं शनैश्चराय नमः थं
३४. दं शं शनैश्चराय नमः दं
३५. धं शं शनैश्चराय नमः धं
३६. नं शं शनैश्चराय नमः नं
३७. पं शं शनैश्चराय नमः पं
३८. फं शं शनैश्चराय नमः फं
३९. बं शं शनैश्चराय नमः बं
४०. भं शं शनैश्चराय नमः भं
४१. मं शं शनैश्चराय नमः मं
४२. यं शं शनैश्चराय नमः यं
४३. रं शं शनैश्चराय नमः रं
४४. लं शं शनैश्चराय नमः लं
४५. वं शं शनैश्चराय नमः वं
४६. शं शं शनैश्चराय नमः शं
४७. षं शं शनैश्चराय नमः षं
४८. सं शं शनैश्चराय नमः सं
४९. हं शं शनैश्चराय नमः हं
५०. ळं शं शनैश्चराय नमः ळं

क्ष

५१. ळं शं शनैश्चराय नमः ळं
५२. हं शं शनैश्चराय नमः हं
५३. सं शं शनैश्चराय नमः सं
५४. षं शं शनैश्चराय नमः षं
५५. शं शं शनैश्चराय नमः शं
५६. वं शं शनैश्चराय नमः वं
५७. लं शं शनैश्चराय नमः लं
५८. रं शं शनैश्चराय नमः रं
५९. यं शं शनैश्चराय नमः यं
६०. मं शं शनैश्चराय नमः मं
६१. भं शं शनैश्चराय नमः भं
६२. बं शं शनैश्चराय नमः बं
६३. फं शं शनैश्चराय नमः फं
६४. पं शं शनैश्चराय नमः पं
६५. नं शं शनैश्चराय नमः नं
६६. धं शं शनैश्चराय नमः धं
६७. दं शं शनैश्चराय नमः दं
६८. थं शं शनैश्चराय नमः थं
६९. तं शं शनैश्चराय नमः तं
७०. णं शं शनैश्चराय नमः णं
७१. ढं शं शनैश्चराय नमः ढं
७२. डं शं शनैश्चराय नमः डं
७३. ठं शं शनैश्चराय नमः ठं
७४. टं शं शनैश्चराय नमः टं
७५. ञं शं शनैश्चराय नमः ञं
७६. झं शं शनैश्चराय नमः झं
७७. जं शं शनैश्चराय नमः जं
७८. छं शं शनैश्चराय नमः छं
७९. चं शं शनैश्चराय नमः चं
८०. ङं शं शनैश्चराय नमः ङं
८१. घं शं शनैश्चराय नमः घं
८२. गं शं शनैश्चराय नमः गं
८३. खं शं शनैश्चराय नमः खं
८४. कं शं शनैश्चराय नमः कं
८५. अः शं शनैश्चराय नमः अः
८६. अं शं शनैश्चराय नमः अं
८७. औं शं शनैश्चराय नमः औं
८८. ओं शं शनैश्चराय नमः ओं
८९. ऐं शं शनैश्चराय नमः ऐं
९०. एं शं शनैश्चराय नमः एं
९१. ऌं शं शनैश्चराय नमः ऌं
९२. लृं शं शनैश्चराय नमः लृं
९३. ॠं शं शनैश्चराय नमः ॠं
९४. ऋं शं शनैश्चराय नमः ऋं
९५. ऊं शं शनैश्चराय नमः ऊं
९६. उं शं शनैश्चराय नमः उं
९७. ईं शं शनैश्चराय नमः ईं
९८. इं शं शनैश्चराय नमः इं
९९. आं शं शनैश्चराय नमः आं
१००. अं शं शनैश्चराय नमः अं
१०१. अं शं शनैश्चराय नमः अं
१०२. कं शं शनैश्चराय नमः कं
१०३. चं शं शनैश्चराय नमः चं
१०४. टं शं शनैश्चराय नमः टं
१०५. तं शं शनैश्चराय नमः तं
१०६. पं शं शनैश्चराय नमः पं
१०७. यं शं शनैश्चराय नमः यं
१०८. शं शं शनैश्चराय नमः शं

होम-घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल-उक्त मन्त्र के जप से सभी प्रकार की आपदाओं से रक्षा होती है और दरिद्रता दूर होती है।

विशेष-'मन्त्र-कोष' में उक्त अष्टाक्षर मन्त्र के समान 'प्रणव'-युक्त नवाक्षर मन्त्र 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' भी दिया गया है। इसके ऋषि व छन्द अष्टाक्षर मन्त्र के समान 'ब्रह्मा' व 'गायत्री' ही हैं। इसका बीज 'शं' व शक्ति 'वं' है। ध्यान भी दूसरा है। अतः उसके अनुसार आवश्यक परिवर्तन कर साधना करनी चाहिए।

★★★

श्रीराहु-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीराहु-सप्ताक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीराहुः देवता। 'रां' बीजं। 'कं' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदये श्रीराहवे देवतायै नमः। लिङ्गे 'रां' बीजाय नमः। नाभौ 'कं' शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान–

वन्दे राहुं धूम्र-वर्णं, अर्ध-कायं कृताञ्जलिम् ।
विकृतास्यं रक्त - नेत्रं, धूम्रालङ्कारमन्वहम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ रां राहवे नमः (७ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा–

ॐ

१. अं ॐ रां राहवे नमः अं
२. आं ॐ रां राहवे नमः आं
३. इं ॐ रां राहवे नमः इं
४. ईं ॐ रां राहवे नमः ईं
५. उं ॐ रां राहवे नमः उं
६. ऊं ॐ रां राहवे नमः ऊं
७. ऋं ॐ रां राहवे नमः ऋं
८. ॠं ॐ रां राहवे नमः ॠं
९. ऌं ॐ रां राहवे नमः ऌं
१०. ॡं ॐ रां राहवे नमः ॡं
११. एं ॐ रां राहवे नमः एं
१२. ऐं ॐ रां राहवे नमः ऐं
१३. ओं ॐ रां राहवे नमः ओं
१४. औं ॐ रां राहवे नमः औं
१५. अं ॐ रां राहवे नमः अं
१६. अः ॐ रां राहवे नमः अः
१७. कं ॐ रां राहवे नमः कं
१८. खं ॐ रां राहवे नमः खं
१९. गं ॐ रां राहवे नमः गं
२०. घं ॐ रां राहवे नमः घं
२१. ङं ॐ रां राहवे नमः ङं
२२. चं ॐ रां राहवे नमः चं
२३. छं ॐ रां राहवे नमः छं
२४. जं ॐ रां राहवे नमः जं
२५. झं ॐ रां राहवे नमः झं
२६. ञं ॐ रां राहवे नमः ञं
२७. टं ॐ रां राहवे नमः टं
२८. ठं ॐ रां राहवे नमः ठं
२९. डं ॐ रां राहवे नमः डं
३०. ढं ॐ रां राहवे नमः ढं
३१. णं ॐ रां राहवे नमः णं
३२. तं ॐ रां राहवे नमः तं
३३. थं ॐ रां राहवे नमः थं
३४. दं ॐ रां राहवे नमः दं
३५. धं ॐ रां राहवे नमः धं
३६. नं ॐ रां राहवे नमः नं
३७. पं ॐ रां राहवे नमः पं
३८. फं ॐ रां राहवे नमः फं
३९. बं ॐ रां राहवे नमः बं
४०. भं ॐ रां राहवे नमः भं
४१. मं ॐ रां राहवे नमः मं
४२. यं ॐ रां राहवे नमः यं
४३. रं ॐ रां राहवे नमः रं
४४. लं ॐ रां राहवे नमः लं
४५. वं ॐ रां राहवे नमः वं
४६. शं ॐ रां राहवे नमः शं
४७. षं ॐ रां राहवे नमः षं

४८. सं ॐ रां राहवे नमः सं
४९. हं ॐ रां राहवे नमः हं
५०. ळं ॐ रां राहवे नमः ळं

क्ष

५१. ळं ॐ रां राहवे नमः ळं
५२. हं ॐ रां राहवे नमः हं
५३. सं ॐ रां राहवे नमः सं
५४. षं ॐ रां राहवे नमः षं
५५. शं ॐ रां राहवे नमः शं
५६. वं ॐ रां राहवे नमः वं
५७. लं ॐ रां राहवे नमः लं
५८. रं ॐ रां राहवे नमः रं
५९. यं ॐ रां राहवे नमः यं
६०. मं ॐ रां राहवे नमः मं
६१. भं ॐ रां राहवे नमः भं
६२. बं ॐ रां राहवे नमः बं
६३. फं ॐ रां राहवे नमः फं
६४. पं ॐ रां राहवे नमः पं
६५. नं ॐ रां राहवे नमः नं
६६. धं ॐ रां राहवे नमः धं
६७. दं ॐ रां राहवे नमः दं
६८. थं ॐ रां राहवे नमः थं
६९. तं ॐ रां राहवे नमः तं
७०. णं ॐ रां राहवे नमः णं
७१. ढं ॐ रां राहवे नमः ढं
७२. डं ॐ रां राहवे नमः डं
७३. ठं ॐ रां राहवे नमः ठं
७४. टं ॐ रां राहवे नमः टं
७५. ञं ॐ रां राहवे नमः ञं
७६. झं ॐ रां राहवे नमः झं
७७. जं ॐ रां राहवे नमः जं
७८. छं ॐ रां राहवे नमः छं
७९. चं ॐ रां राहवे नमः चं
८०. ङं ॐ रां राहवे नमः ङं
८१. घं ॐ रां राहवे नमः घं
८२. गं ॐ रां राहवे नमः गं
८३. खं ॐ रां राहवे नमः खं
८४. कं ॐ रां राहवे नमः कं
८५. अः ॐ रां राहवे नमः अः
८६. अं ॐ रां राहवे नमः अं
८७. औं ॐ रां राहवे नमः औं
८८. ओं ॐ रां राहवे नमः ओं
८९. ऐं ॐ रां राहवे नमः ऐं
९०. एं ॐ रां राहवे नमः एं
९१. ॡं ॐ रां राहवे नमः ॡं
९२. ॡं ॐ रां राहवे नमः ॡं
९३. ॠं ॐ रां राहवे नमः ॠं
९४. ॠं ॐ रां राहवे नमः ॠं
९५. ऊं ॐ रां राहवे नमः ऊं
९६. उं ॐ रां राहवे नमः उं
९७. ईं ॐ रां राहवे नमः ईं
९८. इं ॐ रां राहवे नमः इं
९९. आं ॐ रां राहवे नमः आं
१००.अं ॐ रां राहवे नमः अं
१०१.अं ॐ रां राहवे नमः अं
१०२.कं ॐ रां राहवे नमः कं
१०३.चं ॐ रां राहवे नमः चं
१०४.टं ॐ रां राहवे नमः टं
१०५.तं ॐ रां राहवे नमः तं
१०६.पं ॐ रां राहवे नमः पं
१०७.यं ॐ रां राहवे नमः यं
१०८.शं ॐ रां राहवे नमः शं

होम-गो-घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल-'राहु' की उपासना से यात्राएँ सफल होती हैं और वाद-विवाद में विजय मिलती है।

★★★

श्रीराहु-प्रणाम-मन्त्र

ॐ अर्ध-कायं महा-दीर्घं, चन्द्रादित्य-विमर्दनम् ।
सिंहिका - गर्भ-सम्भूतं, तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ महा-शिरा महा-वक्त्रो, दीर्घ-दंष्ट्रो महा-बलः ।
अतनुश्चोर्ध्व - केशश्च, पीडां हरतु मे तमः ।।

श्रीकेतु-सप्ताक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग-ॐ अस्य श्रीकेतु-सप्ताक्षर-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीकेतुः देवता। 'क्रं' बीजं। 'कं' शक्तिः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास-शिरसि श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः। मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः। हृदये श्रीकेतवे देवतायै नमः। लिङ्गे 'क्रं' बीजाय नमः। नाभौ 'कं' शक्तये नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान-

वन्दे केतुं कृष्ण-वर्णं, कृष्ण-वस्त्र-विभूषणम् ।
वामोरु - न्यस्त-तद्धस्तं, साभयेतर-पाणिकम् ।।

मानस-पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ कें केतवे नमः (७ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

ॐ

१. अं ॐ कें केतवे नमः अं
२. आं ॐ कें केतवे नमः आं
३. इं ॐ कें केतवे नमः इं
४. ईं ॐ कें केतवे नमः ईं
५. उं ॐ कें केतवे नमः उं
६. ऊं ॐ कें केतवे नमः ऊं
७. ऋं ॐ कें केतवे नमः ऋं
८. ॠं ॐ कें केतवे नमः ॠं
९. ऌं ॐ कें केतवे नमः ऌं
१०. ॡं ॐ कें केतवे नमः ॡं
११. एं ॐ कें केतवे नमः एं
१२. ऐं ॐ कें केतवे नमः ऐं
१३. ओं ॐ कें केतवे नमः ओं
१४. औं ॐ कें केतवे नमः औं
१५. अं ॐ कें केतवे नमः अं
१६. अः ॐ कें केतवे नमः अः
१७. कं ॐ कें केतवे नमः कं
१८. खं ॐ कें केतवे नमः खं
१९. गं ॐ कें केतवे नमः गं
२०. घं ॐ कें केतवे नमः घं
२१. ङं ॐ कें केतवे नमः ङं
२२. चं ॐ कें केतवे नमः चं
२३. छं ॐ कें केतवे नमः छं
२४. जं ॐ कें केतवे नमः जं
२५. झं ॐ कें केतवे नमः झं
२६. ञं ॐ कें केतवे नमः ञं
२७. टं ॐ कें केतवे नमः टं
२८. ठं ॐ कें केतवे नमः ठं
२९. डं ॐ कें केतवे नमः डं
३०. ढं ॐ कें केतवे नमः ढं
३१. णं ॐ कें केतवे नमः णं
३२. तं ॐ कें केतवे नमः तं
३३. थं ॐ कें केतवे नमः थं
३४. दं ॐ कें केतवे नमः दं
३५. धं ॐ कें केतवे नमः धं
३६. नं ॐ कें केतवे नमः नं
३७. पं ॐ कें केतवे नमः पं
३८. फं ॐ कें केतवे नमः फं
३९. बं ॐ कें केतवे नमः बं
४०. भं ॐ कें केतवे नमः भं
४१. मं ॐ कें केतवे नमः मं
४२. यं ॐ कें केतवे नमः यं
४३. रं ॐ कें केतवे नमः रं
४४. लं ॐ कें केतवे नमः लं
४५. वं ॐ कें केतवे नमः वं
४६. शं ॐ कें केतवे नमः शं
४७. षं ॐ कें केतवे नमः षं

४८. सं ॐ कें केतवे नमः सं
४९. हं ॐ कें केतवे नमः हं
५०. ळं ॐ कें केतवे नमः ळं

क्ष

५१. ळं ॐ कें केतवे नमः ळं
५२. हं ॐ कें केतवे नमः हं
५३. सं ॐ कें केतवे नमः सं
५४. षं ॐ कें केतवे नमः षं
५५. शं ॐ कें केतवे नमः शं
५६. वं ॐ कें केतवे नमः वं
५७. लं ॐ कें केतवे नमः लं
५८. रं ॐ कें केतवे नमः रं
५९. यं ॐ कें केतवे नमः यं
६०. मं ॐ कें केतवे नमः मं
६१. भं ॐ कें केतवे नमः भं
६२. बं ॐ कें केतवे नमः बं
६३. फं ॐ कें केतवे नमः फं
६४. पं ॐ कें केतवे नमः पं
६५. नं ॐ कें केतवे नमः नं
६६. धं ॐ कें केतवे नमः धं
६७. दं ॐ कें केतवे नमः दं
६८. थं ॐ कें केतवे नमः थं
६९. तं ॐ कें केतवे नमः तं
७०. णं ॐ कें केतवे नमः णं
७१. ढं ॐ कें केतवे नमः ढं
७२. डं ॐ कें केतवे नमः डं
७३. ठं ॐ कें केतवे नमः ठं
७४. टं ॐ कें केतवे नमः टं
७५. ञं ॐ कें केतवे नमः ञं
७६. झं ॐ कें केतवे नमः झं
७७. जं ॐ कें केतवे नमः जं
७८. छं ॐ कें केतवे नमः छं
७९. चं ॐ कें केतवे नमः चं
८०. ङं ॐ कें केतवे नमः ङं
८१. घं ॐ कें केतवे नमः घं
८२. गं ॐ कें केतवे नमः गं
८३. खं ॐ कें केतवे नमः खं
८४. कं ॐ कें केतवे नमः कं
८५. अः ॐ कें केतवे नमः अः
८६. अं ॐ कें केतवे नमः अं
८७. औं ॐ कें केतवे नमः औं
८८. ओं ॐ कें केतवे नमः ओं
८९. ऐं ॐ कें केतवे नमः ऐं
९०. एं ॐ कें केतवे नमः एं
९१. ॡं ॐ कें केतवे नमः ॡं
९२. ॡं ॐ कें केतवे नमः ॡं
९३. ॠं ॐ कें केतवे नमः ॠं
९४. ॠं ॐ कें केतवे नमः ॠं
९५. ऊं ॐ कें केतवे नमः ऊं
९६. उं ॐ कें केतवे नमः उं
९७. ईं ॐ कें केतवे नमः ईं
९८. इं ॐ कें केतवे नमः इं
९९. आं ॐ कें केतवे नमः आं
१००. अं ॐ कें केतवे नमः अं
१०१. अं ॐ कें केतवे नमः अं
१०२. कं ॐ कें केतवे नमः कं
१०३. चं ॐ कें केतवे नमः चं
१०४. टं ॐ कें केतवे नमः टं
१०५. तं ॐ कें केतवे नमः तं
१०६. पं ॐ कें केतवे नमः पं
१०७. यं ॐ कें केतवे नमः यं
१०८. शं ॐ कें केतवे नमः शं

होम- कुश द्वारा 'होम' करना चाहिए।

फल- उक्त मन्त्र के जप से समस्त आपदाओं का निवारण होता है एवं आयु की वृद्धि होती है।

★★★

श्रीकेतु-प्रणाम-मन्त्र

ॐ पलाश-पुष्प-सङ्काशं, तारका-ग्रह-मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं, तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ अनेक - रूप-वर्णाश्च, शत-शोभ-सहस्त्रशः ।
उत्पात-रूपो जगतां, पीडां हरतु मे शिखी ।।

ग्रहों की माताओं के मन्त्रों की साधना

'मेरु-तन्त्र' के अनुसार ''ग्रह-माता के प्रसन्न होने पर 'विपरीत ग्रह' कोई अनिष्ट नहीं कर सकते और यदि 'ग्रह-माता' अप्रसन्न हैं, तो 'ग्रह' कितना भी अनुकूल क्यों न हो, उससे कोई लाभ नहीं हो सकता।'' (पृष्ट ५०१)।

अतः ग्रह-माता की उपासना विशेष रूप से फल-दायी है। 'सूर्य' आदि नौ ग्रहों की माताओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-१. पिङ्गला (सूर्य-जननी), २. मङ्गला (चन्द्र-जननी), ३. भ्रामरी (मङ्गल-जननी), ४. भद्रिका (बुध-जननी), ५. धान्या (गुरु-जननी), ६. सिद्धा (शुक्र-जननी), ७. उल्का (शनि-जननी), ८. सङ्कटा (राहु-जननी), ९. विकटा (केतु-जननी)।

ग्रह-माताएँ 'रुद्र-नेत्रान्विता' हैं और 'जन्म-नक्षत्र' से उनकी दशाएँ क्रमशः आती हैं। इन नवों ग्रह-माताओं की पूजा हेतु 'जवा' पुष्प का प्रयोग करना चाहिए। 'धूप' हेतु 'गुग्गुल' का प्रयोग करना चाहिए। 'शुद्ध घी' से 'दीप' करना चाहिए। नैवेद्य' में मधुर 'पायस' (खीर) आदि अर्पित करना चाहिए। लाल रंग के 'अलंकार', 'वस्त्र', 'चन्दन' आदि से ग्रह-माताओं को उनके मन्त्रों के 'सहस्त्र'-जप द्वारा उन्हें तृप्त करना चाहिए।

उत्पातों के निवारण के लिए छिद्र-रहित एक हाथ लम्बे-चौड़े स्वर्ण-पात्र में सुन्दर 'पूजा-यन्त्र' बनाकर उसमें 'ग्रह-माता' का पूजन कर उनके मन्त्र का 'सहस्त्र'-जप करना चाहिए। 'यन्त्र' के मध्य में 'ग्रह-माता की पूजा करनी चाहिए। फिर 'इच्छा, ज्ञान, क्रिया'-तीन शक्तियों की पूजा कर 'मन्मथ' (काम-देव) के पाँच रूपों का पूजन करना चाहिए। इसके बाद आठ दलों में योगिनियों की पूजा कर उसके बाहर 'भू-पुर' में 'लोक-पालों' और उनके 'अस्त्रों' का पूजन करना चाहिए।

पूजा के बाद 'होम' करना चाहिए। 'होम'-हेतु या तो चौकोर 'कुण्ड' विधि-वत् बनाए अथवा 'स्थण्डिल' को गोबर व जल द्वारा सुन्दर लिपे हुए चार हाथ लम्बे-चौड़े स्थान में स्थापित कर 'अग्नि' की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। 'बेल' की पत्तियों और फलों, कमल के पुष्पों, नागकेशर, पायसान्न अथवा 'कुल-द्रव्यों' से कामना के अनुसार सहस्त्र (एक हजार) या अयुत (दस हजार) या लक्ष (एक लाख) आहुतियाँ प्रदान करनी चाहिए।

'पूजा' एवं 'होम' की उक्त विधि सभी ग्रह-माताओं के सम्बन्ध में अपनानी चाहिए। ग्रह-माता के मन्त्रों के 'जप' हेतु अन्य विशेष बातों के लिए आगे दी जा रही प्रत्येक 'ग्रह-माता' के मन्त्रों की विधि को पढ़ना और समझना चाहिए।यथा-

१. श्री सूर्य-जननी पिङ्गला-त्रयोदशाक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्षीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। क्षूं मध्यमाभ्यां वषट्। क्षैं अनामिकाभ्यां हुम्। क्षौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। क्षः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-क्षां हृदयाय नमः। क्षीं शिरसे स्वाहा। क्षूं शिखायै वषट्। क्षैं कवचाय हुम्। क्षौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। क्षः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

पिङ्ग-वर्णां पिङ्ग-केशीं, पिङ्ग-नेत्रां धनुः-शरान् ।
हस्ताभ्यां दधतीं पद्म - युगलं तां भजाम्यहम् ।।

मानस पूजा–लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र– क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट्। (१३ अक्षर)।

जप–'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा–

१. अं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अं
२. आं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् आं
३. इं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् इं
४. ईं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ईं
५. उं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् उं
६. ऊं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऊं
७. ऋं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऋं
८. ॠं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ॠं
९. ऌं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऌं
१०. ॡं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ॡं
११. एं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् एं
१२. ऐं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऐं
१३. ओं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ओं
१४. औं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् औं
१५. अं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अं
१६. अः क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अः
१७. कं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् कं
१८. खं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् खं
१९. गं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् गं
२०. घं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् घं
२१. ङं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ङं
२२. चं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् चं
२३. छं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् छं
२४. जं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् जं
२५. झं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् झं
२६. ञं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ञं
२७. टं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् टं
२८. ठं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ठं
२९. डं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् डं
३०. ढं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ढं
३१. णं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् णं
३२. तं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् तं
३३. थं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् थं
३४. दं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् दं
३५. धं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् धं
३६. नं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् नं
३७. पं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् पं
३८. फं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् फं
३९. बं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् बं
४०. भं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् भं
४१. मं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् मं
४२. यं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् यं
४३. रं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् रं
४४. लं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् लं
४५. वं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् वं
४६. शं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् शं
४७. षं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् षं
४८. सं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् सं
४९. हं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् हं

५०. ळं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ळं

क्षें

५१. ळं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ळं
५२. हं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् हं
५३. सं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् सं
५४. षं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् षं
५५. शं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् शं
५६. वं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् वं
५७. लं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् लं
५८. रं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् रं
५९. यं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् यं
६०. मं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् मं
६१. भं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् भं
६२. बं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् बं
६३. फं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् फं
६४. पं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् पं
६५. नं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् नं
६६. धं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् धं
६७. दं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् दं
६८. थं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् थं
६९. तं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् तं
७०. णं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् णं
७१. ढं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ढं
७२. डं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् डं
७३. ठं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ठं
७४. टं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् टं
७५. ञं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ञं
७६. झं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् झं
७७. जं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् जं
७८. छं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् छं
७९. चं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् चं
८०. ङं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ङं
८१. घं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् घं
८२. गं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् गं
८३. खं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् खं
८४. कं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् कं
८५. अः क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अः
८६. अं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अं
८७. औं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् औं
८८. ओं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ओं
८९. ऐं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऐं
९०. एं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् एं
९१. ॡं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ॡं
९२. ऌं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऌं
९३. ॠं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ॠं
९४. ऋं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऋं
९५. ऊं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ऊं
९६. उं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् उं
९७. ईं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् ईं
९८. इं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् इं
९९. आं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् आं
१००. अं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अं
१०१. अं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् अं
१०२. कं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् कं
१०३. चं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् चं
१०४. टं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् टं
१०५. तं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् तं
१०६. पं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् पं
१०७. यं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् यं
१०८. शं क्षें पिङ्गले वैरि-वारणि प्रसीद फट् शं

फल- सूर्य-माता 'पिङ्गला' प्रसन्न होने पर शत्रुओं को महा 'आधि-व्याधि' से पीड़ित करती हैं और अप्रसन्न होने पर साधक को दुःख देती हैं।

★★★

२. श्री चन्द्र-जननी मङ्गला-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

मङ्गलांसु- त्रिनयनामुद्यदादित्य - सन्निभां, दर - स्मेर-मुखाम्भोजां सिन्दूर-सुन्दराधराम् ।
पद्म-द्वये धनुर्वाणान् दधतीं भुज-पल्लवैः, सु-गुञ्जन्मञ्जु-मञ्जीरां काञ्ची-गुण-विराजिताम् ।।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ह्रीं मङ्गले मङ्गलालये स्वाहा (११ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- चन्द्र-माता 'मङ्गला' की प्रसन्नता से दुर्योग सुयोग में परिवर्तित हो जाते हैं।

३. श्री मङ्गल-जननी भ्रामरी-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्षीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। क्षूं मध्यमाभ्यां वषट्। क्षैं अनामिकाभ्यां हुम्। क्षौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। क्षः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-क्षां हृदयाय नमः। क्षीं शिरसे स्वाहा। क्षूं शिखायै वषट्। क्षैं कवचाय हुम्। क्षौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। क्षः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

पिङ्ग-वर्णां पिङ्ग-केशीं, पिङ्ग-नेत्रां धनुः-शरान् ।
हस्ताभ्यां दधतीं पद्म - युगलं तां भजाम्यहम् ।।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- क्षीं भ्रामरी सपत्नान् मे अधीश्वरि भ्रामय क्लीं (१६ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- मङ्गल-माता 'भ्रामरी' की प्रसन्नता से सभी लोग वशीभूत होते हैं।

४. श्री बुध-जननी भद्रिका-त्रयोविंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-व्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। व्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। व्लूं मध्यमाभ्यां वषट्। व्लैं अनामिकाभ्यां हुम्। व्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। व्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-व्लां हृदयाय नमः। व्लीं शिरसे स्वाहा। व्लूं शिखायै वषट्। व्लैं कवचाय हुम्। व्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। व्लः अस्त्राय फट्।

ध्यान-

मङ्गलांसु - त्रिनयनामुद्यदादित्य - सन्निभां, दर - स्मेर-मुखाम्भोजां सिन्दूर-सुन्दराधराम् ।
पद्म-द्वये धनुर्वाणान् दधतीं भुज-पल्लवैः, सु-गुञ्जन्मञ्जु-मञ्जीरां काञ्ची-गुण-विराजिताम् ।।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समपयामि नमः।

मन्त्र- व्लं भद्रिके मम भद्रं देहि पर-भद्राणि नाशय-नाशय स्वाहा (२३ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- बुध-माता 'भद्रिका' की प्रसन्नता अनन्त फल-दायनी है।

५. श्री गुरु-जननी धान्या-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। श्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। श्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। श्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-श्रां हृदयाय नमः। श्रीं शिरसे स्वाहा। श्रूं शिखायै वषट्। श्रैं कवचाय हुम्। श्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। श्रः अस्त्राय फट्।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- श्रीं धनदे धान्ये स्वाहा (८ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- गुरु-माता 'धान्या' से बढ़कर कोई देवता धन-दाता नहीं हैं। इनकी कृपा से साधक सब प्रकार से धन्य हो जाता है।

६. श्री शुक्र-जननी सिद्धा-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ह्रीं सिद्धिदे सर्वं मम साधय साधय नमः(१६ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- शुक्र-माता 'सिद्धा' की कृपा से सभी कामनाओं की सिद्धि होती है।

७. श्री शनि-जननी उल्का-अष्टाक्षर-मन्त्र-साधना

कर-न्यास-ऐं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ऐं ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम्। ऐं ह्रीं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ऐं ह्रीं करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास-ऐं ह्रीं हृदयाय नमः। ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा। ऐं ह्रीं शिखायै वषट्। ऐं ह्रीं कवचाय हुम्। ऐं ह्रीं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं अस्त्राय फट्।

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ऐं ह्रीं उल्का-देव्यै नमः (८ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- शनि-माता 'उल्का' की प्रसन्नता धन और आरोग्य प्रदान करती है।

८. श्री राहु-जननी सङ्कटा-षोडशाक्षर-मन्त्र-साधना

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ह्रीं सङ्कटे रोगं मे परमं नाशय नाशय (१६ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- राहु-माता 'सङ्कटा' की प्रसन्नता कारागार एवं रोगों से छुटकारा दिलाती है।

९. श्री केतु-जननी विकटा-एक-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना

मानस पूजा-लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ॐ नमः भगवति विकटे वीर-पालिके प्रसीद प्रसीद (२१ अक्षर)।

जप-'वर्ण-माला' में उक्त मन्त्र का 'जप' पीछे दी गयी विधि के अनुसार करे।

फल- केतु-माता 'विकटा' के प्रसन्न होने पर साधक के हाथ के स्पर्श से ग्रह-पीड़ित बालक, पिता-माता से त्यक्त पुत्र अपने कष्टों से छूट जाते हैं और चिर-जीवी होते हैं। बन्ध्या स्त्री का उदर छूने से वह पुत्रवती होती है।

★★★

नव-ग्रह-गायत्री-विधान

'मन्त्र-कोष' में नव-ग्रहों के मन्त्रों के सन्दर्भ में केवल श्रीसूर्य-गायत्री-(१) ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्, (२) ॐ सप्त-तुरङ्गाय विद्महे सहस्त्र-किरणाय धीमहि तन्नो रविः प्रचोदयात् तथा श्रीअङ्गारक (मङ्गल)-गायत्री-ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति-हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् का उल्लेख है। अन्य ग्रहों के गायत्री-मन्त्रों का उल्लेख नहीं है। यहाँ नव-ग्रहों के गायत्री मन्त्र दिए गए हैं। ये सभी 'गायत्री-मन्त्र' बहुत महत्त्व-पूर्ण हैं। मात्र इनका 'जप' कर प्रति-दिन अर्घ्य, तर्पण प्रदान करनेवाले व्यक्ति के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। 'विपरीत ग्रह' अनुकूल होते हैं एवं आयु-आरोग्य में वृद्धि होकर उसे ज्ञान, शक्ति और वैभव की प्राप्ति होती है।

'हिन्दी तन्त्रसार' के अनुसार प्रातः-काल जब आकाश में नक्षत्र हों, तब 'गायत्री-मन्त्र' का 'जप' करते हुए उदयोन्मुख सूर्य के समान वर्णवाली, कृष्ण-चर्म पहननेवाली ब्राह्मी शक्ति का ध्यान करना चाहिए।

मध्याह्न-काल में पुनः 'गायत्री-मन्त्र' का 'जप' करते हुए श्याम-वर्णा, चार हाथों में शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारण करनेवाली वैष्णवी-शक्ति का ध्यान करना चाहिए।

सायं-काल-'गायत्री-मन्त्र' का 'जप' करते हुए वर-दायिनी, शुक्ल-वर्णा, श्वेत-वस्त्रा, वृषारूढ़ा, त्रिनेत्रा, पाश, शूल, कपाल-धारिणी रुद्राणी देवी का ध्यान करना चाहिए।

ध्यान करने के बाद तीन बार अर्घ्य एवं तर्पण प्रदान करना चाहिए। अर्घ्य-'ह्रीं हसः इदमर्घ्यं सूर्याय (चन्द्राय, मङ्गलाय, बुधाय, वृहस्पतये, शुक्राय, शनैश्चराय, राहवे, केतवे) स्वाहा' कहकर प्रदान करना चाहिए। 'तर्पण'-'ॐ सूर्य-देवतां (चन्द्र-देवतां, बुध-देवतां, मङ्गल-देवतां, वृहस्पति-देवतां, शुक्र-देवतां, शनैश्चर-देवतां, राहु-देवतां, केतु-देवतां) तर्पयामि' कहकर प्रदान करना चाहिए।

नव-ग्रहों के गायत्री मन्त्र

श्रीसूर्य-गायत्री

ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ सप्त-तुरङ्गाय विद्महे सहस्त्र-किरणाय धीमहि तन्नो रविः प्रचोदयात्।

श्रीचन्द्र-गायत्री

ॐ क्षीर-पुत्राय विद्महे अमृत-तत्त्वाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्।

श्री अङ्गारक (मङ्गल)-गायत्री

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति-हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

श्रीबुध-गायत्री

ॐ सौम्य-रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।

श्रीवृहस्पति-गायत्री

ॐ अङ्गि-रसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

श्रीशुक्र-गायत्री

ॐ भृगु-वंश-जाताय विद्महे श्वेत-वाहनाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

श्रीशनि-गायत्री

ॐ भग-भवाय विद्महे मृत्यु-रूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।

श्रीराहु-गायत्री

ॐ शिरो-रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

श्राकेतु-गायत्री

ॐ पद्म-पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।

★★★

नव-ग्रह-प्रणाम-मन्त्र

ॐ नमस्सूर्याय चन्द्राय, मङ्गलाय बुधाय च ।
गुरुश्शुक्रश्शनिभ्यश्च, राहवे केतवे नमः।।

नव-ग्रह-साधना

(२)

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

'चण्डी'-पत्रिका में परम पूज्य श्रीस्वामी हिमालय अरण्य जी की कृपा से नव-ग्रहों का संक्षिप्त शान्ति-विधान क्रमशः प्रकाशित हुआ था। यह विधान यहाँ क्रम से एक साथ प्रस्तुत है। आशा है कि इच्छुक-बन्धु इससे लाभ उठाएँगे-सं०

१. सूर्य-शान्ति-विधान ५६
२. चन्द्र-शान्ति-विधान ५७
३. मङ्गल-शान्ति-विधान ५८
४. बुध-शान्ति-विधान ५९
५. बृहस्पति-शान्ति-विधान ६०
६. शुक्र-शान्ति-विधान ६१
७. शनि-शान्ति-विधान ६२
८. राहु-शान्ति-विधान ६३
९. केतु-शान्ति-विधान ६४

★★★

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

१. सूर्य-शान्ति-विधान

ध्यान : ॐ क्षत्रियं काश्यपं रक्तं, कालिङ्गं द्वादशांगुलम्।
पद्म-हस्त-द्वयं पूर्वाननं सप्ताश्व-वाहनम्।
शिवाधि-दैवतं सूर्यं, वह्नि-प्रत्यधि-दैवतम्।।

प्रणाम-मन्त्र : ॐ जवा-कुसुम-सङ्काशं, काश्यपेयं महा-द्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व-पापघ्नं, प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

मन्त्र : ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय (६)

जप-विधि : ऊर्ध्व-पाणि 'शैव-माला' में जप करे।

जपादि-संख्या : ६ हजार। होम ६००। तर्पण ६०। अभिषेक ६। ब्राह्मण-भोजन १।

बलि-द्रव्य : गुड़-मिश्रित तण्डुल।

पूजा-द्रव्य : रक्त-चन्दन, गुग्गुल-धूप, रक्त-पुष्प, माला, वस्त्र आदि।

होम : 'कपिल' नामक अग्नि में 'आक' की समिधा से।

दक्षिणा और दान : रक्त-वर्ण पट्ट-वस्त्र, प्रवाल, ताम्र और उपवीत।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

२. चन्द्र-शान्ति-विधान

ध्यानम् : ॐ सामुद्रं वैश्यमात्रेयं, हस्त - मात्रं सिताम्बरम्।
श्वेतं द्वि - बाहुं वरदं, दक्षिणं स गदेतरम्।।
दशाश्वं श्वेत - पद्मं विचिन्त्यमाधि - दैवतम्,
जल - प्रत्यधि - दैवं च सूर्यास्यमाहत् तथा।।

प्रणाम : ॐ दिव्य - शङ्ख - तुषाराभं, क्षीरोदार्णव-सम्भवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या, शम्भोर्मुकुट - भूषणम्।।

मन्त्र (षडक्षर) : ॐ ऐं क्लीं सोमाय

जप-विधि : अधः-पाणि 'शक्ति-माला' में जप करें।

जपादि-संख्या : १७०००, होम १७००, तर्पण १७०, अभिषेक १७, ब्राह्मण-भोजन २

बलि- द्रव्य : घृत-पायस।

पूजा-द्रव्य : शुक्ल पुष्प, वस्त्र, माल्य, आभरण, श्वेत चन्दन और सरल धूप।

होम : पिङ्गल नामक अग्नि, अधि-देवता उमा।

समिधा : पलाश।

प्रत्यधिदेवता : जल।

दक्षिणा और दान : शङ्ख, पट्ट वस्त्र, शुक्ल धेनु। क्षीर-पूरित शङ्ख और रजत-निर्मित चन्द्र।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

३. मङ्गल - शान्ति - विधान

ध्यान : ॐ आवस्त्यं क्षत्रियं रक्तं, मेषस्थं चतुरङ्गलम्।
आरक्तः माल्य-वसनं, भारद्वाजं चतुर्भुजम्।।
दक्षिणोर्ध्व - क्रमाच्छक्ति-वराभय-गदा-करम्।
आदित्याभि-मुखं देवं, तद्-वदेव समाह्वये।
स्कन्दाधि-दैवतं भौमं, क्षिति प्रत्यधि-दैवतम्।।

प्रणाम-मन्त्र : ॐ धरणी-गर्भ-सम्भूतं,विद्युत्-पुञ्ज-सम-प्रभम्।
कुमारं शक्ति-हस्तं च, लोहिताङ्गं नमाम्यहम्।।

मन्त्र : ॐ हूं श्रीं मङ्गलाय (७)

जप-विधि : ऊर्ध्व-पाणि 'शैव-माला' में जप करे।

जपादि-संख्या : ८०००, होम ८००, तर्पण ८०, अभिषेक ८, ब्राह्मण - भोजन १, भिक्षुक - भोजन १।

होम : 'धूम्र' नामक अग्नि में 'खदिर-काष्ठ' की समिधा से।

अधि-देवता : स्कन्द।

पूजा-द्रव्य : कुंकुम, चन्दन, रक्त-पुष्पादि, देवदारु धूप।

दक्षिणा और दान : रक्त-वर्ण-वस्त्र, प्रवाल, मसूर, ताम्र।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

४. बुध - शान्ति - विधान

ध्यान	:	ॐ मागधं द्वांगुलात्रेयं, वैश्यं पीतं चतुर्भुजम् । वामोर्ध्व - क्रमतश्चापं गदा - वर - विधिगवम् ॥ सूर्यास्यं सिंहगं सौम्यं, पीत - वस्त्रं तथाऽऽहवयेत् । नारायणाधि - दैवं च, विष्णु - प्रत्यधि - दैवतम् ॥
प्रणाम	:	ॐ प्रियङ्गु - कलिका श्यामं, रूपेणाप्रतिमं बुंधम् । सौम्यं सर्व - गुणोपेतं, नमामि शशिनः सुतम् ॥
मन्त्र	:	ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय ॥ ७॥
जप - विधि	:	शुद्ध - पाणि 'शैव - माला' में जप करें।
जपादि - संख्या	:	जप १७ हजार, होम १७००, तर्पण १६०, अभिषेक १७, शिशु - भोजन २ ।
पूजा - द्रव्य	:	पीत पुष्प, वस्त्र, माल्य, आभरण, सरस गन्ध, घृत-युक्त देवदारु धूप।
होम	:	जठर नामक अग्नि।
अधि - देवता	:	नारायण, प्रत्यधि - देवता : विष्णु ।
समिधा	:	अपामार्ग ।
दक्षिणा और दान	:	कुसुम - वासित वस्त्र, यज्ञ - सूत्र, चन्दन, सुवर्ण।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

५. बृहस्पति - शान्ति - विधान

ध्यान : ॐ द्विजमाङ्गिरसं पीतं, सैद्धवं च षडङ्गुलम्।
ध्यायेत् पीताम्बरं जीवं, सरोजस्थं चतुर्भुजम्।।
दक्षोर्द्वदक्षे वरदं, करकाङ्गदमाह्वयेत्।
ब्रह्माधि-दैवतं सूर्यास्यमिन्द्र - प्रत्यधि-दैवतम्।।

प्रणाम : ॐ देवानामृषीणां च, गुरुं कनक-सन्निभम्।
वन्द्य-भूत-त्रिलोकेशं, तं नमामि वृहस्पतिम्।।

मन्त्र : ॐ ह्रीं क्लीं हूं वृहस्पतये।।९ अक्षर।।

जप - विधि : शुद्ध - पाणि 'शैव-माला' (देव-कर-माला) में जप करें।

जपादि - संख्या : जप १९ हजार, होम १९००, तर्पण १९०, अभिषेक १९, शिशु-भोजन २, ज्योतिर्विद् भोजन १।

पूजा - द्रव्य : पीत - वर्ण पुष्प - वस्त्रादि। चन्दन, अगरु, कस्तूरी, कुंकुम एवं दशाङ्ग-धूप।

होम : 'शिखी' नाम अग्नि में।

अधि - देवता : ब्रह्मा।

प्रत्यधि - देवता : इन्द्र।

समिधा : अश्वत्थ-काष्ठ समिध।

दक्षिणा और दान : पीत - वस्त्र, यज्ञोपवीत, मुक्ता, काञ्चन, फल।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

६. शुक्र - शान्ति - विधान

ध्यान : ॐ शुक्रं भोज-कटं विप्रं, भार्गवं च नवांगुलम् ।
पद्मस्थमाह्वये सूर्य - मुखं श्वेतं चतुर्भुजम् ॥
गदाऽक्ष - वरं च कोदण्ड - हस्तं सितास्वरम् ।
शुक्राधि - दैवतं ध्यायेच्छमी प्रत्यधि - दैवतम् ॥

प्रणाम : ॐ हिम - कुन्द-मृणालाभं, दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व - शास्त्र प्रवक्तारं, भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

मन्त्र : ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय ॥ ६ अक्षर ॥

जप - विधि : शुद्ध - पाणि 'शैव - माला' में जप करें ।

जपादि - संख्या : जप २१, ०००, होम २१००, तर्पण २१०, अभिषेक २१, ब्राह्मण - भोजन १ ।

पूजा - द्रव्य : श्वेत पुष्पादि। श्वेत चन्दन । अगरु - धूप ।

होम : 'हारक' नामक अग्नि में ।

अधि - देवता : इन्द्र ।

प्रत्यधि - देवता : शची ।

समिधा : उदुम्बर (गूलर) की लकड़ी ।

दक्षिणा और दान : शुक्ल वस्त्र, स्वर्ण और मुक्ता ।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

७ शनि - शान्ति - विधान

ध्यान : ॐ सौराष्ट्रं काश्यपं शूद्रं, सूर्यास्यं चतुरङ्गुलम्।
कृष्णं कृष्णाम्बरं गृध्र-गतं सौरिं चतुर्भुजम्।।
तद् - वद् - ध्यान - धरं शूल - धनुर्हस्तं समाह्वयेत्।
समाधि - दैवतं प्रजा - पतिं प्रत्यधि - दैवतम्।।

प्रणाम : ॐ नीलाञ्जन - चय - प्रख्यं, रवि - सूनुं महा - ग्रहम।
छाया - गर्भ - सम्भूतं, वन्दे भक्त्या शनैश्चरम्।।

मन्त्र : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय।।९।।

जप - विधि : ऊर्ध्व - पाणि 'शैव - माला' में जप करें।

जपादि - संख्या : जप १०, ०००। होम १०००। तर्पण १००। अभिषेक १०। ब्राह्मण-भोजन१।

पूजा - द्रव्य : कस्तूरी - गन्ध, कालागरु धूप। रक्त - पुष्प और रक्त - वस्त्र आदि।

होम : 'महा - तेज' नामक अग्नि में।

अधि - देवता : यम।

प्रत्यधि - देवता : प्रजा - पति।

समिधा : शमी।

दक्षिणा और दान : कुष्ण - वर्णा गाय, कृष्ण - वर्ण कम्बल, शुद्ध लौह।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

८ राहु - शान्ति - विधान

ध्यान : ॐ राहु मलयजं शूद्रं, पैठिनं द्वादशाङ्गुलम् ।
कृष्णं कृष्णाम्बरं सिंहासनं धात्वा तथाह्वयेत् ।।
चतुर्बाहुं खड्ग - धरं, शूल-चर्म्म-करं तथा ।
कालाधि-दैवतं सूर्यास्यं, सर्प प्रत्यधि-दैवतम् ।।

प्रणाम : ॐ ऊर्ध्व-कायं महा-घोरं, चन्द्रादित्य-विमर्द्दनं।
सिंहिकायाः सुतं रौद्रं, तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।

मन्त्र : ॐ ऐं ह्रीं राहवे।।६ अक्षर।।

जप - विधि : ऊर्ध्व-पाणि शैव - माला में जप करे।

जपादि - संख्या : जप १२ हजार, होम १२००, तर्पण १२०, अभिषेक १२, ब्राह्मण-भोजन २, वृद्ध भोजन १।

पूजा - द्रव्य : कृष्ण - वस्त्र, पुष्पादि।

होम : 'महा - तेज' नामक अग्नि में।

अधि - देवता : काल।

प्रत्यधि - देवता : सर्प ।

समिधा : दूर्वा, पद्म-काष्ठ।

दक्षिणा और दान : लौह-खड्ग। पट्ट-वस्त्र। चार सेर तीन छटाँक लौह एवं चन्दन।

नव-ग्रह-शान्ति-विधान

पहले 'आत्म-शोधन' कर 'गुरुदेव' का ध्यान करे। फिर 'सङ्कल्प' कर गणेश आदि देवताओं का पूजन कर अपने 'इष्ट-देव' का पूजन-जप करे। तब 'ग्रह-शान्ति' हेतु निम्न प्रकार से ध्यान, जप, होम आदि करे—

९ केतु - शान्ति - विधान

ध्यान : ॐ कौशद्वीपं केतु - गणं, जैमिनीयं षडङ्गुलम्।
धूम्रं गृध्र - गतं शूद्रमाहवेत् विकृताननम्।।
सूर्यास्यं धूम्र - वसनं, वरदं गदिनं तथा।
चित्रगुप्ताधि - दैवं च, ब्रह्म प्रत्यधि -दैवतम्।।

प्रणाम : ॐ पलाल - धूम-सङ्काशं, तारा-ग्रह विमर्द्दनम्।
रौद्रं रुद्रात्मकं क्रूरं, तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

मन्त्र : ॐ ह्रीं ऐं केतवे।।६

जप - विधि : अधः - पाणि 'शैव - माला' में जप करे।

जपादि - संख्या : जप १२०००, होम १२००, तर्पण १२०, अभिषेक १२ ब्राह्मण - भोजन २, चाण्डाल - भोजन १।

होम : 'हुताशन' नामक अग्नि में।

अधि - देवता : चित्रगुप्त।

प्रत्यधि - देवता : ब्रह्मा।

समिधा : कुश, रक्त - चन्दन, श्वेत - चन्दन, कुंकुम, सरल काष्ठ, अगरु, पद्म - काष्ठ।

दक्षिणा और दान : छाग, कृष्ण - वर्ण वस्त्र, चन्दन, लौह।

नव-ग्रह-साधना

(३)

नव-ग्रह-शान्ति-प्रयोग

'चण्डी'-पत्रिका में 'कुल-वाणी-रत्न' श्री बलरामबली के द्वारा नव-ग्रहों के शान्ति-प्रयोग क्रमशः कई अङ्कों में प्रस्तुत हुए थे। ये सभी प्रयोग यहाँ एक साथ क्रम से प्रस्तुत हैं। आशा है कि इच्छुक बन्धुओं को इससे विशेष सुविधा होगी।-सं०

१. सूर्य-शान्ति ६६
२. चन्द्र-शान्ति ६७
३. मङ्गल-शान्ति ६८
४. बुध-शान्ति ६९
५. बृहस्पति-शान्ति ७०
६. शुक्र-शान्ति ७१
७. शनि-शान्ति ७२
८. राहु-शान्ति ७३
९. केतु-शान्ति ७४
१०. सर्व-ग्रह-पीड़ा-नाशक विधान ७४

★★★

नव - ग्रह - शान्ति - प्रयोग

[कोई ग्रह या तो उच्च का होकर अथवा नीच का होकर अथवा अकारक एवं बल-शाली ग्रह से ग्रसित होकर हानि करता है। ऐसी स्थिति में सबसे पहले यह ज्ञान होना चाहिए कि ग्रह किस प्रकार हानि पहुँचा रहा है। यदि कोई ग्रह अकारक हो, तो उसे न ग्रहण कर उसके बल को नष्ट करनेवाले मित्र ग्रह को शान्त करना हितकर होगा। इसी प्रकार यदि कोई ग्रह उच्च का होकर हानि कर रहा है, तो उसके बल को हीन कर देने से लाभ होगा। अतएव निवेदन है कि इन बातों का भली भाँति विचार करके आगे प्रकाशित प्रयोगों से लाभ उठाएँ। — लेखक]

(१) सूर्य - शान्ति

६	१	८
७	५	३
२	९	४

लक्षण — मस्तिष्क-रोग, हृदय-रोग, नेत्र-रोग, उच्च रक्त-चाप, पित्त-जनित रोग, मस्तिष्क-ज्वर, मिर्गी, ताप-लहरी (लू), सिर-दर्द, मस्तिष्क-सम्बन्धी विकृतियाँ।

उपचार — (१) उक्त **'सूर्य-यन्त्र'** को प्रातः-काल 'रविवार' या 'कृत्तिका' या 'उत्तरा फाल्गुनी' या 'उत्तराषाढ़ा' नक्षत्र में, अष्ट-गन्ध से भोज-पत्र पर अनार की कलम से लिखकर प्राण-प्रतिष्ठा एवं पूजन कर ताँबे की ताबीज में धारण करे।

(२) रविवार को बिल्व की जड़, लाल डोरे में सूर्य-मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बाँधने से भी सूर्य-बाधा की शान्ति होती है।

(३) निम्न-लिखित औषधियों के चूर्ण से स्नान करने पर भी सूर्य-बाधा की शान्ति होती है। यथा— कनेर, दुपहरिया, नागर-मोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुवा के फूल, सुगन्ध-बाला।

(४) गेहूँ, गुड़, घी, लाल-वस्त्र, सोना, ताँबा, बछड़े सहित गाय, माणिक्य, लाल-चन्दन के दान से सूर्य-बाधा की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर भगवान् सूर्य का ध्यान इस प्रकार करे —

पद्मासनः पद्म-करो द्वि-बाहुः, पद्म-द्युतिः सप्त-तुरङ्ग-वाहनः।
दिवाकरो लोक - गुरुः किरीटी, मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

मन्त्र — भगवान् सूर्य के निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का 'जप' करे —

१ ॐ घृणिः सूर्याय नमः। २ ॐ घृणिः सूर्य आदित्याय नमः। ३ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः। ४ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। ५ ॐ भास्कराय विद्महे महा-तेजाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्। (जप-संख्या २८ हजार, प्रत्येक)।

(२) चन्द्र-शान्ति

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

लक्षण — नेत्र-रोग, हिस्टीरिया, पागलपन, खाँसी-जुकाम, उदर-रोग, दमा, ब्रोंकाइटिस, गर्भाशय व प्रजनन अङ्गों के रोग, अतिसार, पेचिश।

उपचार — (१) उक्त **'चन्द्र-यन्त्र'** 'सोमवार' या 'रोहिणी' या 'हस्त' या 'श्रवण' नक्षत्र के दिन अष्ट-गन्ध से अनार की कलम से भोज-पत्र पर लिखकर चाँदी की ताबीज में प्राण-प्रतिष्ठा, पूजन कर धारण करे।

(२) क्षीरणी (खिरनी) की जड़ 'सोमवार' को सफेद डोरे में चन्द्र-मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बाँधने से चन्द्र-बाधा की शान्ति होती है।

(३) पञ्च-गव्य, चाँदी, मोती, शङ्ख, सीप और कुमुद को जल में डालकर स्नान करने से चन्द्र-बाधा की शान्ति होती है।

(४) बाँस के पत्र में भरा हुआ चाबल, कपूर, मोती, चाँदी, श्वेत वस्त्र, शङ्ख, दही, मिश्री, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय का घी, बछड़े सहित श्वेत गाय देने से चन्द्र-बाधा की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर चन्द्रमा का 'ध्यान' इस प्रकार करे—

श्वेताम्बरः श्वेत-विभूषणश्च, श्वेत-द्युतिर्दण्ड-धरो द्वि-बाहुः।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी, मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

मन्त्र — निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा —

१ ॐ सों सोमाय नमः।

२ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

३ ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।

४ ॐ क्षीर-पुत्राय विद्महे अमृत-तत्त्वाय धीमहि तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।

(जप-संख्या ४४ हजार, प्रत्येक)।

★ ★ ★

नव - ग्रह - शान्ति - प्रयोग

(३) मङ्गल - शान्ति

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

लक्षण — सभी प्रकार के तीव्र ज्वर, सूजन-सम्बन्धी शिकायतें, चेचक, छाले, घाव, बवासीर, भगन्दर, फोड़े-फुन्सी, गठिया, कण्ठ-माला, घेघा, गर्भपात।

उपचार— (१) उक्त **'मङ्गल - यन्त्र'** को **'मङ्गलवार'** या 'मृगशिरा' या 'चित्रा' या 'धनिष्ठा' नक्षत्र के दिन **'अष्ट-गन्ध'** से **'अनार की कलम'** से **'भोज-पत्र'** पर लिखकर **'ताम्बे'** की ताबीज में प्राण-प्रतिष्ठा कर, पूजन कर धारण करे।

(२) **नाग - जिह्वा** (अनन्त-मूल) की जड़ **'मङ्गलवार'** को लाल डोरे में मङ्गल - मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बाँधने से मङ्गल - बाधा की शान्ति होती है।

(३) सोंठ, सौंफ, लाल चन्दन, सिंगरफ, माल-काँगनी और मौलश्री के फूल को जल में डालकर स्नान करने से मङ्गल - बाधा की शान्ति होती है।

(४) मसूर की दाल, गेहूँ, गुड़, केसर, कस्तूरी, लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, मूँगा, सोना, ताम्बा, लाल बैल इत्यादि का 'दान' करने से मङ्गल - बाधा की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर मङ्गल का 'ध्यान' इस प्रकार करे —

रक्ताम्बरो रक्त-वपुः किरीटी, चतुर्भुजो मेष-गतो गदाभृत्।
धरा-सुतो शक्ति-धृतश्च शूली, सदायभष्मद्वरद प्रसन्नः।।

मन्त्र — निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा —

१ ॐ अं अङ्गारकाय नमः। २ ॐ हुं श्रीं मङ्गलाय नमः।

३ ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

४ ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति - हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

(जप - संख्या — ४० हजार, प्रत्येक)।

★ ★ ★

(४) बुध - शान्ति

लक्षण — हिस्टीरिया, पागलपन, मानसिक विकृतियाँ, कान के रोग, बहरापन, पक्षाघात, पेट का घाव (अलसर), स्मरण - शक्ति का ह्रास, अनिद्रा, हकलाना, सिर-दर्द, मूर्छावस्था के दौरे, फेफड़ों में कष्ट, हृदय - रोग।

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

उपचार — (१) उक्त **'बुध - यन्त्र'** को **'बुधवार'** या **'अश्लेषा'** या **'ज्येष्ठा'** या **'रेवती'** नक्षत्र के दिन **'अष्ट-गन्ध'** से **'अनार की कलम'** से **'भोज-पत्र'** पर लिखकर **'सोने'** की ताबीज में प्राण - प्रतिष्ठा कर, पूजन कर धारण करे।

(२) **वृद्ध-दारु** (विधारा) की जड़ 'बुधवार' को हरे रङ्ग के डोरे में लपेटकर उसे बुध - मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बाँधने से बुध-बाधा की शान्ति होती है।

(३) हरड़, बहेड़ा, गो - मय, अक्षत, गोरोचन, स्वर्ण, आँवला और मधु को जल में डालकर स्नान करने से बुध-बाधा की शान्ति होती है।

(४) मूँग, खाँड, हरा वस्त्र, पन्ना, स्वर्ण, फल, कपूर, घी का 'दान' करने से बुध-बाधा की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर 'बुध' का 'ध्यान' इस प्रकार करे —

पीताम्बरः पीत-वपुः किरीटी, चतुर्भुजो दण्ड - धरश्च हारी।
चर्मासि-धृक् सोम-सुतो गदा-भृत्, सिंहाधिरूढ़ो वरदो बुधश्च।।

मन्त्र — निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा —

१ ॐ बुं बुधाय नमः। २ ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः। ३ ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

४ ॐ सौम्य-रूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

(जप - संख्या — ३६ हजार, प्रत्येक)

★ ★ ★

नव - ग्रह - शान्ति - प्रयोग

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

(५) बृहस्पति - शान्ति

लक्षण — हृदय - रोग, यकृत - रोग, पीलिया, फेफड़े के रोग, टाइफाइड, अजीर्ण, मोतियाबिन्द, पेट के अल्सर, रक्त - कैंसर, रक्त - वाहिनी शिराओं में पीड़ा।

उपचार — (१) उक्त **'बृहस्पति - यन्त्र'** को **'बृहस्पतिवार'** या **'विशाखा'** या **'पूर्वा भाद्रपद'** नक्षत्र के दिन **'अष्ट - गन्ध'** से **'अनार की कलम'** से **'भोज - पत्र'** पर लिखकर **'सोने'** की ताबीज में प्राण - प्रतिष्ठा कर, पूजन कर धारण करे।

(२) केले की जड़ **'बृहस्पतिवार'** को पीले डोरे में **'बृहस्पति - मन्त्र'** से अभिमन्त्रित करके बाँधने से **'बृहस्पति - बाधा'** की शान्ति होती है।

(३) मदयन्ती के पत्ते, मुलैठी, सफेद सरसों और मालती के फूल को जल में डालकर स्नान करने से **'बृहस्पति - बाधा'** की शान्ति होती है।

(४) चने की दाल, हल्दी, शर्करा, पीला अन्न, पीला वस्त्र, पीले पुष्प, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, स्वर्ण, छत्र आदि का **'दान'** करने से **'बृहस्पति - बाधा'** की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर बृहस्पति का **'ध्यान'** इस प्रकार करे—

पीताम्बरः पीत - वर्ण; किरीटी, चतुर्भुजो देव - गुरुः प्रशान्तः।

तथाऽक्ष - सूत्रं च कमण्डलुञ्च, दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥

मन्त्र — निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा —

१ ॐ बृं बृहस्पतये नमः। २ ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

३ ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

४ ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

(जप-संख्या — ७६ हजार, प्रत्येक)

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

(६) शुक्र - शान्ति

लक्षण — त्वचा - रोग, त्वचा पर छाले, नीले - काले धब्बे, एग्जिमा, डिम्बाशय रोग, गुप्त रोग, मधुमेह, नेत्र - रोग, मोतियाबिन्द, रक्ताल्पता।

उपचार — (१) उक्त **'शुक्र - यन्त्र'** को **'शुक्रवार'** या **'भरणी'** या **'पूर्वा फाल्गुनी'** या **'पूर्वाषाढ़ा'** नक्षत्र के दिन **'अष्ट - गन्ध'** से **'अनार की कलम'** से **'भोज - पत्र'** पर लिखकर **'चाँदी'** की ताबीज में प्राण - प्रतिष्ठा कर, पूजन कर धारण करे।

(२) **'सिंह-पुच्छ'** अथवा **'सरपोंखा'** को हल्के पीले रङ्ग (क्रीम) के धागे में **'शुक्र - मन्त्र'** से अभिमन्त्रित करके बाँधने से **'शुक्र - बाधा'** की शान्ति होती है।

(३) मूल - सहित हरड़ - बहेड़ा - आँवला, इलायची, केशर और मैनसिल को जल में डालकर स्नान करने से **'शुक्र - बाधा'** की शान्ति होती है।

(४) चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, दही, सुगन्धित वस्तुएँ, हीरा, श्वेत गाय, श्वेत घोड़ा आदि का **'दान'** करने से **'शुक्र - बाधा'** की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर शुक्र का **'ध्यान'** इस प्रकार करे—

श्वेताम्बरः श्वेत-वपुः किरीटी, चतुर्भुजो दैत्य - गुरुः प्रशान्तः।

तथाऽक्ष - सूत्रञ्च कमण्डलुञ्च, दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥

मन्त्र — निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा —

१ ॐ शुं शुक्राय नमः। २ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः। ३ ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। ४ ॐ भृगु - वंश - जाताय विद्महे श्वेत - वाहनाय धीमहि तन्नो कविः प्रचोदयात्। (जप - संख्या — ६४ हजार, प्रत्येक)

★ ★ ★

नव-ग्रह-शान्ति-प्रयोग

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

(७) शनि - शान्ति - विधान

लक्षण— बहरापन, दाँत का दर्द, पायरिया, हृदय-पीड़ा, उदर के रोग, कब्ज, गठिया, कैंसर, पक्षाघात, गैस्ट्रिक अल्सर, दुर्घटना, पागलपन, हिस्टीरिया, मूत्र-रोग।

उपचार— (१) उक्त **'शनि-यन्त्र'** को 'शनिवार', 'पुष्य' या 'अनुराधा' या 'उत्तरा-भाद्रपद' नक्षत्र के दिन 'अष्ट-गन्ध' से 'अनार की कलम' से 'भोज-पत्र' पर लिखकर 'लोहे' की ताबीज में प्राण-प्रतिष्ठा कर, पूजन कर धारण करे।

(२) बिच्छू (बिछवाती) की जड़ शनिवार के दिन काले डोरे में **'शनि-मन्त्र'** से अभिमन्त्रित करके बाँधने से **'शनि-बाधा'** की शान्ति होती है।

(३) काले तिल, सुरमा, सौंफ, नागरमोथा, लोध को जल में डालकर स्नान करने से **'शनि-बाधा'** की शान्ति होती है।

(४) काला उर्द, तेल, कुलथी, लोहा, काला वस्त्र, भैंस, कस्तूरी, जूता, नीलम आदि का 'दान' देने से **'शनि-बाधा'** की शान्ति होती है।

ध्यान— नित्य हाथ जोड़कर **'शनि'** का ध्यान इस प्रकार करे—

नीलाम्बरः शूल-धरः किरीटी, गृध्र-स्थितस्त्रास - करो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्य-सुतः प्रशान्तः, सदाऽस्तु मह्यम् वरदोऽल्प-गामी।।

मन्त्र— निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा—

१ ॐ शं शनैश्चराय नमः।

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

३ ॐ खां खीं खौं सः शनये नमः।

४ ॐ कृष्णाङ्गाय विद्महे रवि-पुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

(जप-संख्या — ६२ हजार, प्रत्येक)

★ ★ ★

१३	८	१५
१४	१२	१०
६	१६	११

(८) राहु-शान्ति-विधान

लक्षण— मिर्गी, अनिद्रा, पागलपन, मृत्यु-भय, आत्म-हत्या करने की इच्छा, दाँतों का बेडौल होना।

उपचार— (१) उक्त **'राहु-यन्त्र'** को 'आर्द्रा' या 'स्वाती' या 'शतभिषा नक्षत्र' के दिन 'अष्ट-गन्ध' से 'अनार की कलम' से 'भोज-पत्र' पर लिखकर धारण करे।

(२) श्वेत चन्दन की जड़ को जिस राशि में **'राहु'** बैठा हो, उस राशि के स्वामी के दिन नीले रङ्ग के डोरे में **'राहु'** के मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बाँधने से **'राहु-बाधा'** की शान्ति होती है।

(३) नाग-बेल, लोबान, तिल के पत्र, गडूची और तगर के चूर्ण को जल में डालकर स्नान करने से **'राहु-बाधा'** की शान्ति होती है।

(४) काला तिल, सरसों, तेल, नीला कपड़ा, सप्त-धान्य, कम्बल, सूप, गोमेद, लौह, अभ्रक आदि का 'दान' देने से **'राहु-बाधा'** की शान्ति होती है।

ध्यान— नित्य हाथ जोड़कर **'राहु'** का ध्यान इस प्रकार करे—

नीलाम्बरो लीन-वपुः किरीटी, कराल-वक्त्रः करवाल-शूली।
चतुर्भुजश्चक्र-धरश्च राहुः, सिंहाधिरूढ़ो वरदोऽस्तु मह्यम्॥

मन्त्र— निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा—

१ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः। २ ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

३ ॐ नील-वर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

(जप-संख्या - ७२ हजार, प्रत्येक)

★ ★ ★

नव-ग्रह-शान्ति-प्रयोग

(९) केतु-शान्ति-विधान

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

लक्षण — पैरों का काम न करना अथवा पैरों की बीमारी, चोट-चपेट लगना, लकवा मार जाना, बादी या खूनी बवासीर, पेट में घाव आदि।

उपचार — (१) उक्त **'केतु-यन्त्र'** को **'अश्विनी'**, **'मघा'** या **'मूल नक्षत्र'** में **'अष्ट-गन्ध'** से **'अनार की कलम'** से **'भोज-पत्र'** पर लिखकर ताबीज में प्राण-प्रतिष्ठा कर, पूजन कर धारण करे।

(२) असगन्ध की जड़ को राशि-स्वामी के दिन आसमानी रङ्ग के डोरे में **'केतु-मन्त्र'** से अभिमन्त्रित करके बाँधने से **'केतु-बाधा'** की शान्ति होती है।

(३) सहदेई, लज्जालु, बला, नागरमोथा, प्रियंगु, हिंगोठ को जल में डालकर स्नान करने से **'केतु-बाधा'** की शान्ति होती है।

(४) तिल, तेल, कम्बल, धूमिल रङ्ग का कपड़ा। सप्त धान्य, नारियल, उड़द, सोना, लोहा, बकरा, शस्त्र, लहसुनिया आदि का **'दान'** करने से **'केतु-बाधा'** की शान्ति होती है।

ध्यान — नित्य हाथ जोड़कर **'केतु'** का ध्यान इस प्रकार करे —

धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदा - धरो, गृध्रासनस्थो विकृतिनानश्च।
किरीट-केयूर-विभूषितो यः, सदाऽस्तु मे केतु-गणः प्रशान्तः।।

मन्त्र — निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य **'जप'** करे। यथा —

१ ॐ कें केतवे नमः। २ ॐ ह्रीं केतवे नमः। ३ ॐ प्रा० प्री० प्रौ० सः केतवे नमः

४ ॐ धूम्राय विद्महे कपोत-वाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्। (जप-संख्या : ७२ हजार-प्रत्येक)

(१०) सर्व-ग्रह-पीड़ा-नाशक विधान

(१) पहले किसी शुभ दिन या पर्व पर निम्न-लिखित मन्त्र का दस हजार (१०,०००) बार **'जप'** करे। इससे **'मन्त्र'** सिद्ध हो जाएगा। **'मन्त्र'** इस प्रकार है—

ॐ नमो भास्कराय अस्माकं सर्व-ग्रहाणां पीड़ा-नाशं कुरु-कुरु स्वाहा।

(२) फिर १ आक की जड़, २ धतूरे की जड़, ३ अपामार्ग की जड़, ४ दूब, ५ बरगद की जड़, ६ पीपल, ७ मूँग, ८ गेहूँ, ९ तिल, १० मधु (शहद) और ११ मट्ठा (दही) को 'शनिवार' के दिन सन्ध्या-समय एक हाँडी में भरकर, पीपल के वृक्ष की जड़ में गाड़ दे।

प्रत्येक वस्तु को हाँडी में भरने से पूर्व उक्त मन्त्र का १०८ बार **'जप'** कर अभिमन्त्रित करना चाहिए। इससे सभी प्रकार की ग्रह-पीड़ा, उपद्रव , दारिद्र्य का नाश होता है।

(३) लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां- कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी तथा लोध को जल में मिलाकर स्नान करने से **सभी ग्रहों की शान्ति** होती है।

नव-ग्रह-साधना

(४)

नव-ग्रह-स्तोत्र-संग्रह

'चण्डी'-पत्रिका में 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भैरवानन्दनाथ द्वारा संग्रहीत 'नव-ग्रह-स्तोत्र' भी क्रमशः प्रकाशित हुए थे। ये सभी स्तोत्र यहाँ क्रम से प्रस्तुत हैं।-सं०

१. श्रीत्रैलोक्य-मङ्गल-सूर्य-कवचम् ७६
२. आदित्याष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम् ७७
३. श्रीचन्द्र-कवचम् ७८
४. श्रीचन्द्राष्ट-विंशति-नाम-स्तोत्रम् ७८
५. श्रीअङ्गारक (मङ्गल, भौम) कवचम् ७९
६. श्रीअङ्गारक-स्तोत्रम् ७९
७. ऋण-मोचक-श्रीमङ्गल-स्तोत्रम् ८०
८. श्रीबुध-कवचम् ८१
९. श्रीबुध-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम् ८१
१०. श्रीबृहस्पति-कवचम् ८२
११. श्रीबृहस्पति-स्तोत्रम् ८३
१२. श्रीशुक्र-कवचम् ८३
१३. श्रीशुक्र-स्तव-राज-स्तोत्रम् ८४
१४. श्रीशुक्र-स्तोत्रम् ८५
१५. श्रीशनि-नाम-स्तुतिम् ८५
१६. श्रीशनि-वज्र-पञ्जर-कवचम् ८६
१७. श्रीशनि-रक्षा-स्तवम् ८६
१८. श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नाम ८७
१९. श्रीराहु-कवचम् ८८
२०. श्रीराहु-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम् ८९
२१. श्रीकेतु-कवचम् ८९
२२. श्रीकेतु-विंशति-नाम-स्तोत्रम् ९०
२३. श्रीनव-ग्रह-पीडा-हर-स्तोत्रम् ९०

नव-ग्रह-स्तोत्र-सङ्ग्रह

१. श्रीत्रैलोक्य-मङ्गल-सूर्य-कवचम्

।। पूर्व-पीठिका : श्रीसूर्योवाच ।।

साम्ब-साम्ब महा-बाहो! शृणु मे कवचं शुभम्। त्रैलोक्य-मङ्गलं नाम, कवचं परमाद्भुतम्।।
यद् ज्ञात्वा मन्त्र-वित् सम्यक्, फलं प्राप्नोति निश्चितम्। यद् धृत्वा च महा-देवो, गणानामधिपोऽभवत्।।
पठनाद्धारणाद्विष्णुः, सर्वेषां पालकः सदा। एवमिन्द्रादयः सर्वे, सर्वैश्वर्यमवाप्नुवन्।।

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीसूर्य-कवचस्य ब्रह्मा-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,सर्व-देव-नमस्कृत-श्रीसूर्योदेवता, यशारोग्य-मोक्षेषु पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यासः– शिरसि श्रीब्रह्मार्षये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीसूर्य-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे यशारोग्य-मोक्षेषु पाठे विनियोगाय नमः।।

।। मूल कवच-पाठ ।।

प्रणवो मे शिरः पातु, घृणिर्मे पातु भालकम्। सूर्योऽव्यान्नयनद्वन्द्वं, आदित्यः कर्ण-युग्मकम्।।
अष्टाक्षरो महा-मन्त्रः, सर्वाभीष्ट-फल-प्रदः। ह्रीं बीजं मे मुखं पातु, हृदयं मे भुवेश्वरो।।
चन्द्र-विम्बं विंशदाद्यः, पातु मे गुह्य-देशकम्। अक्षरोऽसौ महा-मन्त्रः, सर्व-तन्त्रेषु गोपितः।।
शिवो वह्नि-समायुक्तो, वामाक्षी-बिन्दु-भूषितः। एकाक्षरो महा-मन्त्रः, श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः।।
गुह्याद्गुह्यतरो मन्त्रो, वाञ्छा-चिन्तामणिः स्मृतः। शीर्षादि-पाद-पर्यन्तं, सदा पातु मनूत्तमः।।

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं दिव्यं, त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। श्री-प्रदं कान्तिदं नित्यं, धनारोग्य-विवर्द्धनम्।।
कुष्ठादि-रोग-शमनं, महा-व्याधि-विनाशनम्। त्रि-सन्ध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान् भवेत्।।
बहुना किमिहोक्तेन, यद्यन्मनसि वर्तते। तत्सर्वं भवेत्तस्य, कवचस्य च धारणात्।।
भूत-प्रेत-पिशाचाश्च, यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः। ब्रह्म-राक्षस-वेतालाःष्ठ न दृष्टमपि ते क्षमाः।।
दूरादेव पलायन्ते, तस्य सङ्कीर्तनादपि। भूर्ज-पत्रे समालिख्य, रोचनाडगुरुकुङ्कुमैः।।
रविवारे च सङ्क्रान्त्यां, सप्तम्यां च विशेषतः। धारयेत् साधक-श्रेष्ठः, श्रीसूर्यस्य प्रियो भवेत्।।
त्रिलौह-मध्यगं कृत्वा, धारयेद्दक्षिणे करे। शिखायामथवा कण्ठे, सोऽपि सूर्यो न संशयः।।
इति ते कथितं साम्ब, त्रैलोक्य-मङ्गलाभिधम्। कवचं दुर्लभं लोके, तव स्नेहात् प्रकाशितम्।।
अज्ञात्वा कवचं दिव्यं, यो जपेच्छूर्य-मन्त्रकम्। सिद्धिर्न जायते तस्य, कल्प-कोटि-शतैरपि।।

।। श्रीब्रह्म-यामले तन्त्रे श्रीत्रैलोक्य-मङ्गलं नाम सूर्य-कवचम् ।।

२.आदित्याष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

।। पूर्व-पीठिका ।।

नव-ग्रहाणां सर्वेषां, सूर्यादीनां पृथक्-पृथक्। पीडा च दुस्सहा राजन्! जायते सततं नृणाम्।।
पीडा-नाशाय राजेन्द्र, नामानिशृणु भास्वतः। सूर्यादीनां च सर्वेषां, पीडा नश्यन्ति शृण्वतः।।

विनियोगः– ॐ अस्य श्रीआदित्याष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रस्य आङ्गिरस ऋषिः, त्रिष्टुप्-छन्दः, श्री आदित्य देवता, सर्व-ग्रह-पीडा-नाशार्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यासः– शिरसि आङ्गिरस-ऋषये नमः। मुखे त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्री आदित्यदेवतायै नमः। सर्वाङ्गे सर्व-ग्रह-पीडा-नाशार्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

।। नामावलि ।।

आदित्यः सविता सूर्यः, पूषार्कः शीघ्रगो रविः। भगः त्वष्टार्यमा हंसो, हेलिस्तेजो-निधिर्हरिः।।
दिन-नाथो दिन-करः, सप्त-रश्मिः प्रभाकरः। विभावसुर्वेद-कर्त्ता, वेदाङ्गो वेद-वाहनः।।
हरिदश्वः काल-वक्त्रः, कर्म-साक्षी जगत्पतिः। पद्मिनी-बोधको भानुर्भास्करः करुणाकरः।।
द्वादशात्मा विश्व-कर्मा, लोहिताङ्गस्तमोनुदः। जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः, कालात्मा कश्यपात्मजः।।
भूताश्रयो ग्रह-पतिः, सर्व-लोक-नमस्कृतः। जपा-कुसुम-सङ्काशो, भास्वान-दिति-नन्दनः।।
ध्वान्तेभ-सिंहः सर्वात्मा, लोक-नेत्रो विकर्तनः। मार्तण्डो मिहिरः सूर्यस्तपनो लोक-तापनः।।
जगत्-कर्त्ता जगत्-साक्षी, शनैश्चर-पिता जयः। सहस्त्र-रश्मिस्तरणिर्भगवान् भक्तवत्सलः।।
विवस्वानादि-देवश्च, देव-देवो दिवाकरः। धन्वन्तरिर्व्याधि-हर्ता, दद्रु-कुष्ठ-विनाशकः।।
चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः। लोक-शोकापहर्ता च, कमलाकर आत्मभूः।।
नारायणो महा-देवो, रुद्रः पुरुषः ईश्वरः। जीवात्मा परमात्मा च, सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः।।
इन्द्रोऽनलो यमश्चैव, नैर्ऋतो वरुणोऽनिलः। श्रीदः ईशानः इन्दुश्च, भौमः सौम्यो गुरुः कविः।।
शौरिर्विधुन्तुदः केतुः, कालः कालात्मको विभुः। सर्व-देव-मयो देवः कृष्णः काम-प्रदायकः।।

।। फल-श्रुतिः ।।

य एतैर्नामभिर्मर्त्यो, भक्त्या स्तौति दिवाकरम्। सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्व-रोग-विवर्जितः।।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान्, जायते स न संशयः। रविवारे प्रपठेद्यस्तु, नामान्येतानि भास्वतः।।
पीडा-शान्तिर्भवेत्-तस्य, ग्रहाणां च विशेषतः। सद्यः सुखमवाप्नोति, चायुर्दीर्घं च नीरुजम्।।

३. श्रीचन्द्र-कवचम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीचन्द्र-कवचस्य गौतम ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, श्रीचन्द्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि गौतम-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीचन्द्र- देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीचन्द्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

ध्यान— **समं चतुर्भुजं वन्दे, केयूर-मुकुटोज्ज्वलम्।**
वासुदेवस्य नयनं, शङ्करस्य च भूषणम्।।

।।मूल कवच-पाठ।।

शशी पातु शिरो-देशं, भालं पातु कला-निधिः। चक्षुषी चन्द्रमा पातु, श्रुती पातु निशा-पतिः।।
प्राणं क्षपाकरः पातु, मुखं कुमुद - बान्धवः। पातु कण्ठं च मे सोमः, स्कन्धौ जैवातृकस्तथा।।
करौ सुधाकरः पातु, वक्षः पातु निशाकरः। हृदयं पातु मे चन्द्रो, नाभिं शङ्कर - भूषणः।।
मध्यं पातु सुर - श्रेष्ठः, कटिं पातु मधुकरः। ऊरू तारा-पतिः पातु, मृगाङ्को जानुनी सदा।।
अब्धिजः पातु मे जङ्घे, पातु पादौ विधुः सदा। सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि, पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः।।
एतद्धि कवचं दिव्यं, भुक्ति-मुक्ति-प्रदायकम्। यः पठेच्छृणुयाद् वापि, सर्वत्र विजयी भवेत्।।

।।श्रीब्रह्म-यामले तन्त्रे श्रीचन्द्र-कवचम्।।

४. श्रीचन्द्राष्ट-विंशति-नाम-स्तोत्रम्

चन्द्रस्य शृणु नामानि, शुभदानि मही-पते! यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः।।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीचन्द्राष्ट-विंशति-नाम-स्तोत्रस्य गौतम ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, श्रीचन्द्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि श्रीगौतम-ऋषये नमः। मुखे विराट्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीचन्द्रो-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीचन्द्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

।।नामावलि।।

सुधाकरश्च सोमश्च, ग्लौरब्जः कुमुद-प्रियः। लोक-प्रियः शुभ्र-भानुश्चन्द्रमा रोहिणी - पतिः।।
शशी हिम-करो राजा, द्विज-राजो निशाकरः। आत्रेयः इन्दुः शीतांशुरौषधीशः कला-निधिः।।
जैवातृको रमा - भ्राता, क्षीरोदार्णव - सम्भवः। नक्षत्र - नायकः शम्भु-शिरश्चूडामणिर्विभुः।।
ताप-हर्ता नभो-दीपो, नामान्येतानि यः पठेत्। प्रत्यहं भक्ति - संयुक्तस्तस्य पीड़ा विनश्यति।।
तद्दिने च पठेद्यस्तु, लभेत् सर्वं समीहितम्। ग्रहादीनां च सर्वेषां, भवेच्चन्द्र - बलं सदा।।

।।श्रीब्रह्म-यामले चन्द्राष्ट-विंशति-नाम-स्तोत्रम्।।

५- श्री अङ्गारक (मङ्गल, भौम) कवचम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीमङ्गल-कवचस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-अङ्गारको देवता, भौम-पीड़ा-परिहारार्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि कश्यप-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्री-अङ्गारको-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे भौम-पीड़ा-परिहारार्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

ध्यान— **रक्ताम्बरो रक्त-वपुः किरीटी, चतुर्भुजो मेष - गमो गदा - भृत्।**
धरा-सुतः शक्ति-धरश्च शूली, सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः।।

।।मूल कवच-पाठ।।

अङ्गारकः शिरो रक्षेन्मुखं मे धरणी - सुतः। श्रुतौ रक्ताम्बरः पातु, नेत्रौ मे रक्त - लोचनः।।१
नासां शक्ति-धरः पातु, गण्डौ मे रक्त-वदनः। भुजौ मे रक्त-माली च, हस्तौ शक्ति-धरस्तथा।।२
वक्षः पातु वराङ्गश्च, हृदयं पातु लोहितः। कटिं मे ग्रह - राजश्च, मुखं चैव धरा - सुतः।।३
जानु-जङ्घे कुजः पातु, पादौ भक्त-प्रियः सदा। सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि, रक्षेन् मे मेष-वाहनः।।४

।।फल-श्रुति।।

इतीदं कवचं दिव्यं, सर्व-शत्रु-निवारकम्। भूत-प्रेत-पिशाचानां, नाशकं सर्व-सिद्धिदम्।।१
सर्व-रोग-हरं चैव, सर्व-सम्पत्-प्रदं शुभम्। भुक्ति-मुक्ति-प्रदं नृणां, सर्व-सौभाग्य-वर्द्धकम्।।
रोग-बन्ध-विमोक्षश्च, सत्यमेतन्न संशयः।।२

।।श्रीमार्कण्डेय-पुराणे श्रीअङ्गारक-कवचम् सम्पूर्णम्।।

* * *

६- श्रीअङ्गारक-स्तोत्रम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीअङ्गारक-स्तोत्रस्य विरूपाङ्गिरसः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीअङ्गारको देवता, श्रीअङ्गारक-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि विरूपाङ्गिरस-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीअङ्गारक-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीअङ्गारक-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

।।मूल-स्तोत्र।।

अङ्गारकः शक्ति-धरो, लोहिताङ्गो धरा - सुतः। कुमारो मङ्गलो भौमो, महा-कायो धन-प्रदः।।१

ऋण-हर्ता दृष्टि-कर्ता, रोग-कृत् रोग-नाशनः। विद्युत्-प्रभो व्रण-करः, कामदो धन-हृत् कुजः॥२
साम-गान-प्रियो रक्त-वस्त्रो रक्तायतेक्षणः। लोहितो रक्त-वर्णश्च, सर्व-कर्मावबोधकः।
रक्त-माल्य-धरो हेम-कुण्डली ग्रह-नायकः॥३

॥फल-श्रुति॥

नामान्येतानि भौमस्य, यः पठेत् सततं नरः। ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं, दारिद्रं च विनश्यति॥१
धनं प्राप्नोति विपुलं, स्त्रियं चैव मनोरमाम्। वंशोद्योत - करं पुत्रं, लभते नात्र संशयः॥२
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य, मङ्गलं बहु-पुष्पकैः। सर्वाः नश्यन्ति पीड़ाश्च, तस्य ग्रह-कृता ध्रुवम्॥३

॥श्रीस्कन्द-पुराणे श्रीअङ्गारक-स्तोत्रम्॥

* * *

७- ऋण-मोचक-श्रीमङ्गल-स्तोत्रम्

॥स्तोत्र॥

मङ्गलो भूमि - पुत्रश्च, ऋण - हर्ता धन - प्रदः। स्थिरासनो महा-कायः, सर्व-कर्मावरोधकः॥१
लोहितो लोहिताक्षश्च, साम-गानां कृपा-करः। धरात्मजः कुजो भौमो, भूतिदो भूमि-नन्दनः॥२
अङ्गारको यमश्चैव, सर्व-रोगापहारकः। वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च, सर्व - काम - फल - प्रदः॥३
एतानि कुज-नामानि, नित्यं यः श्रद्धया पठेत्। ऋणं न जायते तस्य, धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥४
धरणी - गर्भ - सम्भूतं, विद्युत्-कान्ति-सम-प्रभम्। कुमारं शक्ति-हस्तं तं, मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥५
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्, पठनीयं सदा नृभिः। न तेषां भौमजा-पीड़ा, स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्॥६
अङ्गारक महा - भाग, भगवन् भक्त - वत्सल! त्वां नमामि ममाशेषं, ऋणमाशु विनाशय॥७
ऋण - रोगादि - दारिद्र्यं, ये चान्ये ह्यप-मृत्यवः। भय-क्लेश-मनस्तापा, नश्यन्तु मम सर्वदा॥८
अति - वक्र दुराराध्य! भोग - मुक्त-जितात्मनः। तुष्टो ददासि साम्राज्यं, रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥९
विरिञ्चि-शक्र-विष्णूनां, मनुष्याणां तु का कथा? तेन त्वं सर्व-सत्त्वेन, ग्रह-राजो महा-बलः॥१०
पुत्रान् देहि धनं देहि, त्वामस्मि शरणं गतः। ऋण - दारिद्र्य-दुःखेन, शत्रूणां च भयात् तः॥११
रक्षति सर्वदा यस्तु, तं मङ्गलं प्रणमामि। प्रणमामि धरा-पुत्रं, भूतिदं प्रणमाम्यहम्॥१२

॥फल-श्रुति॥

एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरा - सुतम्। महतीं श्रियमाप्नोति, ह्यपरो धनदो युवा॥१

॥श्रीस्कन्द - पुराणे ऋण-मोचकं मङ्गल-स्तोत्रं॥

* * *

८. श्रीबुध-कवचम्

विनियोग — ॐ अस्य श्रीबुध-कवचस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबुधः देवता, बुध-पीड़ा-शमनार्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास — शिरसि कश्यप-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीबुध-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे बुध-पीड़ा-शमनार्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

ध्यान— बुधस्तु पुस्तक-धरः, कुंकुमस्य सम-द्युतिः। पीताम्बर-धरः पातु, पीत-माल्यानुलेपनः।।

।। मूल-कवच-पाठ ।।

शिखां च मे पातु सौम्यः, शिरो-देशं बुधस्तथा। नेत्रे ज्ञान-मयः पातु, श्रोत्रे पातु निशा-प्रियः।।१
घ्राणं गन्ध-प्रियः पातु, जिह्वां विद्या-प्रदो मम। कण्ठं पातु विधोः पुत्रो, भुजौ पुस्तक-भूषणः।।२
वक्षः पातु वराङ्गश्च, हृदयं रोहिणी - सुतः। नाभिं पातु सुराराध्यो, मध्यं पातु खगेश्वरः।।३
जानुनी रोहिणेयश्च, पातु जङ्घेऽखिल-प्रदः। पादौ मे बोधनः पातु, पातु सौम्योऽखिलं वपुः।।४

।। फल-श्रुति ।।

एतद्धि कवचं दिव्यं, सर्व-पाप-प्रणाशनं। सर्व-रोग-प्रशमनं, सर्व-दुःख-निवारणम्।।१
आयुरारोग्य-धनदं, पुत्र-पौत्र-प्रवर्द्धनम्। यः पठेच्छृणुयाद् वापि, सर्वत्र विजयी भवेत्।।२

।। श्रीब्रह्म-वैवर्तक-पुराणे श्रीबुध-कवचम् ।।

९. श्रीबुध-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम्

विनियोग — ॐ अस्य श्रीबुध-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रस्य प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबुधः देवता, बुध-पीड़ा-शमनार्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास — शिरसि प्रजापति-ऋषये नमः। मुखे त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीबुध-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे बुध-पीड़ा-शमनार्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

।। नामावलि ।।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो, बुद्धि-दाता धन-प्रदः। प्रियंगु-कलिका-श्यामः, कञ्ज-नेत्रो मनोहरः।।१
ग्रहोपमो रोहिणेयो, नक्षत्रेशो दयाकरः। विरुद्ध - कार्य - हन्ता च, सौम्यो बुद्धि-विवर्द्धनः।।२
चन्द्रात्मजो विष्णु-रूपी, ज्ञानी ज्ञो ज्ञानि - नायकः। ग्रह-पीड़ा-हरो दार-पुत्र-धान्य-पशु-प्रदः।।
लोक-प्रियः सौम्य-मूर्तिः गुणदो गुणि-वत्सलः।।३

।। फल-श्रुति ।।

पञ्च-विंशति-नामानि, बुधस्यैतानि यः पठेत्। स्मृत्वा बुधं सदा तस्य, पीड़ाः सर्वा विनश्यति।।
तद्-दिने वा पठेद् यस्तु, लभते स मनोगतम्।।१

।।श्रीपद्म-पुराणे श्रीबुध-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम्।।

१०- श्रीवृहस्पति-कवचम्

❖ 'कुल-वाणी-रत्न' श्रीभैरवानन्दनाथ, सागर (मध्य प्रदेश)

विनियोग— ॐ अस्य श्रीवृहस्पति-कवचस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, देव-गुरु श्रीवृहस्पतिः देवता, गँ बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, वृहस्पति-पीड़ा-शमनार्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि ईश्वर-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः। हृदि श्रीवृहस्पति-देवतायै नमः। गुह्ये गँ-बीजाय नमः। पादयोः श्रीं शक्तये नमः। नाभौ क्लीं कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे वृहस्पति-पीड़ा-शमनार्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

अङ्ग-न्यास	कर-न्यास	षडङ्ग-न्यास
गाँ	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
गीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
गूँ	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।
गैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्।
गः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।।

।।ध्यान।।

अभीष्ट - फलदं देवं, सर्वज्ञं सुर-पूजितम्।
अक्ष-माला-धरं शान्तं, प्रणमामि वृहस्पतिम्।।

।।कवच-पाठ।।

वृहस्पतिः शिरः पातु, ललाटं पातु मे गुरुः।
कर्णौ सुर - गुरुः पातु, नेत्रे मेऽभीष्ट-दायकः।।
जिह्वां पातु सुराचार्यो, नासां मे वेद-पारगः।
मुखं मे पात सर्वज्ञो, कण्ठं मे देवता - गुरुः।।
भुजावाङ्गिरसः पातु, करौ पातु शुभ-प्रदः।
स्तनौ मे पातु वागीशः, कुक्षिं मे शुभ-लक्षणः।।
नाभिं देव-गुरुः पातु, मध्यं पातु सुख-प्रदः।
कटिं पातु जगद्-वन्द्यः, ऊरू मे पातु वाक्-पतिः।।
जानु-जङ्घे सुराचार्यो, पादौ विश्वात्मकस्तथा।
अन्यानि यानि चाङ्गानि, रक्षेन् मे सर्वतोगुरुः।।

।।फल-श्रुति।।

इत्येतत् कवचं दिव्यं, त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वान् कामानवाप्नोति, सर्वत्र विजयी भवेत्।।
।।श्रीब्रह्म-यामले वृहस्पति-कवचम्।।

११. श्रीवृहस्पति-स्तोत्रम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीवृहस्पति-स्तोत्रस्य गृत्समद-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीवृहस्पतिः देवता, श्रीवृहस्पति-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ॥

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि गृत्समद-ऋषये नमः । मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः । हृदि श्रीवृहस्पति-देवतायै नमः । सर्वाङ्गे श्रीवृहस्पति-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः ॥

॥ मूल स्तोत्र-पाठ ॥

गुरुर्वृहस्पतिर्जीवः, सुराचार्यो विदांवरः । वागीशो धिषणो दीर्घ-श्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥
सुधा-दृष्टिर्ग्रहाधीशो, ग्रह-पीड़ापहारकः । दया-करः सौम्य-मूर्तिः, सुरार्च्यः कुङ्कुम-द्युतिः॥
लोक-पूज्यो लोक-गुरुर्नीतिज्ञो नीति-कारकः । तारा-पतिश्चाङ्गिरसो, वेद-वैध-पितामहः॥

॥ फल-श्रुति ॥

भक्त्या वृहस्पतिं स्मृत्वा, नामान्येतानि यः पठेत् । अरोगी बलवान् श्रीमान्, पुत्रवान् स भवेन्नरः॥
जीवेद् वर्ष-शतं मर्त्यः, पापं नश्यति तत्क्षणात् । यः पूजयेद् गुरु-दिने, पीत-गन्धाक्षताम्बरैः ॥
पुष्प - दीपोपहारैश्च, पूजयित्वा वृहस्पतिम् । ब्राह्मणान् भोजयित्वा च, पीड़ा-शान्तिर्भवेद् गुरोः ॥

॥ श्रीस्कन्द-पुराणे वृहस्पति-स्तोत्रम् ॥

* * *

१२. श्रीशुक्र-कवचम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीशुक्र-कवचस्य भरद्वाज ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशुक्रः देवता, श्रीशुक्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ॥

ऋष्यादि-न्यास—शिरसि भरद्वाज-ऋषये नमः । मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः । हृदि श्रीशुक्र-देवतायै नमः । सर्वाङ्गे श्रीशुक्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः ॥

ध्यान— मृणाल - कुन्देन्दु-पयोज - सुप्रभं, पीताम्बरं प्रसृतमक्ष-मालिनम् ।
समस्त-शास्त्रार्थ-निधिं महान्तं, ध्यायेत् कविं वाञ्छितमर्थ-सिद्धये ॥

॥ कवच-पाठ ॥

शिरो मे भार्गवः पातु, भालं पातु ग्रहाधिपः । नेत्रे दैत्य - गुरुः पातु, श्रोत्रे मे चन्दन-द्युतिः ॥
पातु मे नासिकां काव्यो, वदनं दैत्य-वन्दितः। जिह्वां मे चोशना पातु, कण्ठं श्रीकण्ठ-भक्तिमान् ॥

भुजौ तेजो-निधिः पातु, कुक्षिं पातु मनो-ब्रजः । नाभिं भृगु-सुतः पातु, मध्यं पातु मही-प्रियः ॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा, ऊरू मे सुर - पूजितः । जानू जाड्य-हरः पातु, जङ्घे ज्ञानवतां वरः ॥
गुल्फौ गुण-निधिः पातु, पातु पादौ वरां वरः । सर्वाण्यङ्गानि मे पातु, स्वर्ण-माला-परिष्कृतः ॥

॥ फल-श्रुति ॥

य इदं कवचं दिव्यं, पठति श्रद्धयाऽन्वितः। न तस्य जायते पीड़ा, भार्गवस्य प्रसादतः ॥

॥ श्रीब्रह्माण्ड-पुराणे श्रीशुक्र-कवचम् ॥

* * *

१३. श्रीशुक्र-स्तव-राज-स्तोत्रम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीशुक्र-स्तव-राज-स्तोत्रस्य प्रजापतिः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशुक्रः देवता, श्रीशुक्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ॥

ऋष्यादि-न्यास—शिरसि प्रजापति-ऋषये नमः । मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः । हृदि श्रीशुक्र-देवतायै नमः । सर्वाङ्गे श्रीशुक्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः ॥

॥ मूल स्तोत्र-पाठ ॥

नमस्ते भार्गव - श्रेष्ठः, दैत्य-दानव-पूजितः । वृष्टि-रोध-प्रकर्त्रे च, वृष्टि-कर्त्रे नमो नमः ॥
देवयानि - पतिस्तुभ्यं, वेद - वेदाङ्ग-पारगः । परेण तपसा शुद्धः, शङ्करो लोक-सुन्दरः ॥
प्राप्तौ विद्यां जीवनाख्यां, तस्मै शुक्रात्मने नमः । नमस्तस्मै भगवते, भृगु-पुत्राय वेधसे ॥
तारा - मण्डल - मध्यस्थः, स्व-भासामिताम्बरः । यस्योदये जगत् सर्वं, मङ्गलार्हं भवेदिह ॥
अस्तं याते ह्यरिष्टं, स्यात् तस्मै मङ्गल-रूपिणे । त्रिपुरा-वासिनो दैत्यान्, शिव-बाण-प्रपीडितान् ॥
विद्ययाऽजीवयच्छुक्रो, नमस्ते भृगु - नन्दनः । ययाति - गुरवे तुभ्यं, नमस्ते कवि-नन्दनः ॥
बलि - राज्य - प्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः । भार्गवाय नमस्तुभ्यं, पूर्व-गीर्वाण-वन्दितः ॥
जीव - पुत्राय यो विद्यां, प्रदात् तस्मै नमो नमः । नमः शुक्राय काव्याय, भृगु-पुत्राय धीमहि ।
नमः कारण-रूपाय, नमस्ते कारणात्मने ॥

॥ फल-श्रुति ॥

स्तव-राजमिमं पुण्यं, भार्गवस्य महात्मनः। यः पठेच्छृणुयाद् वापि, लभते वाञ्छितं फलम्॥
पुत्र-कामो लभेत् पुत्रान्, श्री-कामो लभते श्रियम्। राज्य-कामो लभेद् राज्यं, स्त्री-कामो स्त्रियमुत्तमाम्॥
भृगु-वारे प्रयत्नेन, पठितव्यं समाहितैः । अन्य-वारे तु होरायां, पूजयेत् भृगु-नन्दनम्॥
रोगार्तो मुच्यते रोगात्, भयार्तो मुच्यते भयात् । यद्यत् प्रार्थयते जन्तुस्तत्तत् प्राप्नोति सर्वदा॥

प्रातः-काले प्रकर्तव्या, भृगु-पूजा प्रयत्नतः। सर्व-पाप-विनिर्मुक्तः, प्राप्नुयाच्छिव-सन्निधिम्।।।

।। श्रीब्रह्म-यामले श्रीशुक्र-स्तव-राज-स्तोत्रम् ।।

* * *

१४. श्रीशुक्र-स्तोत्रम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीशुक्र-स्तोत्रस्य भरद्वाज-ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीशुक्रः देवता, श्रीशुक्र-पीड़ा-परिहारार्थे विनियोगः ।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि भरद्वाज-ऋषये नमः । मुखे गायत्री-छन्दसे नमः । हृदि श्रीशुक्र-देवतायै नमः । सर्वाङ्गे शुक्र-पीड़ा-परिहारार्थे विनियोगाय नमः ।।

।। मूल स्तोत्र-पाठ ।।

शुक्रः काव्यः शुक्र-रेता, शुक्लाम्बर-धरः सुधीः । हिमाभः कुन्द-धवलः, शुभ्रांशुः शुक्ल-भूषणः।।
नीतिज्ञो नीति-कृन्नीति मार्ग - गामी ग्रहाधिपः। उशना वेद - वेदाङ्ग - पारगः कविरात्म-वित् ।।
भार्गवः करुणा-सिन्धुर्ज्ञान-गम्यः सुत-प्रदः।।

।। फल-श्रुति ।।

शुक्रस्यैतानि नामानि, शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत् । आयुर्धनं सुखं पुत्रं, लक्ष्मीं वसतिमुत्तमाम् ।।
विद्यां चैव स्वयं तस्मै, शुक्रस्तुष्टो ददाति च ।।

।। श्रीस्कन्द-पुराणे श्रीशुक्र-स्तोत्रम् ।।

* * *

१५. श्रीशनि-नाम-स्तुतिम्

।। श्रीशन्युवाच ।।

क्रोडं नीलाञ्जन-प्रख्यं, नील-वर्ण-समस्रजं। छाया-मार्तण्ड-सम्भूतं, नमस्यामि शनैश्चरम्।।
नमोऽर्क-पुत्राय शनैश्चराय, नीहार - वर्णाञ्जनमेचकाय।
श्रुत्वा रहस्यं भव-कामदश्च, फल-प्रदो मे भव सूर्य-पुत्र।।
नमोऽस्तु प्रेत - राजाय, कृष्ण-देहाय वै नमः। शनैश्चराय क्रूराय, शुद्ध-बुद्धि-प्रदायिने।।

।। फल-श्रुति ।।

य एभिर्नामभिः स्तौति, तस्य तुष्टो भवाम्यहं।
मदीयं तु भयं तस्य, स्वप्नेऽपि न भविष्यति।।

।। श्रीभविष्य-पुराणे श्रीशनि-नाम-स्तुतिम् ।।

* * *

१६. श्रीशनि-वज्र-पञ्जर-कवचम्

।।पूर्व-पीठिकाः श्रीब्रह्मोवाच।।

शृणुध्वमृषयः सर्वे, शनि-पीडा-हरं महत्। कवचं शनि-राजस्य, सौरेरिदमनुत्तमम्।।

कवचं देवतावासं, वज्र-पञ्जर-संज्ञकम्। शनैश्चर-प्रीति-करं, सर्व-सौभाग्य-दायकम्।।

।।मूल पाठ।।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीशनैश्चर-वज्र-पञ्जर-कवचस्य कश्यप-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशनैश्चरः देवता, श्रीशनैश्चर-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि कश्यप-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीशनैश्चर-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीशनैश्चर-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

ध्यान— **नीलाम्बरो नील-वपुः किरीटी, गृध्र-स्थितः त्रासकः धनुष्-करो।**

चतुर्भुजः सूर्य-सुतः प्रसन्नः, सदा मम स्यात् वरदः प्रशान्तः।।

शिरः शनैश्चरः पातु, भालं मे सूर्य - नन्दनः। नेत्रे छायात्मजः पातु, पातु कर्णौ यमानुजः।।

नासां वैवस्वतः पातु, मुखं मे भास्करः सदा। स्निग्ध-कण्ठश्च मे कण्ठं, भुजौ पातु महा-भुजः।।

स्कन्धौ पातु शनिश्चैव, करौ पातु शुभ - प्रदः। वक्षः पातु यम-भ्राता, कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।

नाभिं ग्रह - पतिः पातु, मन्दः पातु कटिं तथा। ऊरू ममान्तकः पातु, यमो जानु-युगं तथा।।

पादौ मन्द - गतिः पातु, सर्वाङ्गं पातु पिप्पलः। अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि, रक्षेत् मे सूर्य-नन्दनः।।

।।फल-श्रुति।।

इत्येतत् कवचं दिव्यं, पठेत् सूर्य - सुतस्य यः। न तस्य जायते पीडा, प्रीतो भवति सूर्यजः।।

व्यय-जन्म-द्वितीयस्थो, मृत्यु-स्थान-गतोऽपि वा। कालस्थ-गतो वाऽपि, सुप्रीतस्तु सदा शनिः।।

अष्टमस्थे सूर्य - सुते, व्यये जन्म - द्वितीयगे। कवचं पठतो नित्यं, न पीडा जायते क्वचित्।।

इत्येतत् कवचं दिव्यं, सौरेर्यन्निर्मितं पुरा। द्वादशाष्टम - जन्मस्थ, दोषान्नाशयते सदा।।

।।श्रीब्रह्माण्ड-पुराणे श्रीशनि-वज्र-पञ्जर-कवचं।।

* * *

१७. श्रीशनि-रक्षा-स्तवम्

।।पूर्व-पीठिकाः श्रीनारद उवाच।।

ध्यात्वा गणपतिं राजा, धर्म-राजो युधिष्ठिरः। धीरः शनैश्चरस्येमं, चकार स्तवमुत्तमम्।।

।।मूल पाठ।।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीशनैश्चर-स्तव-राजस्य सिन्धु-द्वीपः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीशनैश्चरः देवता, श्रीशनैश्चर-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि सिन्धु-द्वीप-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदि श्रीशनैश्चर-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीशनैश्चर-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

शिरो मे भास्करिः पातु, भालं छाया-सुतोऽवतु। कोटराक्षो दृशौ पातु, शिखि-कण्ठ-निभः श्रुती।।
घ्राणं मे भीषणः पातु, मुखं बलि - मुखोऽवतु। स्कन्धौ संवर्तकः पातु, भुजो मे भयदोऽवतु।।
सौरिर्मे हृदयं पातु, नाभिं शनैश्चरोऽवतु। ग्रह - राजः कटिं पातु, सर्वतः रवि - नन्दनः।।
पादौ मन्द - गतिः पातु, कृष्णः पात्वखिलं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं, सौरेर्नाम - बलैर्युतम्। सुखी पुत्री चिरायुश्च, स भवेन्नात्र संशयः।।

* * *

१८. श्रीशनि अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

सौरिः शनैश्चरः कृष्णो, नीलोत्पल-निभः शनिः। शुष्कोदरो विशालाक्षो, दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।।
शिति - कण्ठ - निभो नीलश्छाया-हृदय-नन्दनः। काल-दृष्टिः कोटराक्षः, स्थूल-रोमावली-मुखः।।
दीर्घो निर्मांस - गात्रस्तु, शुष्को घोरो भयानकः। नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो, दीर्घश्मश्रुर्जटा-धरः।।
मन्दो मन्द - गतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः। ग्रह-राजः कराली च, सूर्य-पुत्रो रविः शशी।।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो, भानुजः सिंहिका - सुतः। केतुर्देव-पतिर्बाहुः, कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा।।
शशी मरुत् कुबेरश्च, ईशानः सुरः आत्म-भूः। विष्णुर्हरो गण-पतिः, कुमारः कामो ईश्वरः।।
कर्त्ता हर्त्ता पालयिता, राज्येशो राज्य - दायकः। छाया-सुतः श्यामलाङ्गो, धन-हर्त्ता धन-प्रदः।।
क्रूर - कर्म - विधाता च, सर्व-कर्मावरोधकः। तुष्टो रुष्टः काम-रूपः, कामदो रवि-नन्दनः।।
ग्रह - पीडा - हरः शान्तो, नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः। स्थिरासनः स्थिर-गतिः, महा-कायो महा-बलः।।
महा - प्रभो महा-कालः, कालात्मा काल-कालकः। आदित्य-भय-दाता च, मृत्युरादित्य-नन्दनः।।
शतभिद्रुक्ष - दायिने, त्रयोदशी - तिथि - प्रियः। तिथ्यात्मा तिथि-गणनो, नक्षत्र-गण-नायकः।।
योग-राशिर्मुहूर्त्तात्मा, कर्त्ता दिन - पतिः प्रभुः। शमी-पुष्प-प्रियः श्यामः, त्रैलोक्य-भय-दायकः।।
नील - वासाः क्रिया-सिन्धुः, नीलाञ्जन-चयच्छविः। सर्व-रोग-हरो देवः, सिद्धो देव-गण-स्तुतः।।

।।फल-श्रुति।।

अष्टोत्तर - शतं नाम्नां, सौरेश्छाया-सुतस्य यः। पठेन्नित्यं तस्य पीडा, समस्ता नश्यति ध्रुवम्।।

कृत्वा पूजां पठेन् मर्त्यो, भक्तिमान् यो स्तव-राजम्। विशेषतः शनि-दिने, पीडा तस्य विनश्यति।।
जन्म - लग्ने स्थितिर्वाऽपि, गोचरे क्रूर - राशिगे। दशासु च गते सौरे, तदा स्तवमिमं पठेत्।।
पूजयेद् यः शनिं भक्त्या, शमी-पुष्पाक्षताम्बरैः। विधाय लौह-प्रतिमां, नरो दुःखात् विमुच्यते।।
बाधा याऽन्य - ग्रहाणां च, यः पठेत् तस्य नश्यति। भीतो भयात् विमुच्येत्, बद्धो मुच्येत् बन्धनात्।।
रोगी रोगात् विमुच्येत्, नरः स्तवमिमं पठेत्।।

।।श्रीभविष्य-पुराणे श्रीशनि-स्तव-राजम्।।

* * *

१८. श्रीराहु-कवचम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीराहु-कवचस्य चन्द्रमा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीराहुर्देवता, राँ बीजं, नमः शक्तिः, स्वाहा कीलकं, श्रीराहु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि चन्द्रमा-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीराहु-देवतायै नमः। गुह्ये राँ बीजाय नमः। पादयोः नमः शक्तये नमः। नाभौ स्वाहा कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे श्रीराहु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

	कर-न्यास	**षडङ्ग-न्यास**
राँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
रूँ	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।
रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्।
रः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।।

ध्यान—

प्रणमामि सदा राहुं, शूर्पाकारं किरीटिनम्।
सैंहिकेयं करालास्यं, लोकानामभयङ्करम्।।

नीलाम्बरः शिरः पातु, ललाटं लोक - वन्दितः। चक्षुषी पातु मे राहुः, श्रोत्रे त्वर्द्ध-शरीरवान्।।
नासिकां मे धूम्र-वर्णः, शूल-पाणिर्मुखं मम। जिह्वा मे सिंहिका-सूनुः, कण्ठं मे कठिनाङ्घ्रिकः।।
भुजङ्गेशो भुजौ पातु, नील - माल्याम्बरः करौ। पातु वक्ष-स्थलं मन्त्री, पातु कुक्षिं विधुन्तुदः।।
कटिं मे विकटः पातु, ऊरू मे सुर - पूजितः। स्वर्भानुर्जानुनी पातु, जङ्घे मे पातु जाड्यहा।।
गुल्फौ ग्रह - पतिः पातु, पादौ मे भीषणाकृतिः। सर्वाण्यङ्गानि मे पातु, नीलश्चन्दन-भूषणः।।

।।फल-श्रुति।।

राहोरिदं कवचमृद्धिदं वस्तुदं यो, भक्त्या पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन्।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुरारोग्यमात्म-विजयं च हि तत्-प्रसादात्।।

।।श्रीमहा-भारते द्रोण-पर्वे श्रीराहु-कवचम्।।

१९. श्रीराहु-पञ्च-विंशति-नाम-स्तोत्रम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीराहु-पञ्च-विंशन्नाम-स्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीराहुर्देवता, श्रीराहु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि वामदेव-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदि श्रीराहुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीराहु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

राहुर्दानव-मन्त्री च, सिंहिका-चित्त-नन्दनः। अर्ध-कायः सदा-क्रोधी, चन्द्रादित्य-विमर्दनः।।

रौद्रो रुद्र-प्रियो दैत्यः, स्वर्भानुर्भानु-भीतिदः। ग्रह-राजः सुधा-पायी, राका-तिथ्यभिलाषकः।।

काल-दृष्टिः काल-रूपः, श्रीकण्ठ-हृदयाश्रितः। विधुन्तुदः सैंहिकेयो, घोर-रूपो महा-बलः।।

ग्रह-पीड़ा-करो दंष्ट्री, रक्त-नेत्रो महोदरः।

।।फल-श्रुति।।

पञ्च-विंशति-नामानि, स्मृत्वा राहुं सदा नरः।।

यः पठेन् महतीं पीडां, तस्य नश्यति निश्चितम्। आरोग्यं पुत्रमतुलां, श्रियं धान्यं पशूंस्तथा।।

ददाति राहुस्तस्मै यः, पठेत् स्तोत्रमनुत्तमम्। सततं पठते यस्तु, जीवेत् वर्ष - शतं नरः।।

।।श्रीस्कन्द-पुराणे श्रीराहु-स्तोत्रम्।।

* * *

२०. श्रीकेतु-कवचम्

विनियोग— ॐ अस्य श्रीकेतु-कवचस्य त्र्यम्बक-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकेतुर्देवता, श्रीकेतु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-न्यास— शिरसि त्र्यम्बक-ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदि श्रीकेतुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीकेतु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

ध्यान— **क्रूरं कराल-वदनं, चित्र-वर्ण किरीटिनम्।**

प्रणमामि सदा केतुं, ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम्।।

चित्र-वर्ण शिरः पातु, भालं धूम्र-सम-द्युतिः। पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः, श्रुती मे रक्त-लोचनः।।

घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिका-सुतः। पातु कण्ठं च मे केतुः, स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः।।

हस्तौ पातु सुर-श्रेष्ठः, कुक्षिं पातु महा-ग्रहः। सिंहासनः कटिं पातु, मध्यं पातु महाऽसुरः।।

ऊरू पातु महा-शीर्षो, जानुनी मेऽति-कोपनः। पातु पादौ च मे क्रूरः, सर्वाङ्गं नर-पिङ्गलः॥

॥फल-श्रुति॥

इतीदं कवचं दिव्यं, सर्व-रोग-विनाशनम्। शत्रु-विनाशं भूतानां, शमनं सर्व-सिद्धिदम्॥

बहुना किमिहोक्तेन, यद्यन्मनसि वर्तते। तत् सर्वं भवेत्तस्य, कवचस्य च धारणात्॥

यः पठेच्छृणुयाद्वापि, सर्वत्र विजयी भवेत्॥

॥श्रीब्रह्माण्ड-पुराणे श्रीकेतु-कवचम्॥

* * *

२१. श्रीकेतु-विंशति-नाम-स्तोत्रम्

केतुः कालः कलयिता, धूम्र-केतुर्विवर्णकः। लोक - केतुर्महा-केतुः, सर्व-केतुर्भय-प्रदः॥

रौद्रो रुद्र-प्रियो रुद्रः, क्रूर-कर्मा सुगन्ध-धृक्। पलाश-पुष्प-सङ्काशः, चित्र-यज्ञोपवीत-धृक्॥

तारागण-विमर्दी च, जैमिनेयो ग्रहाधिपः।

॥फल-श्रुति॥

एतद्विंशति-नामानि, केतोर्यः सततं पठेत्। तस्य नश्यन्ति बाधाश्च, सर्वाः केतु-प्रसादतः॥

धन-धान्य-पशूनां च, भवेत् वृद्धिर्न संशयः॥

॥श्रीस्कन्द-पुराणे श्रीकेतोर्विंशति-नाम-स्तोत्रम्॥

* * *

२२. श्रीनव-ग्रह-पीडा-हर-स्तोत्रम्

ग्रहाणामादिरादित्यो, लोक - रक्षण - कारकः। विषम-स्थान-सम्भूतां, पीडां हरतु मे रविः॥

रोहिणीशः सुधा-मूर्तिः, सुधा-गात्रः सुधाशऽनः। विषम-स्थान-सम्भूतां, पीडां हरतु मे विधुः॥

भूमि-पुत्रो महा-तेजा, जगतां भयकृत् सदा। वृष्टि-कृद् वृष्टि-हर्त्ता च, पीडां हरतु मे कुजः॥

उत्पात-रूपो जगतां, चन्द्र-पुत्रो महा - द्युतिः। सूर्य-प्रियकरो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः॥

देव-मन्त्री विशालाक्षः, सदा-लोक-हिते रतः। अनेक-शिष्य-सम्पूर्णो, पीडां हरतु मे गुरुः॥

दैत्य-मन्त्री गुरुस्तेषां, प्राणदश्च महा-मतिः। प्रभुस्तारा ग्रहाणां च, पीडा हरतु मे भृगुः॥

सूर्य-पुत्रो दीर्घ-देहो, विशालाक्षः शिव-प्रियः। मन्द चारः प्रसन्नात्मा, पीडां हरतु मे शनिः॥

महा-शिरा महा-वक्त्रो, दीर्घ-दंष्ट्रो महा-बलः। अतनुश्चोर्ध्व-केशश्च, पीडां हरतु मे शिखिः॥

अनेक - रूप - वर्णैश्च, शतशोऽथ सहस्रशः। उत्पात-रूपो जगतां, पीडां हरतु मे केतुः॥

॥ब्रह्माण्ड-पुराणे नव-ग्रह-पीडा-हर-स्तोत्रम्॥

नव-ग्रह-साधना

(५)

नव-ग्रह-अष्टोत्तर-शत-नामावली-विधान

'चण्डी'-पत्रिका वर्ष ५९ में नव-ग्रहों की अष्टोत्तर-शत-नामावलियाँ प्रकाशित हुई थीं। यहाँ ये सभी नामावलियाँ विधान-सहित प्रस्तुत हैं।-सं०

१. सङ्कल्प, ध्यान एवं पूजन ९२
२. श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली ९३
३. श्रीसोम (चन्द्र) -अष्टोत्तर-शत-नामावली ९५
४. श्रीमङ्गल-अष्टोत्तर-शत-नामावली ९७
५. श्रीबुध-अष्टोत्तर-शत-नामावली ९९
६. श्रीवृहस्पति-अष्टोत्तर-शत-नामावली १०१
७. श्रीशुक्र-अष्टोत्तर-शत-नामावली १०३
८. श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नामावली १०५
९. श्रीराहु-अष्टोत्तर-शत-नामावली १०७
१०. श्रीकेतु-अष्टोत्तर-शत-नामावली १०९
११. अष्टोत्तर-शत-नामों द्वारा 'पूजन', 'तर्पण' एवं 'हवन' १११

★★★

सङ्कल्प, ध्यान एवं पूजन

किसी भी देवता की उपासना में उसके '**अष्टोत्तर-शत-नामावली**' का विशेष महत्त्व होता है। **अष्टोत्तर-शत-नामावली में देवता के १०८ नामों का 'चतुर्थ्यन्त'-रूप** होता है। संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति सम्प्रदान कारक की बोधक है। किसी शब्द के अन्त में इस चतुर्थी विभक्ति के लगने से उस शब्द के अर्थ में '**के लिए**' का भाव जुड़ जाता है। उदाहरण के लिए '**श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली**' का पहला नाम है '**श्रीअरुणाय**'। इसका अर्थ है '**श्रीअरुण के लिए**'। इस चतुर्थ्यन्त नाम के अन्त में '**नमः**', '**पूजयामि नमः**', '**तर्पयामि नमः**' और '**नमः स्वाहा**' जोड़ने से प्रत्येक नाम के प्रति क्रमशः **(१) नमन, (२) पूजन, (३) तर्पण और (४) होम** की क्रिया सम्पन्न करने के वाक्य बन जाते हैं तथा इन वाक्यों के द्वारा चार प्रकार की साधनाएँ अत्यन्त सहज रूप में सम्पन्न हो जाती हैं। संक्षेप में, '**अष्टोत्तर-शत-नामावली**' के द्वारा **नमन, पूजन, तर्पण और होम** की साधना करना अत्यन्त सरल है। सभी इच्छुक बन्धु इससे लाभ उठा सकते हैं।

साधना करने से पहले '**सङ्कल्प**' करना चाहिए यथा-

सङ्कल्प-**ॐ तत्सत्** (ब्रह्म ही एक-मात्र सत्य है)। **अद्यैतस्य** (आज इस), **ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे** (ब्रह्मा के प्रथम दिवस के दूसरे प्रहर में), **श्वेत-वराह-कल्पे** (श्वेत-वराह नामक 'कल्प' में), **जम्बू-द्वीपे** ('जम्बू'-नामक द्वीप में), **भरत-खण्डे** (भरत के भूखण्ड में), **आर्यावर्त्त-देशे** (आर्यावर्त्त नामक देश में), **अमुक-पुण्य-क्षेत्रे** (अमुक पवित्र क्षेत्र में), **कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे** ('कलि-युग' में 'कलि' के प्रथम चरण में), **अमुक-सम्वत्सरे** (अमुक सम्वत्सर में), **अमुक-मासे** (अमुक मास में), **अमुक-पक्षे** (अमुक पक्ष में), **अमुक-तिथौ** (अमुक तिथि में), **अमुक-वासरे** (अमुक दिवस में), **अमुक-गोत्रोत्पन्नो** (अमुक गोत्र में उत्पन्न), **अमुक-नाम-शर्मा/वर्मा-गुप्तो, दासो** (अमुक नामवाला शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास), **अहं श्रीअमुक-देव-प्रीत्यर्थं अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये।** (श्रीअमुक-देव की प्रसन्नता के लिए मैं अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रों से जप-पूजन-तर्पण-हवन करूँगा।)

विशेष- उक्त '**सङ्कल्प**'-वाक्य में जहाँ-जहाँ '**अमुक**'-शब्द है, वहाँ सम्बन्धित नाम का उच्चारण करना चाहिए। '**नाम-जप**' यदि किसी विशेष कामना से करना हो, तो उसका भी उल्लेख करना चाहिए।

'**नाम-जप**' यदि सपरिवार करे, तो बहुत लाभ होता है। सपरिवार '**नाम-जप**' करने के लिए '**अहं**'-शब्द के स्थान पर '**सपरिवारोऽहं**' कहना चाहिए। सपरिवार '**नाम-जप**' के समय किसी एक सदस्य को शुद्धता-पूर्वक '**नाम**' का स्पष्ट उच्चारण करना चाहिए और शेष सदस्यों को भक्ति-पूर्वक उसको दोहराना चाहिए। '**नाम**' का उच्चारण सभी सदस्यों के द्वारा होना चाहिए।

'**सङ्कल्प**' के बाद हाथ जोड़कर '**श्रीसूर्यादि**' **नव-ग्रहों का ध्यान** करना चाहिए। '**सूर्यादि**' **नव-ग्रहों** के '**ध्यान**' पीछे दिए गए हैं। '**ध्यान**' करने के बाद **पञ्चोपचार, षोडषोपचार अथवा मानस-पूजन** कर '**नामावली**' के प्रत्येक '**नाम-मन्त्र**' द्वारा **नमन, पूजन, तर्पण अथवा होम** की साधना करनी चाहिए।

★★★

श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ ह्रीं अरुणाय नमः।
ॐ ह्रीं शरण्याय नमः।
ॐ ह्रीं करुणा-रस-सिन्धवे नमः।
ॐ ह्रीं असमान-बलाय नमः।
ॐ ह्रीं आर्त-रक्षकाय नमः।
ॐ ह्रीं आदित्याय नमः।
ॐ ह्रीं आदि-भूताय नमः।
ॐ ह्रीं अखिलागम-वेदिने नमः।
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः।
ॐ ह्रीं अखिलज्ञाय नमः॥१०॥
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।
ॐ ह्रीं इनाय नमः।
ॐ ह्रीं विश्व-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं इज्याय नमः।
ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः।
ॐ ह्रीं भानवे नमः।
ॐ ह्रीं इन्दिरा-मन्दिराप्ताय नमः।
ॐ ह्रीं वन्दनीयाय नमः।
ॐ ह्रीं ईशाय नमः।
ॐ ह्रीं सु-प्रसन्नाय नमः॥२०॥
ॐ ह्रीं सुशीलाय नमः।
ॐ ह्रीं सु-वर्चसे नमः।
ॐ ह्रीं वसु-प्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं वसवे नमः।
ॐ ह्रीं वासुदेवाय नमः।
ॐ ह्रीं उज्ज्वलाय नमः।
ॐ ह्रीं उग्र-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगाय नमः।
ॐ ह्रीं विवस्वते नमः।
ॐ ह्रीं उद्यत्किरण-जालाय नमः॥३०॥
ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्जस्वलाय नमः।
ॐ ह्रीं वीराय नमः।
ॐ ह्रीं निर्जराय नमः।
ॐ ह्रीं जयाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊरु-द्वय-भाव-रूप-युक्त-सारथये नमः।
ॐ ह्रीं ऋणि-बन्धाय नमः।
ॐ ह्रीं रुग्-हन्त्रे नमः।
ॐ ह्रीं ऋक्ष-चक्र-चराय नमः।
ॐ ह्रीं ऋजु-स्वभाव-चित्ताय नमः॥४०॥
ॐ ह्रीं नित्य-स्तुत्याय नमः।
ॐ ह्रीं ऋकार-मातृका-वर्ण-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं उज्ज्वलत्-तेजसे नमः।
ॐ ह्रीं ऋक्षादि-नाथ-मित्राय नमः।
ॐ ह्रीं पुष्कराक्षाय नमः।
ॐ ह्रीं लुप्त-दन्ताय नमः।
ॐ ह्रीं शान्ताय नमः।
ॐ ह्रीं कान्तिदाय नमः।
ॐ ह्रीं घनाय नमः।
ॐ ह्रीं कनत्-कनक-भूषाय नमः॥५०॥
ॐ ह्रीं खद्योताय नमः।
ॐ ह्रीं ऊनिताखिल-दैत्याय नमः।

ॐ ह्रीं सत्यानन्द-स्वरूपिणे नमः।
ॐ ह्रीं अप-वर्ग-प्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं आर्त-शरण्याय नमः।
ॐ ह्रीं एकाकिने नमः।
ॐ ह्रीं भगवते नमः।
ॐ ह्रीं सृष्टि-स्थित्यन्त-कारिणे नमः।
ॐ ह्रीं गुणात्मने नमः।
ॐ ह्रीं घृणि-भृते नमः॥६०॥
ॐ ह्रीं बृहते नमः।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः।
ॐ ह्रीं ऐश्वर्यदाय नमः।
ॐ ह्रीं शर्वाय नमः।
ॐ ह्रीं हरिदश्वाय नमः।
ॐ ह्रीं शौरये नमः।
ॐ ह्रीं दश-दिक्-सम्प्रकाशाय नमः।
ॐ ह्रीं भक्त-वश्याय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्जस्कराय नमः।
ॐ ह्रीं जयिने नमः॥७०॥
ॐ ह्रीं जगदानन्द-हेतवे नमः।
ॐ ह्रीं जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-वर्जिताय नमः।
ॐ ह्रीं उच्च-स्थान-समारूढ-रथस्थाय नमः।
ॐ ह्रीं असुरारये नमः।
ॐ ह्रीं कमनीय-कराय नमः।
ॐ ह्रीं अब्ज-वल्लभाय नमः।
ॐ ह्रीं अन्तर्बहिः-प्रकाशाय नमः।
ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः।
ॐ ह्रीं आत्म-रूपिणे नमः।
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः॥८०॥

ॐ ह्रीं अमरेशाय नमः।
ॐ ह्रीं परस्मै ज्योतिषे नमः।
ॐ ह्रीं अहस्कराय नमः।
ॐ ह्रीं रवये नमः।
ॐ ह्रीं हरये नमः।
ॐ ह्रीं परमात्मने नमः।
ॐ ह्रीं तरुणाय नमः।
ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः।
ॐ ह्रीं ग्रहाणांपतये नमः।
ॐ ह्रीं भास्कराय नमः॥९०॥
ॐ ह्रीं आदि-मध्यान्त-रहिताय नमः।
ॐ ह्रीं सौख्य-प्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं सकल-जगतांपतये नमः।
ॐ ह्रीं सूर्याय नमः।
ॐ ह्रीं कवये नमः।
ॐ ह्रीं नारायणाय नमः।
ॐ ह्रीं परेशाय नमः।
ॐ ह्रीं तेजो-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीहिरण्य-गर्भाय नमः।
ॐ ह्रीं सम्पत्कराय नमः॥१००॥
ॐ ह्रीं इष्टार्थदाय नमः।
ॐ ह्रीं अनुप्रसन्नाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।
ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः।
ॐ ह्रीं भक्त-कोटि-सौख्य-प्रदायिने नमः।
ॐ ह्रीं निखिलागम-वेद्याय नमः।
ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः।
ॐ ह्रीं छाया-उषा-देवी-समेताय नमः॥१०८॥

श्रीसोम (चन्द्र) - अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ सौं श्रीमते नमः।
ॐ सौं शश-धराय नमः।
ॐ सौं चन्द्राय नमः।
ॐ सौं ताराधीशाय नमः।
ॐ सौं निशाकराय नमः।
ॐ सौं सुधा-निधये नमः।
ॐ सौं सदाऽऽराध्याय नमः।
ॐ सौं सत्पतये नमः।
ॐ सौं साधु-पूजिताय नमः।
ॐ सौं जितेन्द्रियाय नमः॥१०॥
ॐ सौं जयोद्योगाय नमः।
ॐ सौं ज्योतिश्चक्र-प्रवर्तकाय नमः।
ॐ सौं विकर्तनानुजाय नमः।
ॐ सौं वीराय नमः।
ॐ सौं विश्वेशाय नमः।
ॐ सौं विदुषां पतये नमः।
ॐ सौं दोषा-कराय नमः।
ॐ सौं दुष्ट-दूराय नमः।
ॐ सौं पुष्टि-मते नमः।
ॐ सौं शिष्ट-पालकाय नमः॥२०॥
ॐ सौं अष्ट-मूर्ति-प्रियाय नमः।
ॐ सौं अनन्ताय नमः।
ॐ सौं कष्ट-दारु-कुठाराय नमः।
ॐ सौं स्व-प्रकाशाय नमः।
ॐ सौं प्रकाशत्मने नमः।
ॐ सौं द्यु-चराय नमः।
ॐ सौं देव-भोजनाय नमः।
ॐ सौं कलाधराय नमः।
ॐ सौं काल-हेतवे नमः।
ॐ सौं काम-कृते नमः॥३०॥
ॐ सौं काम-दायकाय नमः।
ॐ सौं मृत्यु-संहारकाय नमः।
ॐ सौं अमर्त्याय नमः।
ॐ सौं नित्यानुष्ठानदाय नमः।
ॐ सौं क्षपाकाराय नमः।
ॐ सौं क्षीण-पापाय नमः।
ॐ सौं क्षय-वृद्धि-समन्विताय नमः।
ॐ सौं जैवातृकाय नमः।
ॐ सौं शुचये नमः।
ॐ सौं शुभ्राय नमः॥४०॥
ॐ सौं जयिने नमः।
ॐ सौं जय-फल-प्रदाय नमः।
ॐ सौं सुधा-मयाय नमः।
ॐ सौं सुर-स्वामिने नमः।
ॐ सौं भुक्तिदाय नमः।
ॐ सौं भद्राय नमः।
ॐ सौं भक्तानामिष्ट-दायकाय नमः।
ॐ सौं भक्त-दारिद्र-भञ्जनाय नमः।
ॐ सौं साम-गान-प्रियाय नमः।
ॐ सौं सर्व-रक्षकाय नमः॥५०॥
ॐ सौं सागरोद्-भवाय नमः।
ॐ सौं भयान्त-कृते नमः।

ॐ सौं भवित-गम्याय नमः।
ॐ सौं भव-बन्ध-विमोचकाय नमः।
ॐ सौं जगत्-प्रकाश-करणाय नमः।
ॐ सौं जगदानन्द-कारणाय नमः।
ॐ सौं निःसपत्नाय नमः।
ॐ सौं निराहाराय नमः।
ॐ सौं निर्विकाराय नमः।
ॐ सौं निरामयाय नमः॥६०॥
ॐ सौं भू-छायाऽऽच्छादिताय नमः।
ॐ सौं भव्याय नमः।
ॐ सौं भुवन-प्रतिपालकाय नमः।
ॐ सौं सकलार्ति-हराय नमः।
ॐ सौं सौम्य-जनकाय नमः।
ॐ सौं साधु-वन्दिताय नमः।
ॐ सौं सर्वागमज्ञाय नमः।
ॐ सौं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ सौं सनकादि-मुनि-स्तुताय नमः।
ॐ सौं सित-छत्र-ध्वजोपेताय नमः॥७०॥
ॐ सौं सिताङ्गाय नमः।
ॐ सौं श्वेत-माल्याम्बर-धराय नमः।
ॐ सौं सित-भूषणाय नमः।
ॐ सौं श्वेत-गन्धानुलेपनाय नमः।
ॐ सौं दशाश्व-रथ-संरूढाय नमः।
ॐ सौं दण्ड-पाणये नमः।
ॐ सौं धनुर्धराय नमः।
ॐ सौं कुन्द-पुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः।
ॐ सौं नयनाब्ज-समुद्-भवाय नमः।
ॐ सौं आत्रेय-गोत्रजाय नमः॥८०॥

ॐ सौं अत्यन्त-विनयाय नमः।
ॐ सौं प्रिय-दायकाय नमः।
ॐ सौं करुणा-रस-सम्पूर्णाय नमः।
ॐ सौं कर्कटक-प्रभवे नमः।
ॐ सौं चतुरस्र-समारूढाय नमः।
ॐ सौं अव्ययाय नमः।
ॐ सौं चतुराय नमः।
ॐ सौं दिव्य-वाहनाय नमः।
ॐ सौं विवस्वन्मण्डलाज्ञेय-वासाय नमः।
ॐ सौं वसु-समृद्धिदाय नमः॥९०॥
ॐ सौं महेश्वर-प्रियाय नमः।
ॐ सौं दान्ताय नमः।
ॐ सौं मेरु-गोत्र-प्रदक्षिणाय नमः।
ॐ सौं ग्रह-मण्डल-मध्यस्थाय नमः।
ॐ सौं ग्रसितार्काय नमः।
ॐ सौं द्विज-राजाय नमः।
ॐ सौं द्युतित-काय नमः।
ॐ सौं द्वि-भुजाय नमः।
ॐ सौं द्विज-पूजिताय नमः।
ॐ सौं औदुम्बर-नगावासाय नमः॥१००॥
ॐ सौं उदाराय नमः।
ॐ सौं रोहिणी-पतये नमः।
ॐ सौं नित्योदयाय नमः।
ॐ सौं मुनि-स्तुताय नमः।
ॐ सौं नित्यानन्द-फल-प्रदाय नमः।
ॐ सौं सकलाह्लादन-कराय नमः।
ॐ सौं पलाश-समिध-प्रियाय नमः।
ॐ सौं चन्द्रमसे नमः॥१०८॥

श्रीमङ्गल-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ मं मही-सुताय नमः।
ॐ मं महा-भागाय नमः।
ॐ मं मङ्गलाय नमः।
ॐ मं मङ्गल-प्रदाय नमः।
ॐ मं महा-वीराय नमः।
ॐ मं महा-शूराय नमः।
ॐ मं महा-बल-पराक्रमाय नमः।
ॐ मं महा-रौद्राय नमः।
ॐ मं महा-भद्राय नमः।
ॐ मं माननीयाय नमः॥१०॥
ॐ मं दया-कराय नमः।
ॐ मं मानदाय नमः।
ॐ मं अमर्षणाय नमः।
ॐ मं क्रूराय नमः।
ॐ मं ताप-पाप-विवर्जिताय नमः।
ॐ मं सु-प्रतीपाय नमः।
ॐ मं सु-ताम्राक्षाय नमः।
ॐ मं सुब्रह्मण्याय नमः।
ॐ मं धर्मात्मजाय नमः।
ॐ मं वक्तृ-सभादि-गमनाय नमः॥२०॥
ॐ मं वरेण्याय नमः।
ॐ मं वरदाय नमः।
ॐ मं सुखिने नमः।
ॐ मं वीर-भद्राय नमः।
ॐ मं विरूपाक्षाय नमः।
ॐ मं विदूरस्थाय नमः।
ॐ मं विभा-वसवे नमः।
ॐ मं नक्षत्र-चक्र-सञ्चारिणे नमः।
ॐ मं नक्षत्र-रूपाय नमः।
ॐ मं क्षात्र-वर्जिताय नमः॥३०॥
ॐ मं क्षय-वृद्धि-विनिर्मुक्ताय नमः।
ॐ मं क्षमा-युक्ताय नमः।
ॐ मं विचक्षणाय नमः।
ॐ मं अक्षीण-फलदाय नमः।
ॐ मं चक्षुर्गोचराय नमः।
ॐ मं शुभ-लक्षणाय नमः।
ॐ मं वीत-रागाय नमः।
ॐ मं वीत-भयाय नमः।
ॐ मं वीचि-विरावाय नमः।
ॐ मं विश्व-कारणाय नमः॥४०॥
ॐ मं नक्षत्र-राशि-सञ्चारिणे नमः।
ॐ मं नाना-भय-निकृन्तनाय नमः।
ॐ मं कमनीयाय नमः।
ॐ मं दया-साराय नमः।
ॐ मं कनत्-कनक-भूषणाय नमः।
ॐ मं भय-त्राणाय नमः।
ॐ मं भव्य-फलदाय नमः।
ॐ मं भक्ताभय-वर-प्रदाय नमः।
ॐ मं शत्रु-हन्त्रे नमः।
ॐ मं शमोपेताय नमः॥५०॥
ॐ मं शरणागत-पोषणाय नमः।
ॐ मं साहसिने नमः।

ॐ मं सद्-गुणाध्यक्षाय नमः।
ॐ मं साधवे नमः।
ॐ मं समर-दुर्जयाय नमः।
ॐ मं दुष्ट-दूराय नमः।
ॐ मं शिष्ट-पूज्याय नमः।
ॐ मं सर्व-कष्ट-निवारणाय नमः।
ॐ मं दुश्चेष्टा-वारकाय नमः।
ॐ मं दुःख-भञ्जनाय नमः॥६०॥
ॐ मं दुर्धर्षाय नमः।
ॐ मं हरये नमः।
ॐ मं दुःस्वप्न-हन्त्रे नमः।
ॐ मं दुर्धराय नमः।
ॐ मं दुष्ट-गर्व-विमोचनाय नमः।
ॐ मं भरद्वाज-कुलोद्भूताय नमः।
ॐ मं भू-सुताय नमः।
ॐ मं भव्य-भूषणाय नमः।
ॐ मं रक्ताम्बराय नमः।
ॐ मं रक्त-वपुषे नमः॥७०॥
ॐ मं भक्त-पालन-तत्पराय नमः।
ॐ मं चतुर्भुजाय नमः।
ॐ मं गदा-धारिणे नमः।
ॐ मं मेष-वाहनाय नमः।
ॐ मं अमिताशनाय नमः।
ॐ मं शक्ति-शूल-धराय नमः।
ॐ मं शक्ताय नमः।
ॐ मं शस्त्र-विद्या-विशारदाय नमः।
ॐ मं तार्किकाय नमः।
ॐ मं तामसाधाराय नमः॥८०॥

ॐ मं तपस्विने नमः।
ॐ मं ताम्र-लोचनाय नमः।
ॐ मं तप्त-काञ्चन-सङ्काशाय नमः।
ॐ मं रक्त-किंजुल्क-सन्निभाय नमः।
ॐ मं गोत्राधि-देवाय नमः।
ॐ मं गो-मध्य-चराय नमः।
ॐ मं गुण-विभूषणाय नमः।
ॐ मं असृजे नमः।
ॐ मं अङ्गारकाय नमः।
ॐ मं अवन्ति-देशाधीशाय नमः॥९०॥
ॐ मं जनार्दनाय नमः।
ॐ मं सूर्य-याम्य-प्रदेशस्थाय नमः।
ॐ मं यौवनाय नमः।
ॐ मं याम्य-दिङ्-मुखाय नमः।
ॐ मं लोहिताङ्गाय नमः।
ॐ मं त्रि-दशाधिप-सन्नुताय नमः।
ॐ मं शुचये नमः।
ॐ मं शुचि-कराय नमः।
ॐ मं शूराय नमः।
ॐ मं शुचि-वश्याय नमः॥१००॥
ॐ मं शुभावहाय नमः।
ॐ मं मेष-वृश्चिक-राशीशाय नमः।
ॐ मं मेधाविने नमः।
ॐ मं मित-भाषणाय नमः।
ॐ मं सुख-प्रदाय नमः।
ॐ मं सु-रूपाक्षाय नमः।
ॐ मं सर्वाभीष्ट-फल-प्रदाय नमः।
ॐ मं सर्व-रोगापहारकाय नमः॥१०८॥

श्रीबुध-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ बुं बुधाय नमः।
ॐ बुं बुधार्चिताय नमः।
ॐ बुं सौम्याय नमः।
ॐ बुं दृढ-फलाय नमः।
ॐ बुं श्रुति-जाल-प्रबोधकाय नमः।
ॐ बुं सत्य-वासाय नमः।
ॐ बुं सत्य-वचसे नमः।
ॐ बुं श्रेयसां पतये नमः।
ॐ बुं अव्ययाय नमः।
ॐ बुं शशि-सुताय नमः॥१०॥
ॐ बुं सोमजाय नमः।
ॐ बुं सुखदाय नमः।
ॐ बुं श्रीमते नमः।
ॐ बुं सोम-वंश-प्रदीपकाय नमः।
ॐ बुं वेद-विदे नमः।
ॐ बुं वेद-तत्त्वज्ञाय नमः।
ॐ बुं वेदान्त-ज्ञान-भास्वराय नमः।
ॐ बुं विद्या-विचक्षण-विभवे नमः।
ॐ बुं विद्वत्पति-कराय नमः।
ॐ बुं ऋजवे नमः॥२०॥
ॐ बुं विश्वानुकूल-सञ्चारिणे नमः।
ॐ बुं विशेष-विनयान्विताय नमः।
ॐ बुं विविधागम-सारज्ञाय नमः।
ॐ बुं वीर्य-वते नमः।
ॐ बुं विगत-ज्वराय नमः।
ॐ बुं त्रि-वर्ग-फलदाय नमः।
ॐ बुं अनन्ताय नमः।
ॐ बुं त्रिदशाधिप-पूजिताय नमः।
ॐ बुं बुद्धि-मते नमः।
ॐ बुं बहु-शास्त्रज्ञाय नमः॥३०॥
ॐ बुं बलिने नमः।
ॐ बुं बन्ध-विमोचनाय नमः।
ॐ बुं बोधनाय नमः।
ॐ बुं वक्राति-वक्र-गमनाय नमः।
ॐ बुं वासवाय नमः।
ॐ बुं वसुधाधिपाय नमः।
ॐ बुं प्रसाद-वदनाय नमः।
ॐ बुं वन्द्याय नमः।
ॐ बुं वरेण्याय नमः।
ॐ बुं वाग्-विलक्षणाय नमः॥४०॥
ॐ बुं सत्य-वते नमः।
ॐ बुं सत्य-सन्धाय नमः।
ॐ बुं सत्य-सङ्कल्पाय नमः।
ॐ बुं सदाधाराय नमः।
ॐ बुं सर्व-रोग-प्रशमनाय नमः।
ॐ बुं सर्व-मृत्यु-निवारकाय नमः।
ॐ बुं वाणिज्य-निपुणाय नमः।
ॐ बुं वश्याय नमः।
ॐ बुं वाताङ्गिने नमः।
ॐ बुं वात-रोग-हृते नमः॥५०॥
ॐ बुं स्थूलाय नमः।
ॐ बुं स्थैर्य-गुणाध्यक्षाय नमः।

ॐ बुं स्थूल-सूक्ष्मादि-कारणाय नमः।
ॐ बुं अप्रकाशाय नमः।
ॐ बुं प्रकाशात्मने नमः।
ॐ बुं धनाय नमः।
ॐ बुं गगन-भूषणाय नमः।
ॐ बुं विधि-स्तुताय नमः।
ॐ बुं विशालाक्षाय नमः।
ॐ बुं विद्वज्जन-मनोहराय नमः॥६०॥
ॐ बुं चारु-शीलाय नमः।
ॐ बुं स्व-प्रकाशाय नमः।
ॐ बुं चपलाय नमः।
ॐ बुं जितेन्द्रियाय नमः।
ॐ बुं उदङ्-मुखाय नमः।
ॐ बुं मखासक्ताय नमः।
ॐ बुं मगधाधिपतये नमः।
ॐ बुं हरये नमः।
ॐ बुं सौम्य-वत्सर-सञ्जाताय नमः।
ॐ बुं सोम-प्रिय-कराय नमः॥७०॥
ॐ बुं सुफल-प्रदाय नमः।
ॐ बुं सुखिने नमः।
ॐ बुं सिंहादि-रूढ़ाय नमः।
ॐ बुं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ बुं शिखि-वर्णाय नमः।
ॐ बुं शिवङ्कराय नमः।
ॐ बुं पीताम्बराय नमः।
ॐ बुं पीत-वपुषे नमः।
ॐ बुं खड्ग-चर्म-धराय नमः।
ॐ बुं कार्य-कर्त्रे नमः॥८०॥

ॐ बुं कलुष-हराय नमः।
ॐ बुं आत्रेय-गोत्रजाय नमः।
ॐ बुं अत्यन्त-विनयाय नमः।
ॐ बुं विश्व-पावनाय नमः।
ॐ बुं चाम्पेय-पुष्प-सङ्काशाय नमः।
ॐ बुं चारणाय नमः।
ॐ बुं चारु-भूषणाय नमः।
ॐ बुं वीत-रागाय नमः।
ॐ बुं वीत-भयाय नमः।
ॐ बुं विशुद्धाय नमः॥९०॥
ॐ बुं कनक-प्रभाय नमः।
ॐ बुं बन्धु-प्रियाय नमः।
ॐ बुं बन्ध-मुक्ताय नमः।
ॐ बुं बाण-मण्डल-संश्रिताय नमः।
ॐ बुं अर्केशान-निवासस्थाय नमः।
ॐ बुं तर्क-शास्त्र-विशारदाय नमः।
ॐ बुं प्रशान्ताय नमः।
ॐ बुं प्रीति-संयुक्ताय नमः।
ॐ बुं प्रिय-कृते नमः।
ॐ बुं प्रिय-भाषणाय नमः॥१००॥
ॐ बुं मेधाविने नमः।
ॐ बुं माधवासक्ताय नमः।
ॐ बुं मिथुनाधिपतये नमः।
ॐ बुं सुधिये नमः।
ॐ बुं कन्या-राशि-प्रियाय नमः।
ॐ बुं काम-प्रदाय नमः।
ॐ बुं घन-फलाशाय नमः।
ॐ बुं रोहिणेयाय नमः॥१०८॥

श्रीवृहस्पति-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ वृं गुरवे नमः।
ॐ वृं गुण-वराय नमः।
ॐ वृं गोप्त्रे नमः।
ॐ वृं गोचराय नमः।
ॐ वृं गो-पति-प्रियाय नमः।
ॐ वृं गुणिने नमः।
ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः।
ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः।
ॐ वृं अव्ययाय नमः।
ॐ वृं जेत्रे नमः॥१०॥
ॐ वृं जयन्ताय नमः।
ॐ वृं जयदाय नमः।
ॐ वृं जीवाय नमः।
ॐ वृं अनन्ताय नमः।
ॐ वृं जयावहाय नमः।
ॐ वृं आङ्गीरसाय नमः।
ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः।
ॐ वृं विविक्ताय नमः।
ॐ वृं अध्वर-कृत्-पराय नमः।
ॐ वृं वाचस्पतये नमः॥२०॥
ॐ वृं वशिने नमः।
ॐ वृं वश्याय नमः।
ॐ वृं वरिष्ठाय नमः।
ॐ वृं वाग्-विचक्षणाय नमः।
ॐ वृं चित्त-शुद्धि-कराय नमः।
ॐ वृं श्रीमते नमः।
ॐ वृं चैत्राय नमः।
ॐ वृं चित्र-शिखण्डिजाय नमः।
ॐ वृं बृहद्रथाय नमः।
ॐ वृं बृहद्-भानवे नमः॥३०॥
ॐ वृं वृहस्पतये नमः।
ॐ वृं अभीष्टदाय नमः।
ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः।
ॐ वृं सुर-कार्य-हित-कराय नमः।
ॐ वृं गीर्वाण-पोषकाय नमः।
ॐ वृं धन्याय नमः।
ॐ वृं गीष्पतये नमः।
ॐ वृं गिरीशाय नमः।
ॐ वृं अनघाय नमः॥४०॥
ॐ वृं धीवराय नमः।
ॐ वृं दिव्य-भूषणाय नमः।
ॐ वृं देव-पूजिताय नमः।
ॐ वृं धनुर्धराय नमः।
ॐ वृं दैत्य-हन्त्रे नमः।
ॐ वृं दया-साराय नमः।
ॐ वृं दया-कराय नमः।
ॐ वृं दारिद्र्य-विनाशनाय नमः।
ॐ वृं धन्याय नमः।
ॐ वृं धिषणाय नमः॥५०॥
ॐ वृं दक्षिणायन-सम्भवाय नमः।
ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः।

ॐ वृं देवाय नमः।
ॐ वृं धनुर्बाण-धराय नमः।
ॐ वृं हरये नमः।
ॐ वृं अङ्गीरसाब्द-सञ्जाताय नमः।
ॐ वृं अंगिरस-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ वृं सिन्धु-देशाधिपाय नमः।
ॐ वृं धी-मते नमः।
ॐ वृं स्वर्ण-कायाय नमः॥६०॥
ॐ वृं चतुर्भुजाय नमः।
ॐ वृं हेमाङ्गदाय नमः।
ॐ वृं हेम-वपुषे नमः।
ॐ वृं हेम-भूषण-भूषिताय नमः।
ॐ वृं पुष्य-नाथाय नमः।
ॐ वृं पुष्य-राग-मणि-मण्डन-मण्डिताय नमः।
ॐ वृं काश-पुष्प-समानाभाय नमः।
ॐ वृं कलि-दोष-निवारकाय नमः।
ॐ वृं इन्द्रादि-देव-देवेशाय नमः।
ॐ वृं देवताऽभीष्ट-दायकाय नमः॥७०॥
ॐ वृं असमान-बलाय नमः।
ॐ वृं सत्त्व-गुण-सम्पद्विभावसवे नमः।
ॐ वृं भूसुराभीष्ट-फलदाय नमः।
ॐ वृं भूरि-यशसे नमः।
ॐ वृं पुण्य-विवर्धनाय नमः।
ॐ वृं धर्म-रूपाय नमः।
ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः।
ॐ वृं धनदाय नमः।
ॐ वृं धर्म-पालनाय नमः।
ॐ वृं सर्व-देवतार्थ-तत्त्वज्ञाय नमः॥८०॥

ॐ वृं सर्वापद्-विनिवारकाय नमः।
ॐ वृं सर्व-पाप-प्रशमनाय नमः।
ॐ वृं स्व-मतानुगतामराय नमः।
ॐ वृं ऋग्वेद-पारगाय नमः।
ॐ वृं सदानन्दाय नमः।
ॐ वृं सत्य-सन्धाय नमः।
ॐ वृं सत्य-सङ्कल्प-मानसाय नमः।
ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्व-वेदान्त-विदुषे नमः॥९०॥
ॐ वृं ब्रह्म-पुत्राय नमः।
ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः।
ॐ वृं ब्रह्म-विद्या-विशारदाय नमः।
ॐ वृं समानाधिक-निर्मुक्ताय नमः।
ॐ वृं सर्व-लोक-वशंकराय नमः।
ॐ वृं सुरासुर-गन्धर्व-वन्दिताय नमः।
ॐ वृं सत्य-भाषणाय नमः।
ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
ॐ वृं दयावते नमः।
ॐ वृं शुभ-लक्षणाय नमः॥१००॥
ॐ वृं लोक-त्रय-गुरवे नमः।
ॐ वृं श्रीमते नमः।
ॐ वृं सर्वगाय नमः।
ॐ वृं सर्वतो-विभवे नमः।
ॐ वृं सर्वेशाय नमः।
ॐ वृं सर्वदा तुष्टाय नमः।
ॐ वृं सर्वगाय नमः।
ॐ वृं सर्व-पूजिताय नमः॥१०८॥

श्रीशुक्र-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ शुं शुक्राय नमः।
ॐ शुं शुचये नमः।
ॐ शुं शुभ-गुणाय नमः।
ॐ शुं शुभदाय नमः।
ॐ शुं शुभ-लक्षणाय नमः।
ॐ शुं शोभनाक्षाय नमः।
ॐ शुं शुभ-ग्रहाय नमः।
ॐ शुं शुभ्र-वाहाय नमः।
ॐ शुं शुद्ध-स्फटिक-भास्वराय नमः।
ॐ शुं दीनार्ति-हराय नमः॥१०॥
ॐ शुं दैत्य-गुरवे नमः।
ॐ शुं देवाभिनन्दिताय नमः।
ॐ शुं काव्यासक्ताय नमः।
ॐ शुं काम-पालाय नमः।
ॐ शुं कवये नमः।
ॐ शुं कल्याण-दायकाय नमः।
ॐ शुं भद्र-मूर्तये नमः।
ॐ शुं भद्र-गुणाय नमः।
ॐ शुं भार्गवाय नमः।
ॐ शुं भक्त-पालनाय नमः॥२०॥
ॐ शुं भोगदाय नमः।
ॐ शुं भुवनाध्यक्षाय नमः।
ॐ शुं चारु-शीलाय नमः।
ॐ शुं चारु-चन्द्र-निभाननाय नमः।
ॐ शुं निधये नमः।
ॐ शुं निखिल-शास्त्रज्ञाय नमः।
ॐ शुं नीति-विद्या-धुरन्धराय नमः।
ॐ शुं सर्व-लक्षण-सम्पन्नाय नमः।
ॐ शुं सर्व-पूजिताय नमः।
ॐ शुं सर्वावगुण-वर्जिताय नमः॥३०॥
ॐ शुं समानाधिक-निर्मुक्ताय नमः।
ॐ शुं सकलागम-पारगाय नमः।
ॐ शुं भृगवे नमः।
ॐ शुं भोग-कराय नमः।
ॐ शुं भूसुर-पालन-तत्पराय नमः।
ॐ शुं मनस्विने नमः।
ॐ शुं मानदाय नमः।
ॐ शुं मान्याय नमः।
ॐ शुं मायातीताय नमः।
ॐ शुं महाशयाय नमः॥४०॥
ॐ शुं बलि-प्रसन्नाय नमः।
ॐ शुं अभयदाय नमः।
ॐ शुं बलिने नमः।
ॐ शुं बल-पराक्रमाय नमः।
ॐ शुं भव-पाश-परित्यागाय नमः।
ॐ शुं बलि-बन्ध-विमोचनाय नमः।
ॐ शुं धनाशयाय नमः।
ॐ शुं धनाध्यक्षाय नमः।
ॐ शुं कम्बु-ग्रीवाय नमः।
ॐ शुं कला-धराय नमः॥५०॥
ॐ शुं कारुण्य-रस-पूर्णाय नमः।
ॐ शुं कल्याण-गुण-वर्धनाय नमः।

ॐ शुं श्वेताम्बराय नमः।
ॐ शुं श्वेत-वपुषे नमः।
ॐ शुं चतुर्भुज-समन्विताय नमः।
ॐ शुं अक्ष-माला-धराय नमः।
ॐ शुं अचिन्त्याय नमः।
ॐ शुं अक्षीण-गुण-भासुराय नमः।
ॐ शुं नक्षत्र-गण-सञ्चाराय नमः।
ॐ शुं नयदाय नमः॥६०॥
ॐ शुं नीति-मार्गदाय नमः।
ॐ शुं वर्ष-प्रदाय नमः।
ॐ शुं हृषीकेशाय नमः।
ॐ शुं क्लेश-नाश-कराय नमः।
ॐ शुं कवये नमः।
ॐ शुं चिन्तितार्थ-प्रदाय नमः।
ॐ शुं शान्ति-मते नमः।
ॐ शुं चित्त-समाधि-कृते नमः।
ॐ शुं आधि-व्याधि-हराय नमः।
ॐ शुं भूरि-विक्रमाय नमः॥७०॥
ॐ शुं पुण्य-दायकाय नमः।
ॐ शुं पुराण-पुरुषाय नमः।
ॐ शुं पूज्याय नमः।
ॐ शुं पुरुहूतादि-सन्नुताय नमः।
ॐ शुं अजेयाय नमः।
ॐ शुं विजितारातये नमः।
ॐ शुं विविधाभरणोज्ज्वलाय नमः।
ॐ शुं कुन्द-पुष्प-प्रतीकाशाय नमः।
ॐ शुं मन्द-हासाय नमः।
ॐ शुं महा-मनसे नमः॥८०॥

ॐ शुं मुक्ता-फल-समानाभाय नमः।
ॐ शुं मुक्तिदाय नमः।
ॐ शुं मुनि-सन्नुताय नमः।
ॐ शुं रत्न-सिंहासनारूढाय नमः।
ॐ शुं रथस्थाय नमः।
ॐ शुं रजत-प्रभाय नमः।
ॐ शुं सूर्य-प्राग्-देश-सञ्चाराय नमः।
ॐ शुं सुर-शत्रु-सुहृदे नमः।
ॐ शुं कशये नमः।
ॐ शुं तुला-वृषभ-राशीशाय नमः॥९०॥
ॐ शुं दुर्धराय नमः।
ॐ शुं धर्म-पालनाय नमः।
ॐ शुं भाग्यदाय नमः।
ॐ शुं भव्य-चारित्राय नमः।
ॐ शुं भव-बन्ध-विमोचनाय नमः।
ॐ शुं गौड-देशेश्वराय नमः।
ॐ शुं गोप्त्रे नमः।
ॐ शुं गुणिने नमः।
ॐ शुं गुण-विभूषणाय नमः।
ॐ शुं ज्येष्ठा-नक्षत्र-सम्भूताय नमः॥१००॥
ॐ शुं ज्येष्ठाय नमः।
ॐ शुं श्रेष्ठाय नमः।
ॐ शुं शुचि-स्थिताय नमः।
ॐ शुं अपवर्ग-प्रदाय नमः।
ॐ शुं अनन्ताय नमः।
ॐ शुं सन्तान-फल-दायकाय नमः।
ॐ शुं सर्वैश्वर्य-प्रदायकाय नमः।
ॐ शुं सर्व-गीर्वाण-सन्नुताय नमः॥१०८॥

श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ शं शनैश्चराय नमः।
ॐ शं शान्ताय नमः।
ॐ शं सर्वाभीष्ट-प्रदायिने नमः।
ॐ शं शरण्याय नमः।
ॐ शं वरेण्याय नमः।
ॐ शं सर्वेशाय नमः।
ॐ शं सैन्याय नमः।
ॐ शं सुर-वन्द्याय नमः।
ॐ शं सुर-लोक-विहारिणे नमः।
ॐ शं सुखासनोपविष्टाय नमः॥१०॥
ॐ शं सुन्दराय नमः।
ॐ शं घनाय नमः।
ॐ शं घन-रूपाय नमः।
ॐ शं घनाभरण-धारिणे नमः।
ॐ शं खद्योताय नमः।
ॐ शं मन्दाय नमः।
ॐ शं मन्द-चेष्टाय नमः।
ॐ शं महनीय-गुणात्मने नमः।
ॐ शं मर्त्य-पावन-पादाय नमः।
ॐ शं महेशाय नमः॥२०॥
ॐ शं छाया-पुत्राय नमः।
ॐ शं शर्वाय नमः।
ॐ शं शत-तूणीर-धारिणे नमः।
ॐ शं शुष्काय नमः।
ॐ शं चर-स्थिर-स्वभावाय नमः।
ॐ शं चञ्चलाय नमः।
ॐ शं नील-वर्णाय नमः।
ॐ शं नित्याय नमः।
ॐ शं नीलाञ्जन-निभाय नमः।
ॐ शं नीलाम्बर-विभूषाय नमः॥३०॥
ॐ शं निश्चलाय नमः।
ॐ शं वेद्याय नमः।
ॐ शं विधि-रूपाय नमः।
ॐ शं विरोधाधार-भूमये नमः।
ॐ शं वेदास्वाद-स्वभावाय नमः।
ॐ शं वज्र-देहाय नमः।
ॐ शं वैराग्यदाय नमः।
ॐ शं वीराय नमः।
ॐ शं वीत-रोग-भयाय नमः।
ॐ शं विपत्परं-परेशाय नमः॥४०॥
ॐ शं विश्व-वन्द्याय नमः।
ॐ शं गृध्र-वाहनाय नमः।
ॐ शं गूढाय नमः।
ॐ शं कर्माङ्गाय नमः।
ॐ शं कुरूपिणे नमः।
ॐ शं कुत्सिताय नमः।
ॐ शं गुणाढ्याय नमः।
ॐ शं गोचराय नमः।
ॐ शं अविद्या-मूल-नाशनाय नमः।
ॐ शं विद्याऽविद्या-स्वरूपिणे नमः॥५०॥
ॐ शं आयुष्य-कारणाय नमः।
ॐ शं आपदुद्धर्ते नमः।

ॐ शं विष्णु-भक्ताय नमः।
ॐ शं वशिने नमः।
ॐ शं विविधागम-वेदिने नमः।
ॐ शं विधि-स्तुत्याय नमः।
ॐ शं वन्द्याय नमः।
ॐ शं विरूपाक्षाय नमः।
ॐ शं वरिष्ठाय नमः।
ॐ शं गरिष्ठाय नमः॥६०॥
ॐ शं वज्रांकुश-धराय नमः।
ॐ शं वरदाय नमः।
ॐ शं अभय-हस्ताय नमः।
ॐ शं वामनाय नमः।
ॐ शं ज्येष्ठा-पत्नी-समेताय नमः।
ॐ शं श्रेष्ठाय नमः।
ॐ शं मित-भाषिणे नमः।
ॐ शं कष्टौघ-नाशिने नमः।
ॐ शं आर्य-पुष्टिदाय नमः।
ॐ शं स्तुत्याय नमः॥७०॥
ॐ शं स्तोत्र-कामाय नमः।
ॐ शं भक्ति-वश्याय नमः।
ॐ शं भानवे नमः।
ॐ शं भानु-पुत्राय नमः।
ॐ शं भव्याय नमः।
ॐ शं पावनाय नमः।
ॐ शं धनुर्मण्डल-संस्थिताय नमः।
ॐ शं धनदाय नमः।
ॐ शं धनुष्मते नमः।
ॐ शं तनु-प्रकाश-देहाय नमः॥८०॥
ॐ शं तामसाय नमः।
ॐ शं अशेष-जन-वन्द्याय नमः।
ॐ शं विशेष-फल-दायिने नमः।
ॐ शं वशीकृत-जनेशाय नमः।
ॐ शं पशूनां पतये नमः।
ॐ शं खेचराय नमः।
ॐ शं घन-नीलाम्बराय नमः।
ॐ शं काठिन्य-मानसाय नमः।
ॐ शं आर्य-गण-स्तुताय नमः।
ॐ शं नीलच्छत्राय नमः॥९०॥
ॐ शं नित्याय नमः।
ॐ शं निर्गुणाय नमः।
ॐ शं गुणात्मने नमः।
ॐ शं निरामयाय नमः।
ॐ शं निन्द्याय नमः।
ॐ शं वन्दनीयाय नमः।
ॐ शं धीराय नमः।
ॐ शं दिव्य-देहाय नमः।
ॐ शं दीनार्ति-हरणाय नमः।
ॐ शं दैन्य-नाशनाय नमः॥१००॥
ॐ शं आर्य-जन-गण्याय नमः।
ॐ शं क्रूराय नमः।
ॐ शं क्रूर-चेष्टाय नमः।
ॐ शं काम-क्रोध-कराय नमः।
ॐ शं कलत्र-पुत्र-शत्रुत्व-कारणाय नमः।
ॐ शं परितोषित-भक्ताय नमः।
ॐ शं पर-भीति-हराय नमः।
ॐ शं भक्त-सङ्घ-मनोभीष्ट-फलदाय नमः॥१०८

श्रीराहु-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ रां राहवे नमः।
ॐ रां सैंहिकेयाय नमः।
ॐ रां विदु-तुन्दाय नमः।
ॐ रां सुर-शत्रवे नमः।
ॐ रां तमसे नमः।
ॐ रां प्रणये नमः।
ॐ रां गार्ग्याननाय नमः।
ॐ रां सुरागवे नमः।
ॐ रां नील-जीमूत-सङ्काशाय नमः।
ॐ रां चतुर्भुजाय नमः॥१०॥
ॐ रां खड्ग-खेटक-धारिणे नमः।
ॐ रां वर-दायक-हस्ताय नमः।
ॐ रां शूलायुधाय नमः।
ॐ रां मेघ-वर्णाय नमः।
ॐ रां कृष्ण-ध्वज-पताक-वते नमः।
ॐ रां दक्षिणाशा-मुखस्थाय नमः।
ॐ रां तीक्ष्ण-दंष्ट्राकराय नमः।
ॐ रां शूर्पाकारासनस्थाय नमः।
ॐ रां गोमेदाभरण-प्रियाय नमः।
ॐ रां माष-प्रियाय नमः॥२०॥
ॐ रां काश्यपर्षि-नन्दनाय नमः।
ॐ रां भुजगेश्वराय नमः।
ॐ रां उल्का-पातयित्रे नमः।
ॐ रां शूल-निधिपाय नमः।
ॐ रां कृष्ण-सर्प-राज्ञे नमः।
ॐ रां वृष-त्वरा-व्रतास्थाय नमः।
ॐ रां अर्ध-शरीराय नमः।
ॐ रां जाड्य-प्रदाय नमः।
ॐ रां रवीन्दु-भीकराय नमः।
ॐ रां छाया-स्वरूपिणे नमः॥३०॥
ॐ रां कठिनाङ्गाय नमः।
ॐ रां द्विष-चक्र-भेदकाय नमः।
ॐ रां करालास्याय नमः।
ॐ रां भयङ्कराय नमः।
ॐ रां क्रूर-कर्मणे नमः।
ॐ रां तमो-रूपाय नमः।
ॐ रां श्यामात्मने नमः।
ॐ रां नील-लोहिताय नमः।
ॐ रां किरीटिने नमः।
ॐ रां नील-वसनाय नमः॥४०॥
ॐ रां शनि-सामन्त-वर्त्मगाय नमः।
ॐ रां चाण्डाल-वर्णाय नमः।
ॐ रां आत्मर्क्ष-भवाय नमः।
ॐ रां मेष-भवाय नमः।
ॐ रां शनि-वत्-फलदाय नमः।
ॐ रां शूलाय नमः।
ॐ रां अपसव्य-गतये नमः।
ॐ रां उप-राग-कराय नमः।
ॐ रां सूर्येन्दुच्छवि-ह्लाद-कराय नमः।
ॐ रां नील-पुष्प-विहाराय नमः॥५०॥
ॐ रां ग्रह-श्रेष्ठाय नमः।
ॐ रां अष्टम-ग्रहाय नमः।

ॐ रां कबन्ध-मात्र-देहाय नमः।
ॐ रां यातुधान-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ रां गोविन्द-वर-पात्राय नमः।
ॐ रां देव-जाति-प्रविष्टकाय नमः।
ॐ रां क्रूराय नमः।
ॐ रां घोराय नमः।
ॐ रां शनेर्मित्राय नमः।
ॐ रां शुक्र-मित्राय नमः॥६०॥
ॐ रां अगोचराय नमः।
ॐ रां मौनये नमः।
ॐ रां गङ्गा-स्नान-दात्रे नमः।
ॐ रां स्व-गृहे भू-बलाढ्याय नमः।
ॐ रां स्व-गृहेऽन्य-बल-हृते नमः।
ॐ रां मातामह-कारकाय नमः।
ॐ रां चन्द्र-युत-चाण्डाल-जन्म-सूचकाय नमः।
ॐ रां जन्म-सिंहाय नमः।
ॐ रां राज्य-दात्रे नमः।
ॐ रां महा-कायाय नमः॥७०॥
ॐ रां जन्म-कर्त्रे नमः।
ॐ रां राज्य-धात्रे नमः।
ॐ रां मत्तका-ज्ञानदाय नमः।
ॐ रां जन्मकान्या-राज्य-दात्रे नमः।
ॐ रां जन्म-हानिदाय नमः।
ॐ रां नवमे पित्र-रोगाय नमः।
ॐ रां पञ्चमे शोक-दायकाय नमः।
ॐ रां द्यूने कलत्र-हन्त्रे नमः।
ॐ रां सप्तमे कलह-प्रदाय नमः।
ॐ रां षष्ठे वित्त-दात्रे नमः॥८०॥

ॐ रां चतुर्थे वैर-दात्रे नमः।
ॐ रां नवमे पाप-दात्रे नमः।
ॐ रां दशमे शोक-दात्रे नमः।
ॐ रां आदौ यशः-प्रदात्रे नमः।
ॐ रां अन्ते वैर-प्रदात्रे नमः।
ॐ रां कलात्मने नमः।
ॐ रां गो-चराचराय नमः।
ॐ रां धने ककुत्-प्रदाय नमः।
ॐ रां पञ्चमे दृषद्-शृङ्गदाय नमः।
ॐ रां स्वर्भानवे नमः॥९०॥
ॐ रां बलिने नमः।
ॐ रां महा-सौख्य-प्रदात्रे नमः।
ॐ रां चन्द्र-वैरिणे नमः।
ॐ रां शाश्वताय नमः।
ॐ रां सूर-शत्रवे नमः।
ॐ रां पाप-ग्रहाय नमः।
ॐ रां पूज्यकाय नमः।
ॐ रां पाठीर-पुर-नाथाय नमः।
ॐ रां पैठीनस-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ रां भक्त-रक्षाय नमः॥१००॥
ॐ रां राहु-मूर्तये नमः।
ॐ रां सर्वाभीष्ट-फल-प्रदाय नमः।
ॐ रां दीर्घाय नमः।
ॐ रां कृष्णाय नमः।
ॐ रां अशिरसे नमः।
ॐ रां विष्णु-नेत्रारये नमः।
ॐ रां देवाय नमः।
ॐ रां दानवाय नमः॥१०८॥

श्रीकेतु-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ कें केतवे नमः।
ॐ कें स्थूल-शिरसे नमः।
ॐ कें शिरो-मात्राय नमः।
ॐ कें ध्वजाकृतये नमः।
ॐ कें नव-ग्रह-युताय नमः।
ॐ कें सिंहिका-गर्भ-सम्भवाय नमः।
ॐ कें महा-भीति-कराय नमः।
ॐ कें चित्र-वर्णाय नमः।
ॐ कें पिङ्गलाय नमः।
ॐ कें फल-धूम्र-सङ्काशाय नमः॥१०॥
ॐ कें तीक्ष्ण-दंष्ट्राय नमः।
ॐ कें महोरगाय नमः।
ॐ कें रक्त-नेत्राय नमः।
ॐ कें चित्र-कारिणे नमः।
ॐ कें महासुराय नमः।
ॐ कें तीव्रकोपाय नमः।
ॐ कें पाप-कण्टकाय नमः।
ॐ कें क्रोध-निधये नमः।
ॐ कें छाया-ग्रह-विशेषकाय नमः।
ॐ कें अन्त्य-ग्रहाय नमः॥२०॥
ॐ कें महा-शीर्षाय नमः।
ॐ कें सूर्यारये नमः।
ॐ कें पुष्प-वत्-ग्रहिणे नमः।
ॐ कें वर-हस्ताय नमः।
ॐ कें गदा-पाणये नमः।
ॐ कें चित्र-शुभ्र-धराय नमः।
ॐ कें चित्र-ध्वज-पताकाय नमः।
ॐ कें घोराय नमः।
ॐ कें चित्र-रथाय नमः।
ॐ कें शिखिने नमः॥३०॥
ॐ कें कुलुत्थ-भक्षकाय नमः।
ॐ कें वैडूर्याभरणाय नमः।
ॐ कें उत्पात-जनकाय नमः।
ॐ कें शुक्र-मित्राय नमः।
ॐ कें मन्द-सखाय नमः।
ॐ कें शिखिनेनापकाय नमः।
ॐ कें अन्तर्वेदिने नमः।
ॐ कें ईश्वराय नमः।
ॐ कें जैमिनि-गोत्रजाय नमः।
ॐ कें चित्रगुप्तात्मने नमः॥४०॥
ॐ कें दक्षिण-मुखाय नमः।
ॐ कें मुकुन्द-वर-पात्राय नमः।
ॐ कें असुर-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ कें घन-वर्णाय नमः।
ॐ कें लम्ब-देहाय नमः।
ॐ कें मृत्यु-पुत्राय नमः।
ॐ कें उत्पात-रूप-धराय नमः।
ॐ कें अदृश्याय नमः।
ॐ कें कालाग्नि-सन्निभाय नमः।
ॐ कें नर-पीठकाय नमः॥५०॥
ॐ कें ग्रह-कारिणे नमः।
ॐ कें सर्वोपद्रव-कारकाय नमः।

ॐ कें चित्र-प्रसूताय नमः।
ॐ कें अनलाय नमः।
ॐ कें सर्व-व्याधि-नाशनाय नमः।
ॐ कें अपसव्य-प्रचारिणे नमः।
ॐ कें नवमे पापदाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे शोकदाय नमः।
ॐ कें उपराग-गोचराय नमः।
ॐ कें पुरुष-कर्मणे नमः॥६०॥
ॐ कें तुरीये सुख-प्रदाय नमः।
ॐ कें तृतीये वैरदाय नमः।
ॐ कें पाप-ग्रहाय नमः।
ॐ कें स्फोट-कारकाय नमः।
ॐ कें प्राण-नाथाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे श्रम-कारकाय नमः।
ॐ कें द्वितीये स्फुट-वाक्-दात्रे नमः।
ॐ कें विषाकुलित-वक्त्रकाय नमः।
ॐ कें काम-रूपिणे नमः।
ॐ कें सिंह-दन्ताय नमः॥७०॥
ॐ कें सत्येऽप्यनृत-वते नमः।
ॐ कें चतुर्थे मातृ-नाशनाय नमः।
ॐ कें नवमे पितृ-नाशनाय नमः।
ॐ कें अन्ते वैर-प्रदाय नमः।
ॐ कें सुता-नन्दन-बन्धकाय नमः।
ॐ कें सर्पाक्षि-जाताय नमः।
ॐ कें अनङ्गाय नमः।
ॐ कें कर्म-राश्युद्भवाय नमः।
ॐ कें उपान्ते कीर्तिदाय नमः।
ॐ कें सप्तमे कलह-प्रियाय नमः॥८०॥

ॐ कें अष्टमे व्याधि-कर्त्रे नमः।
ॐ कें धने बहु-सुख-प्रदाय नमः।
ॐ कें जनने रोगदाय नमः।
ॐ कें ऊर्ध्व-मूर्धजाय नमः।
ॐ कें ग्रह-नायकाय नमः।
ॐ कें पाप-दृष्टये नमः।
ॐ कें खेचराय नमः।
ॐ कें शाम्भवाय नमः।
ॐ कें अशेष-जन-पूजिताय नमः।
ॐ कें शाश्वताय नमः॥९०॥
ॐ कें नटाय नमः।
ॐ कें शुभाशुभ-फल-प्रदाय नमः।
ॐ कें धूम्राय नमः।
ॐ कें सुधा-पायिने नमः।
ॐ कें अजिताय नमः।
ॐ कें भक्त-वत्सलाय नमः।
ॐ कें सिंहासनाय नमः।
ॐ कें केतु-मूर्तये नमः।
ॐ कें रवीन्दु-द्युति-नाशकाय नमः।
ॐ कें अमराय नमः॥१००॥
ॐ कें पीडकाय नमः।
ॐ कें अमर्त्याय नमः।
ॐ कें विष्णु-दृष्टाय नमः।
ॐ कें असुरेश्वराय नमः।
ॐ कें भक्त-रक्षाय नमः।
ॐ कें वैचित्र्य-कपोत-स्यन्दनाय नमः।
ॐ कें विचित्र-फल-दायिने नमः।
ॐ कें भक्ताभीष्ट-फल-प्रदाय नमः॥१०८॥

अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रों द्वारा 'पूजन-तर्पण-होम'

अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रों द्वारा यदि '**पूजन**' करना हो, तो प्रत्येक '**नाम-मन्त्र**' के अन्त में '**नमः**' के स्थान पर '**पूजयामि नमः**' जोड़ना चाहिए। उदाहरण के रूप में **श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली** के प्रारम्भ के पाँच '**नाम-मन्त्रों**' को पूजन हेतु निम्न प्रकार से परिवर्तित करना होगा– **(१) ॐ ह्रीं अरुणाय पूजयामि नमः, (२) ॐ ह्रीं शरण्याय पूजयामि नमः, (३) ॐ ह्रीं करुणा-रस-सिन्धवे पूजयामि नमः, (४) ॐ ह्रीं असमान-बलाय पूजयामि नमः, (५) ॐ ह्रीं आर्त-रक्षकाय पूजयामि नमः।**

'**पूजन**' करने के लिए सामान्यतया '**रक्त**'-**चन्दन** एवं '**पुष्प**'-**मिश्रित अक्षत** का प्रयोग होता है। दाहिने हाथ की अनामिका एवं अँगुष्ठ के द्वारा, किसी पात्र में पूजन के भाव से, **चन्दन-पुष्प-मिश्रित अक्षतों** को प्रत्येक **चतुर्थ्यन्त-नाम** को '**पूजयामि नमः**' के साथ बोलते हुए अर्पित करना चाहिए।

सूर्यादि नव-ग्रहों के पूजन आदि के लिए कुछ विशेष प्रकार के पुष्पों का उल्लेख भी हुआ है। यदि ऐसे पुष्प प्रचुर मात्रा में सहज रूप में मिल सकें, तो निश्चित रूप से इन पुष्पों से पूजन कर लाभ उठाना चाहिए।

'**पूजन**' के बाद पूजा के भाव से अर्पित किए गए '**चन्दन-पुष्प-अक्षत**' को एकत्रित कर नदी में प्रवाहित करना चाहिए अथवा किसी पवित्र वृक्ष की जड़ में डाल देना चाहिए। इस प्रकार विधि-वत् पूजन करने से ही '**विपरीत ग्रह**' अनुकूल होते हैं और कष्टों का निवारण होता है।

'**नाम-मन्त्रों**' द्वारा यदि '**तर्पण**' करना हो, तो प्रत्येक '**नाम-मन्त्र**' के अन्त में '**नमः**' के स्थान पर '**तर्पयामि नमः**' जोड़ना चाहिए। यदि '**पूजन और तर्पण**' एक साथ (दाहिने हाथ से 'पूजन' और बाँएँ हाथ से 'तर्पण') करना हो, तो '**पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः**' जोड़ना चाहिए।

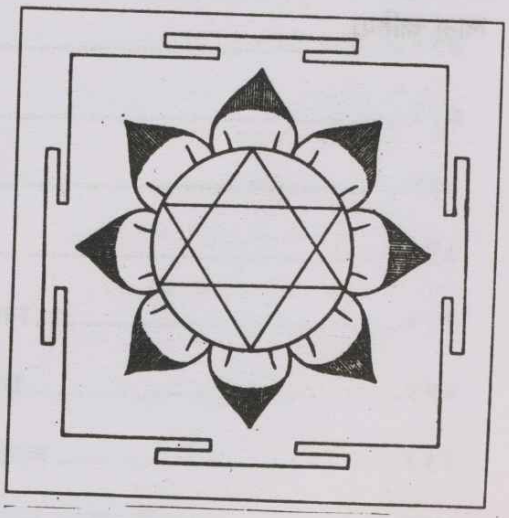

'**तर्पण**' हेतु तन्त्र-ग्रन्थों में निर्देश है कि '**मधु**' से तर्पण करें, तो उससे सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। 'नील-तन्त्र' के अनुसार आयुष्य की कामना हो, तो '**घृत**' से, आरोग्य-लाभ की कामना हो, तो '**दुग्ध**' से तर्पण करना चाहिए। सभी कामनाओं की सिद्धि के लिए '**नारिकेल-जल**' से तर्पण करना चाहिए। केवल '**उष्ण-जल**' से तर्पण करे, तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

'**पूजन और तर्पण**' नव-ग्रहों के चित्रों के सामने एक थाली रखकर भी कर सकते हैं और एक थाली में लाल चन्दन आदि से '**यन्त्र**' बनाकर उसमें भी कर सकते हैं।

'नाम-मन्त्रों' द्वारा यदि 'हवन' करना हो, तो प्रत्येक 'नाम-मन्त्र' के अन्त में 'नमः' के स्थान पर 'नमः स्वाहा' जोड़ना चाहिए।

'विद्या'-कामना में मधु-युक्त पद्मों से, 'धन'-कामना में मधु-युक्त स-तिल घृत से, 'राज-सत्ता-वशीकरण' में बन्धूक-पुष्पों से, 'नारी-आकर्षण' में लवण-युक्त घृत से, 'सौभाग्य-लाभ-कामना' में वकुल-पुष्पों से, 'पुष्टि-लाभ-कामना' में मल्लिका, जाती, पुन्नाग, कदम्ब-पुष्पों से होम करना चाहिए। चन्दन, अगुरु, कुंकुम, कर्पूर से हवन करें, तो अभीष्ट कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

'नव-ग्रहों' की प्रसन्नता के सन्दर्भ में 'होम' में विशिष्ट वनौषधियों का भी प्रयोग होता है। यथा- (१) श्रीसूर्य हेतु 'आक' की समिधा। (२) श्रीचन्द्र हेतु 'पलाश' की समिधा। (३) श्रीमङ्गल हेतु 'खदिर-काष्ठ' की समिधा। (४) श्रीबुध हेतु 'अपामार्ग' की समिधा। (५) श्रीवृहस्पति हेतु 'अश्वत्थ-काष्ठ' की समिधा। (६) श्रीशुक्र हेतु 'उदुम्बर' (गूलर) की समिधा। (७) श्रीशनि हेतु 'शमी' की समिधा। (८) श्रीराहु हेतु 'दूर्वा', 'पद्म-काष्ठ' की समिधा। (९) श्रीकेतु हेतु 'कुश' की समिधा।

'होम' करने के लिए होमाग्नि की प्रतिष्ठा 'होम' की सामान्य विधि के अनुसार करना चाहिए। 'होम' करने के बाद राख आदि को या तो विधिवत् विसर्जित कर देना चाहिए अथवा अपने मार्ग-दर्शक द्वारा बतायी गई विशेष प्रक्रिया के अनुसार प्रयोग में लाना चाहिए।

★★★

नव-ग्रह-साधना

(६)

नव-ग्रह 'वार'-व्रत-विधि एवं कुछ विशिष्ट प्रयोग

सूर्यादि-ग्रहों को अनुकूल करने के लिए व्रतों का विधान भी है। यहाँ ग्रहों के लिए 'व्रत-विधि'–'मन्त्र', 'हवन' आदि के सहित प्रस्तुत है। साथ ही 'आदित्य-हृदय', 'नव-ग्रह-यन्त्र -प्रयोग' जैसे विधान भी दिए जा रहे हैं। आशा है कि इच्छुक बन्धुओं को इससे विशेष लाभ होगा।–सं०

१. 'सूर्य'-ग्रह हेतु 'रवि-वार का व्रत' ११४

२. 'चन्द्र'-ग्रह हेतु 'सोम-वार का व्रत' ११४

३. 'मङ्गल'-ग्रह हेतु 'मङ्गल-वार का व्रत' ११५

४. 'बुध'-ग्रह हेतु 'बुध-वार का व्रत' ११६

५. 'गुरु'-ग्रह हेतु 'गुरु-वार का व्रत' ११६

६. 'शुक्र'-ग्रह हेतु 'शुक्र-वार का व्रत' ११७

७. 'शनि'-ग्रह हेतु 'शनि-वार का व्रत' ११८

८. 'राहु' एवं 'केतु'-ग्रह हेतु कुछ उपाय ११८

९. सर्व-रोग-नाशक श्रीसूर्य-स्तव-राज-स्तोत्र-विधान ११९

१०. पद्म-पुराणोक्त नीरोग-कारी आदित्य-हृदय-प्रयोग १२०

११. वाल्मीक-रामायणोक्त शत्रु-विनाशक आदित्य-हृदय १२२

१२. ऋण, रोग, दुर्घटना, तनाव, वैमनस्य-नाशक मङ्गल-स्तोत्र-विधान १२४

१३. नव-ग्रह-यन्त्र-साधना १२७

★★★

नव-ग्रह 'वार'-व्रत-विधि

(१) 'सूर्य'-ग्रह हेतु 'रविवार का व्रत'

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'सूर्य'**-ग्रह अनुकूल न हों, तब **'रवि-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'रवि-वार का व्रत'** वैसे भी **सन्तान-हीन स्त्री-पुरुषों** के लिए बहुत लाभ-दायक होता है।

'रवि-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'रवि-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३१ रवि-वार** तक **'व्रत'** करना चाहिए।

'रवि-वार के व्रत' के भोजन में **नमक** नहीं खाना चाहिए। जहाँ तक हो सके, भोजन में गुड़, घी, गेहूँ का आटा और इलायची का प्रयोग करे। सूर्यास्त के एक घण्टे पूर्व भोजन **भगवान् सूर्य नारायण** को अर्पित कर करना चाहिए। भोजन के बाद कुछ देर **भजन-चिन्तन** करे तथा रात्रि में **गेहूँ-गुड़ का दान** किसी ब्राह्मण, कन्या आदि को देना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **बिल्व (बेल) की जड़** को गर्म जल में उबालकर, स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद अधिक-से-अधिक लाल रङ्ग के वस्त्र धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् सूर्य** के निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ॐ।** (११ अक्षर)।

(२) **ॐ ह्सौ श्रीं आं ग्रहादि-राजाय आदित्याय स्वाहा।** (१६ अक्षर)।

'३१ रविवार व्रत' करने बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। 'हवन' में **'अर्क'** एवं **'आम'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ या २१ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर दे। **'पूर्णाहुति'** में **इलायची, देवदारु, केशर, खश, मुलेठी, लाल फूल, कनेर, लाल वस्त्र** आदि **भगवान् सूर्य** को चढ़ाए। 'हवन' के बाद **भगवान् सूर्य** को **'अर्घ्य'** देवे, फिर 'आरती' करे।

(२) 'चन्द्र'-ग्रह हेतु 'सोमवार का व्रत'

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'चन्द्र'**-ग्रह अनुकूल न हों, तब **'सोम-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'सोम-वार का व्रत'** वैसे भी किसी विशेष मनोरथ की सिद्धि के लिए पूर्ण फल-दायक होता है।

'सोम-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'सोम-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **५४ सोम-वार तक व्रत** करना चाहिए।

'सोम-वार के व्रत' के भोजन में **नमक** नहीं खाना चाहिए। जहाँ तक हो सके भोजन में चावल, चीनी और दही का प्रयोग करना चाहिए। सूर्यास्त के आधे घण्टे पूर्व **भगवान् चन्द्र** अथवा **भगवान्**

शिव को मन-ही-मन भोजन अर्पित कर करना चाहिए तथा भोजन के बाद कुछ काल तक भगवान् की आराधना करना चाहिए। फिर रात्रि में चावल-दही किसी ब्राह्मण, कन्या आदि को **'दान'** करना चाहिए।

'व्रत'-काल में स्नान **खिरनी की जड़** को जल में उबालकर, स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद अधिकतर **श्वेत वस्त्र** धारण करना चाहिए।

'स्नान' के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् चन्द्र** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।** (११ अक्षर)।

(२) **ॐ श्रीं क्रीं हां चं चन्द्राय नमः।** (१० अक्षर)।

'५४ सोमवार व्रत' करने के बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। 'हवन' में **'पलाश'** की लकड़ी का प्रयोग करे और उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर ११ या २१ आहुतियाँ दे। **'पूर्णाहुति'** में **शङ्ख, सिप्पी, श्वेत चन्दन, स्फटिक** और **अक्षत** आदि **चन्द्र भगवान्** को अर्पण करे। रात्रि में **निशा-पति भगवान् चन्द्र** का प्रसन्न-मुख होकर दर्शन करे।

(३) 'मङ्गल'-ग्रह हेतु मङ्गल-वार का व्रत

जब **'जन्म-कुण्डली'** या **'गोचर'** के अनुसार **'मङ्गल'-ग्रह** अनुकूल न हों, तब **'मङ्गल-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'मङ्गल'-व्रत—ऋण-हर्त्ता और पुत्र-पौत्र-प्रवर्धक** होता है।

'मङ्गल-वार के व्रत' को किसी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'मङ्गल-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **४५ मङ्गल-वार तक व्रत** करना चाहिए।

'मङ्गल-वार' के व्रत में **नमक** का परहेज अत्यन्त आवश्यक है। भोजन में मसूर, गुड़ और घी के बने हुए पदार्थों को ग्रहण करना चाहिए। भोजन ठीक सूर्यास्त के समय करना चाहिए। भोजन के बाद **ऋण-हर्त्ता मङ्गल-स्तोत्र** आदि का 'पाठ' करना चाहिए। फिर रात्रि में मसूर और गुड़ का दान करना चाहिए।

'व्रत'-काल में स्नान **अनन्त-मूल** और **नाग-जिह्वा जड़** को गर्म जल में उबालकर स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। 'स्नान' के बाद **बिना सिले हुए लाल रङ्ग के वस्त्र** पहनने चाहिए।

स्नान के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् मङ्गल** के निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ॐ।** (११ अक्षर)।

(२) **ऐं ह्सौः श्रीं द्रां कं ग्रहादिपतये भौमाय स्वाहा।** (१६ अक्षर)।

'४५ मङ्गल व्रत' करने के बाद सम्भव हो तो **'हवन'** करे। 'हवन' में **'खैर' की लकड़ी** का प्रयोग करे। **११ या २१ आहुतियाँ** उक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर दे। **'पूर्णाहुति'** में **बिल्व-छाल, लाल-चन्दन, लाल फूल, माल-काङ्गनी, मौलसिरी** आदि **भगवान् मङ्गल** को अर्पित करे।

'मङ्गल'-वार के उक्त व्रत को **अभीष्ट-सिद्धि** एवं **परिवार के कष्ट-निवारण** हेतु आगे भी कर सकते हैं। यह विशेष शुभकारी है।

* * *

(४) 'बुध'-ग्रह हेतु बुध-वार का व्रत

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'बुध'**-ग्रह अनुकूल न हों, तब **'बुध-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'बुध-वार का व्रत'** वैसे भी **व्यापार में सफलता-प्रदायक** होता है।

'बुध-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'बुध-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३० बुध-वार** तक **'व्रत'** करना चाहिए।

'बुध-वार के व्रत' के भोजन में मूँग की दाल, घी के बने हुए पदार्थ का भोजन सूर्यास्त के आधे घण्टे बाद करना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **विधारा** या **वृद्ध-मूल की जड़** को गर्म जल में उबालकर, स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद अधिक-से-अधिक हरे रङ्ग के वस्त्र धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् बुध** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ॐ।** (११ अक्षर)

(२) **ॐ ह्रां क्रीं टं ग्रह-नाथाय बुधाय स्वाहा।** (१४ अक्षर)

'३० बुध-वार व्रत' करने के बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। **'हवन'** में **'अपा-मार्ग'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ या २१ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर दे। **'पूर्णाहुति'** में **अक्षत, फल, गोरोचन, मधु, मोती** और **हरे वस्त्र** आदि **भगवान् बुध** को चढ़ाए। 'हवन' के बाद **भगवान् बुध** को **'अर्घ्य'** देवे, फिर **'आरती'** करे।

* * *

(५) 'गुरु'-ग्रह हेतु गुरु-वार का व्रत

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'गुरु'**-ग्रह अनुकूल न हो, तो **'गुरु-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'गुरु-वार का व्रत'** वैसे भी **वैवाहिक सुख-सौभाग्य का प्रदायक** होता है।

'गुरु-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पथ के प्रथम गुरु-वार** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३६ गुरु-वार तक 'व्रत'** करना चाहिए।

'गुरु-वार' के व्रत के भोजन में चने की दाल, गुड़ और घी के बने पदार्थों का प्रयोग करना चाहिए। सूर्यास्त के एक घण्टे बाद भोजन करना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **भारङ्गी** या **बमनेटी की जड़** को गर्म जल में उबाल कर, स्नान

करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद **पील रङ्ग के वस्त्र** धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् बृहस्पति** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

(१) **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ॐ।** (११)

(२) **ॐ ह्रीं श्रीं खीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये ब्रीं ठः ऐं ठः श्रीं ठः स्वाहा।** (२५)

'३६ गुरु-वार व्रत' करने बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। **'हवन'** में **'अश्वत्थ'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर दे। **'पूर्णाहुति'** में **पीली सरसों, मालती का फूल, मुलेठी, मधु** और **बेसन का लड्डू गुरु-देव बृहस्पति** को अर्पित करे। 'हवन' के बाद **भगवान् बृहस्पति का ध्यान** करे और उनके **स्तोत्र** आदि का पाठ करे।

* * *

(६) 'शुक्र'-ग्रह हेतु 'शुक्र-वार का व्रत'

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'शुक्र'**-ग्रह अनुकूल न हों, तब **'शुक्र-वार का व्रत'** करना चाहिए। वैसे भी **'शुक्र-वार का व्रत'— यात्रा** और **वाद-प्रतिवाद में विजयी होने के लिए** बहुत लाभ-दायक होता है।

'शुक्र-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'शुक्र-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३० शुक्र-वार तक 'व्रत'** करना चाहिए।

'शुक्र-वार के व्रत' के भोजन में चावल, चीनी और दूध से बने पदार्थों का प्रयोग करे। सूर्यास्त के डेढ़ घण्टे बाद भोजन **भगवान्-स्वरूप शुक्रदेव** को अर्पित कर करना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **मंजीठ की जड़** को गर्म जल में उबालकर स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद अधिकतर **श्वेत-वस्त्र** धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् शुक्र देव** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।** (१० अक्षर)

(२) **ॐ ऐं जं गं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः।** (१४ अक्षर)

'३० शुक्र-वार व्रत' करने के बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। **'हवन'** में **'औडम्बर'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ या २१ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को (क्रमशः) दे। **'पूर्णाहुति'** में **इलायची, मनशिला, केशर** और **दूध भगवान् शुक्र** को अर्पित करे। **'हवन'** के बाद **'आरती'** करे तथा **गायन-वादन** करे। हो सके तो **'रात्रि-जागरण'** करे।

* * *

(७) 'शनि'-ग्रह हेतु 'शनि-वार का व्रत'

जब 'जन्म-कुण्डली' या 'गोचर' के अनुसार 'शनि'-ग्रह अनुकूल न हों अथवा 'साढ़े साती-ढैया शनि' चल रहे हों, तब 'शनि-वार का व्रत' करना चाहिए। 'शनि'- व्रत से समस्त कष्टों का निवारण होता है।

'शनि-वार के 'व्रत' को किसी भी मास में शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'शनि-वार' से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार ५१ शनि-वार तक 'व्रत' करना चाहिए।

शनि-वार के व्रत में काला अथवा नीला वस्त्र धारण करना चाहिए। भोजन में मूँग, उर्द, तेल, चावल के बने पदार्थ तथा केला-अमरूद फलों को ग्रहण करना चाहिए। भोजन सूर्यास्त के दो घण्टे बाद करना चाहिए।

'व्रत'-काल में अमल वेत और श्वेत विरौला को गर्म जल में उबालकर स्नान करनेवाले जल में डालकर स्नान करना चाहिए।

स्नान के बाद नित्य-पूजन में भगवान् शनैश्चर के निम्न-लिखित मन्त्र का ३, ५, ७, या ११ बार 'जप' करना चाहिए-

मन्त्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॐ।

उक्त मन्त्र के 'जप' के बाद एक लोटा जल में काले तिल और शक्कर को डालकर पीपल के वृक्ष की जड़ में डालना चाहिए और वहाँ तेल का 'दीपक' जलाना चाहिए।

नित्य 'हवन' हेतु घर पर अग्नि प्रज्वलित कर उक्त मन्त्र को जपते हुए १९ आहुतियाँ देनी चाहिए।

५१ शनि-वार व्रत कर लेने के बाद, जब 'व्रत' का अन्तिम शनि-वार आए, तो पूर्णाहुति देनी चाहिए। पूर्णाहुति में काले तिल का लड्डू, लोहबान, सौंफ, राई और पान भगवान् शनि-देव को अर्पित कर उक्त मन्त्र जपते हुए शमी की लकड़ी से १०८ आहुतियाँ देनी चाहिए। 'पूर्णाहुति' के बाद लोहा और स्वर्ण का दान यथा-शक्ति करना चाहिए।

इस प्रकार 'व्रत' करने से सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति प्राप्त होती है। साढ़े-साती-ढैया का दुष्प्रभाव भी दूर होता है। शत्रु पराजित होते हैं तथा वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।

★★★

(८) 'राहु, केतु'-ग्रह हेतु कुछ उपाय

'राहु, केतु'-ग्रह हेतु 'ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः', 'ॐ कें केतवे नमः' का जप, मृत्युञ्जय-मन्त्र (ॐ जूं सः) का जप, रुद्र-पाठ, श्रीबटुक-भैरव-अष्टोत्तर-शत-नाम का पाठ आदि उत्तम उपाय हैं।

गौ-माता की सेवा, चींटियों को शक्कर खिलाना तथा 'राम-नाम' लिखी हुई आंटे की गोली मछलियों को खिलाने से भी राहु-केतु के कष्टों का निवारण होता है।

★★★

सर्व-रोग-नाशक श्रीसूर्य-स्तव-राज-स्तोत्र-विधान

विनियोग–ॐ श्रीसूर्य-स्तव-राज-स्तोत्रस्य श्रीवशिष्ट ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसूर्यो देवता। सर्व-पाप-क्षय-पूर्वक-सर्व-रोगोपशमनार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–श्रीवशिष्ट-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीसूर्य-देवाय नमः हृदि। सर्व-पाप-क्षय-पूर्वक-सर्व-रोगापशमनार्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यान– ॐ रथस्थं चिन्तयेद् भानुं, द्वि-भुजं रक्त-वाससे ।
दाडिमी-पुष्प-सङ्काशं, पद्मादिभिः अलंकृतम् ।।

मानस पूजन कर स्तोत्र-पाठ करें–

ॐ विकर्तनो विवस्वांश्च, मार्तण्डो भास्करो रविः। लोक-प्रकाशकः श्रीमान्, लोक-चक्षु ग्रहेश्वरः ।।
लोक-साक्षी त्रिलोकेशः, कर्त्ता हर्त्ता तमिस्त्रहा । तपनः तापनः चैव, शुचिः सप्ताश्व-वाहनः ।।
गभस्ति - हस्तो ब्रध्नश्च, सर्व-देव-नमस्कृतः । एक-विंशतिः इत्येष, स्तव इष्टः सदा मम ।।

।। फल-श्रुति।।

श्रीः आरोग्य-करः चैव, धन-वृद्धि-यशस्करः। स्तव-राज इति ख्यातः, त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ।।
यः एतेन महा-बाहो, द्वे सन्ध्ये स्तिमितोदये। स्तौति मां प्रणतो भूत्त्वा, सर्व-पापैः प्रमुच्यते ।।
कायिकं वाचिकं चैव, मानसं यच्च दुष्कृतम् । एक-जप्येन तत् सर्वं, प्रणश्यति ममाग्रतः ।।
एक-जप्यश्च होमश्च, सन्ध्योपासनमेव च। बलि-मन्त्रोऽर्घ्य-मन्त्रश्च, धूप-मन्त्रस्तथैव च ।।
अन्न-प्रदाने स्नाने च, प्रणिपाति प्रदक्षिणे। पूजितोऽयं महा-मन्त्रः, सर्व-व्याधि-हरः शुभः ।।
एवं उक्त्वा तु भगवान्,भास्करो जगदीश्वरः । आमन्त्र्य कृष्ण - तनयं, तत्रैवान्तरधीयत ।।
सांबोऽपि स्तव-राजेन, स्तुत्वा सप्ताश्व-वाहनः । पूतात्मा नीरुजः श्रीमान्, तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान् ।।

उक्त स्तोत्र में भगवान् सूर्य के कल्याणकारी २१ नामों का उल्लेख हुआ है– १. विकर्तन, २. विवस्वान्, ३. मार्तण्ड, ४. भास्कर, ५. रवि, ६. लोक-प्रकाशक, ७. श्रीमान्, ८. लोक-चक्षु, ९. ग्रहेश्वर, १०. लोक-साक्षी, ११. त्रिलोकेश, १२. कर्ता, १३. हर्ता, १४. तमिस्त्रहा, १५. तपन, १६. तापन, १७. शुचि, १८. सप्ताश्व-वाहन, १९. गभस्ति-हस्त, २०. ब्रध्न (ब्रह्मा) और २१. सर्व-देव-नमस्कृत। इन नामों के प्रभाव से सभी प्रकार के रोग विशेषकर नेत्र-रोग, त्वचा एवं रक्त-विकार-सम्बन्धी 'कुष्ठ' जैसे असाध्य रोग दूर होते हैं। विधियाँ 'फल-श्रुति' में बताई गई हैं। गुरु-देव अथवा अनुभवी लोगों से पूछकर पाठकों को लाभ उठाना चाहिए।

★★★

श्रीपद्म-पुराणोक्त नीरोग-कारी आदित्य-हृदय-प्रयोग

शारीरिक रोगों-विशेष कर रक्त और चर्म-सम्बन्धी रोगों के निवारण करने में भगवान् सूर्य की उपासना चामत्कारिक रूप से फल देती है। इस सम्बन्ध में 'आदित्य-हृदय' का प्रयोग चिर-काल से अनुभूत चला आ रहा है। प्रयोग-कर्त्ता व्यक्ति को 'रवि-वार का व्रत' करना चाहिए। उस दिन 'नमक' का सेवन बिल्कुल न करे, मात्र फलाहार करे। शेष दिनों में भी 'नमक' कम-से-कम ले और 'चने' का विशेष रूप से सेवन करे।

'आदित्य-हृदय' का प्रयोग करने की विधि यह है कि प्रातः-काल नींद खुलते ही शैय्या पर बैठे-बैठे ही भगवान् सूर्य के बारह नामों का पाठ करे। यथा-

आदित्यः प्रथमं नाम, द्वितीयं तु दिवाकरः। तृतीयं भास्करः प्रोक्तं, चतुर्थं च प्रभा-करः ।।
पञ्चमं च सहस्त्रांशु, षष्ठं चैव त्रि-लोचनः । सप्तमं हरिदश्वं च, अष्टमं तु अहर्पतिः।।
नवमं दिन-करः प्रोक्तं, दशमं द्वादशात्मकः । एकादशं त्रि-मूर्तिश्च, द्वादशं सूर्य एव तु ।।

।। फल-श्रुति ।।

द्वादशादित्य-नामानि, प्रातः-काले पठेन्नरः । दुःस्वप्नो नश्यते तस्य, सर्व-दुःखं च नश्यति ।।
दद्रु-कुष्ट-हरं चैव, दारिद्र्यं हरते ध्रुवम् । सर्व-तीर्थ-करं चैव, सर्व-काम-फल-प्रदम् ।।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, भक्तया स्तोत्रमिदं नरः । सौख्यमायुस्तथारोग्यं, लभते मोक्षमेव च ।।

इस प्रकार स्तोत्र-पाठ कर पूर्व दिशा की ओर हाथ जोड़कर १२ नामों से भगवान् सूर्य को नमस्कार करे। यथा- १. ॐ आदित्याय नमः, २. ॐ दिवाकराय नमः, ३. ॐ भास्कराय नमः, ४. ॐ प्रभा-कराय नमः, ५. सहस्त्रांशवे नमः, ६. ॐ त्रिलोचनाय नमः,७. ॐ हरिदश्वाय नमः, ८. ॐ विभावसवे नमः, ९. ॐ दिनकराय नमः, १०. ॐ द्वादशात्मकाय नमः, ११. ॐ त्रिमूर्तये नमः, १२. ॐ सूर्याय नमः।

इसके बाद पृथ्वी को नमस्कार कर शैया से नीचे उतरे और नित्य-कर्म से निवृत्त होकर प्रातः-काल अपनी नित्योपासना के बाद निम्न प्रकार 'आदित्य-हृदय' के न्यास-प्रयोग करे। पहले हाथ जोड़कर विनियोग पढ़े। यथा-

विनियोग- ॐ अस्य श्रीआदित्य-हृदय-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीकृष्ण ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीसूर्य-नारायणो देवता, हरित-हय-रथं दिवाकरं घृणिरिति बीजं, नमो भगवते जित-वैश्वानर जात-वेदसे नमः इति शक्तिः, अंशुमानिति कीलकं, अग्नि कर्म इति मन्त्रः, मम सर्व-रोग-निवारणाय श्रीसूर्यनारायण-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इस प्रकार विनियोग पढ़कर निम्न-लिखित स्तव-पाठ द्वारा अपने शरीर में भगवान् सूर्य के तेज को व्याप्त होता हुआ अनुभव करे-

अर्कं तु मूर्ध्नि विन्यस्य, ललाटे तु रविं न्यसेत् । विन्यसेत् करयोः सूर्यं, कर्णयोश्च दिवाकरम् ।।
नासिकायां न्यसेत् भानुं, मुखे वै भास्करं न्यसेत् । पर्जन्यमोष्ठयोश्चैव, तीक्ष्णं जिह्वान्तरे न्यसेत् ।।
सुवर्ण-रेतसं कण्ठे, स्कन्धयोस्तिग्म-तेजसम् । बाह्वोस्तु पूषणं चैव, मित्रं वै पृष्ठतो न्यसेत् ।।
वरुणं दक्षिणे हस्ते, त्वष्टारं वामतः करे । हस्तावुष्ण-करः पातु, हृदयं पातु भानुमान् ।।
स्तन-भारं महा-तेजा, आदित्यमुदरे न्यसेत् । पृष्ठे त्वर्धमणं विद्यादादित्यं नाभि-मण्डले ।।

कट्यां तु विन्यसेद्धंसं, रुद्रमूर्वो विन्यसेत् । जाह्नोस्तु गोपतिं न्यस्य, सवितारं तु जङ्घयोः ।।
पादयोस्तु विवस्वन्तं, गुल्फयोश्च प्रभाकरम् । सर्वाङ्गेषु सहस्त्रांशु, दिग्-विदिक्षु भगं न्यसेत् ।।
बाह्यतस्तु तमोघ्नंसं, भगमभ्यन्तरे न्यसेत् । एष आदित्य-विन्यासो, देवानामपि दुर्लभः ।।

उक्त प्रकार **स्तव का पाठ** करते हुए निर्दिष्ट अङ्गों में **भगवान् सूर्य** के उल्लिखित नामों से '**न्यास**' करने से पाठ-कर्त्ता के सभी पापों का नाश होकर '**कुष्ट, दाद**' आदि रोगों का पूर्णतया निवारण होकर शरीर कान्ति-मान् होता है। '**न्यास**' को निम्न प्रकार भी किया जा सकता है।

मूर्ध्नि **अर्काय नमः**। ललाटे **रवये नमः**। करयोः **सूर्याय नमः**। कर्णयोः **दिवाकराय नमः**। नासिकायां **भानवे नमः**। मुखे **भास्कराय नमः**। ओष्ठयोः **पर्जन्याय नमः**। जिह्वायां **तीक्ष्णाय नमः**। कण्ठे **सुवर्ण-रेतसे नमः**। स्कन्धयोः **तिग्म-तेजसे नमः**। बाह्वोः **पूषणाय नमः**। पृष्ठे **मित्राय नमः**। दक्ष-हस्ते **वरुणाय नमः**। वाम-हस्ते **त्वष्टारं नमः**। हस्तौ **उष्ण-कराय नमः**। हृदये **भानुमते नमः**। स्तनयोः **महा-तेजसे नमः**। उदरे **आदित्याय नमः**। पृष्ठे **अर्धमणाय नमः**। नाभौ **विद्या-दादित्याय नमः**। कट्यां **हंसाय नमः**। ऊर्वोः **रुद्राय नमः**। जाह्नोः **गोपतये नमः**। जङ्घयोः **सवित्रे नमः**। पादयोः **विवस्वते नमः**। गुल्फयोः **प्रभाकराय नमः**। सर्वाङ्गे **सहस्त्रांशवे नमः**। दिग्-विदिक्षु **भगाय नमः**। बाह्ये **तमोघ्नंसाय नमः**। अभ्यन्तरे **भगाय नमः**।

उक्त प्रकार '**न्यास**' कर हाथ जोड़कर **भगवान् सूर्य** का ध्यान करे। यथा–

भास्वद्-रत्नाढ्य-मौलिः स्फुरदधर-रुचा-रञ्जितश्चारु-केशो,
भास्वान् यो दिव्य-तेजाः कर-कमल-युतः स्वर्ण-वर्णः प्रभाभिः।
विश्वाकाशावकाशो ग्रह-ग्रहण - सहितो भाति यश्चोदयाद्रौ,
सर्वानन्द - प्रदाता हरि - हर - नमितः पातु मां विश्व - चक्षुः ।।

इस प्रकार **ध्यान** कर निम्न मन्त्र से **सूर्य भगवान्** के प्रति **तीन अञ्जलि जल** किसी पात्र में **अर्घ्य**-रूप प्रदान करे–

एहि सूर्य सहस्त्रांशो, तेजो-राशिः जगत्-पते! अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्घ्यं दिवाकर!

फिर **भगवान् सूर्य** के '**मन्त्र**' का कम-से-कम **ग्यारह बार जप** करे। यथा– **ॐ घृणिः सूर्य आदित्य।**

'**मन्त्र**' का जप कर चुकने पर निम्न-लिखित '**सूर्य-स्तुति**' का पाठ हाथ जोड़कर करे–

अग्निमीले नमस्तुभ्यमीषत्-तूर्य-स्वरूपिणे । अग्न्यायाहि वीतये त्वं, नमस्ते ज्योतिषां पते ।।
शन्नो देवो नमस्तुभ्यं, जगच्चक्षुर्नमोऽस्तु ते । धवलाम्भोरुहणं, डाकिनीं श्यामल-प्रभाम् ।।
विश्व-दीप! नमस्तुभ्यं, नमस्ते जगदात्मने । पद्मासनः पद्म-करः, पद्म-गर्भ-सम-द्युतिः ।।
सप्ताश्व-रथ-संयुक्तो, द्वि-भुजो भास्करो रविः । आदित्यस्य नमस्कारं, ये कुर्वन्ति दिने दिने ।।
जन्मान्तर-सहस्त्रेषु, दारिद्र्यं नोपजायते । नमो धर्म-विपाकाय, नमः सुकृत-साक्षिणे।।
नमः प्रत्यक्ष-देवाय, भास्कराय नमो नमः ।
उदय-गिरिमुपेतं, भास्करं पद्म-हस्तं । सकल-भुवन-रत्नं, रत्न-रत्नाभिधेयम् ।।
तिमिर-करि-मृगेन्द्रं, बोधकं पद्मिनीनां । सुर-वरमभि-वन्दे, सुन्दरं विश्व-रूपम् ।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्य-भावेन, रक्षस्व परमेश्वर! ।।

।। श्रीपद्म-पुराणे श्रीकृष्णार्जुने-सम्वादे आदित्य-हृदय-स्तोत्रम् ।।

वाल्मीकीय-रामायणोक्त शत्रु-विनाशक आदित्य-हृदय

हजारों वर्षों से अनुभूत '**आदित्य-हृदय स्तोत्र**' अल्प-से-अल्प समय में सिद्धि देनेवाले प्रयोगों में से एक है। जब **भगवान् राम** रावण के साथ युद्ध करते-करते क्लान्त हो गए, तब तान्त्रिक अस्त्र-शास्त्रों के आविष्कारक **ऋषि अगस्त्य** ने आकर **भगवान् राम** से कहा कि '३ बार जल का आचमन कर, इस '**आदित्य-हृदय**' का तीन बार पाठ कर **रावण का वध** करो।' **राम** ने **तीन बार पाठ** किया, जिससे उनकी क्लान्ति मिट गई और नए उत्साह का सञ्चार हुआ। युद्ध भीषण हुआ और **रावण** मारा गया।

रविवार को जब **संक्रान्ति** हो, उस दिन **सूर्य-मन्दिर** में, **नव-ग्रह मन्दिर** में अथवा अपने घर में **सूर्य देवता** के समक्ष इस स्तोत्र का **३ बार पाठ** करें। **न्यास, विनियोगादि संक्रान्ति के ५ मिनट पूर्व** आरम्भ कर दें। ज्योतिषी या पण्डित से **संक्रान्ति का सही समय** पूछ लें कि **सूर्य** कितने बज कर कितने मिनट पर एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करेगा। प्रयोग के दिन **बिना नमक का भोजन** करे।

'**कृत्य-कल्पतरु**' (व्रत-काण्ड-१९-२०) के अनुसार १०८ बार इसका पाठ करना चाहिए। अनुभवी लोगों के अनुसार यदि केवल तीन ही पाठ करना हो, तो पहले **१०८ बार** '**गायत्री मन्त्र**' **का जप** कर ले फिर पाठ करे।

विनियोग–**ॐ अस्य आदित्य-हृदय-स्तोत्रस्य श्रीअगस्त्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीब्रह्मा देवता, ॐ बीजं, रश्मि-मते शक्तिः, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् कीलकं, अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास–**श्रीअगस्त्य-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीब्रह्मा-देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। रश्मि-मते शक्तये नमः पादयोः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् कीलकाय नमः नाभौ। अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

षडङ्ग-न्यास–**कर-न्यास** और **अङ्ग-न्यास** तीन प्रकार से किए जाते हैं। केवल प्रणव (**ॐ**) से, **गायत्री-मन्त्र** से अथवा '**रश्मि-मते नमः**' इत्यादि छः नाम-मन्त्रों से। यहाँ **नाम-मन्त्रों से न्यास** की विधि दी जाती है–

ॐ रश्मि-मते अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)। **ॐ समुद्यते** तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)। **ॐ देवासुर-नमस्कृताय** मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)। **ॐ विवस्वते** अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं)। **ॐ भास्कराय** कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्र-त्रयायं वौषट्)। **ॐ भुवनेश्वराय** कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)।

अब **गायत्री-मन्त्र** जप कर **भगवान् सूर्य** का **ध्यान** एवं **नमस्कार** कर पाठ करे–

।। पूर्व-पीठिका ।।

ततो युद्ध-परिश्रान्तं, समरे चिन्तया स्थितम् । रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा, युद्धाय समुपस्थितम् ।।
दैवतैश्च समागम्य, द्रष्टुमभ्यागतो रणम् । उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा ।।

'राम, राम, महा-बाहो! शृणु गुह्यं सनातनम् । येन सर्वानरीन् वत्स ! समरे विजयिष्यसे ।।
आदित्य-हृदयं पुण्यं, सर्व-शत्रु-विनाशनम् । जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ।।
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं, सर्व-पाप-प्रणाशनम् । चिन्ता-शोक-प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ।।
रश्मि-मन्तं समुद्यन्तं, देवासुर-नमस्कृतम् । पूजयस्व विवस्वन्तं, भास्करं भुवनेश्वरम्' ।।

।। मूल-स्तोत्र ।।

सर्व-देवात्मको ह्येष, तेजस्वी रश्मि-भावनः । एष देवासुर-गणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च, शिवः स्कन्दः प्रजा-प्रतिः । महेन्द्रो धनदः कालो, यमः सोमो ह्यपां पतिः ।।
पितरो वसवः साध्या, अश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण, ऋतु-कर्ता प्रभाकरः ।।
आदित्यः सविता सूर्यः, खगः पूषा गभस्ति-मान् । सुवर्ण-सदृशो भानुर्हिरण्य-रेता दिवाकरः ।।
हरिदश्वः सहस्रार्चिः, सप्त-सप्तिर्मरीचि-मान् । तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशु-मान् ।।
हिरण्य-गर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः । अग्नि-गर्भोऽदितेः पुत्रः, शङ्खः शिशिर-नाशनः ।।
व्योम-नाथस्तमो-भेदी, ऋग्यजुः-साम-पारगः । घन-वृष्टिरपां मित्रो, विन्ध्य-वीथी-प्लवङ्गमः ।।
आतपी मण्डली मृत्युः, पिङ्गलः सर्व-तापनः । कविर्विश्वो महा-तेजा, रक्तः सर्व-भवोद्भवः ।।
नक्षत्र-ग्रह-ताराणामधिपो विश्व-भावनः । तेजसामपि तेजस्वी, द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ।।
नमः पूर्वाय गिरये, पश्चिमायाद्रये नमः । ज्योतिर्गणानां पतये, दिनाधिपतये नमः ।।
जयाय जय-भ्रदाय, हर्यश्वाय नमो नमः । नमो नमः सहस्रांशो, आदित्याय नमो नमः ।।
नमः उग्राय वीराय, सारङ्गाय नमो नमः । नमः पद्म-प्रबोधाय, प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ।।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय, सूरायादित्य-वर्चसे । भास्वते सर्व-भक्षाय, रौद्राय वपुषे नमः ।।
तमोघ्नाय हिमघ्नाय, शत्रुघ्नायामितात्मने । कृतघ्नघ्नाय देवाय, ज्योतिषां पतये नमः ।।
तप्त-चामीकराभाय, हरये विश्व-कर्मणे । नमस्तमोऽभिनिघ्नाय, रुचये लोक-साक्षिणे ।।
नाशयत्येष वै भूतं, तमेव सृजति प्रभुः । पायत्येष तपत्येष, वर्षत्येष गभस्तिभिः ।।
एष सुप्तेषु जागर्ति, भूतेषु परि-निष्ठितः । एष चैवाग्नि-होत्रं च, फलं चैवाग्नि-होतृणाम् ।।
देवाश्च क्रतवश्चैव, क्रतूनां फलमेव च । यानि कृत्यानि लोकेषु, सर्वेषु परम-प्रभुः ।।
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु, कान्तारेषु भयेषु च । कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ! ।।
पूजयस्वैनमेकाग्रो, देव-देवं जगत्-पतिम् । एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा, युद्धेषु विजयिष्यति ।।
अस्मिन् क्षणे महा-बाहो, रावणं त्वं जहिष्यसि । एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो, जगाम स यथाऽऽगतं ।।
एतच्छ्रुत्वा महा-तेजा, नष्ट-शोकोऽभवत् तदा । धारयामास सु-प्रीतो, राघवः प्रयतात्म-वान् ।।
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं, परं हर्षमवाप्त-वान् । त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा, धनुरादाय वीर्य-वान् ।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा, जयार्थं समुपागमत् । सर्व-यत्नेन महता, वृतस्तस्य वधेऽभवत् ।।

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं, मुदित-मनाः परमं प्रहृष्य-माणः ।
निशिचर-पति-संक्षयं विदित्वा, सुर-गण-मध्य-गतो वचस्त्वरेति ।।

।। वाल्मीकीय-रामायणोक्तमादित्य-हृदयं ।।

● ऋण, रोग, दुर्घटना, तनाव, वैमनस्य-नाशक ●

मङ्गल-स्तोत्र-विधान

सौर मण्डल के नव ग्रहों में '**मङ्गल**' सर्वाधिक क्रूर ग्रह है। इसके अनुकूल न होने पर व्यक्ति को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाइयाँ अकारण, अकल्पित और आकस्मिक होती हैं। रोग हो सकता है। धन-हानि हो सकती है। ऋण हो सकता है। दुर्घटना हो सकती है। चोट लग सकती है। अङ्गच्छेद (आपरेशन) हो सकता है। मन में तनाव, वैमनस्य और सम्बन्ध-विच्छेद हो सकता है।

'**मङ्गल ग्रह**' की उपासना से ऊपर के दोषों के दूर करने और शान्ति-लाभ करने में सहायता मिलती है। इसकी उपासना का तन्त्रों में एक प्राचीन सिद्ध स्तोत्र है। इस **स्तोत्र का पाठ** प्रातः उठते ही शैया पर कर लिया जाता है। अतः इस उपासना के करने में कोई विशेष नियम या कठिनाई नहीं है। स्तोत्र छोटा है, किन्तु अत्यन्त प्रभाव-कारी और अनुभूत है। इसका पाठ करने में कठिनाई से दस मिनट लगते हैं।

'**मङ्गल-स्तोत्र**' पर आधारित '**मङ्गल ग्रह**' का '**यन्त्र**' भी होता है। यह 'यन्त्र', ताँबे का बना होता है। ताँबा '**मङ्गल ग्रह**' की धातु है। 'यन्त्र', '**त्रिकोणाकार**' होता है–**एक बड़े त्रिकोण के भीतर छोटे, सम आकार के सात त्रिकोण होते हैं, जिनमें मङ्गल के इक्कीस नाम 'प्रणव' (ॐ) और 'नमः' के साथ लिखे होते हैं।** इन इक्कीस नामों के आदि में 'प्रणव' (ॐ) और अन्त में **नमः** लगाकर–'**ॐ मङ्गलाय नमः**', '**ॐ भूमि-पुत्राय नमः**'–आदि से **रक्त-चन्दन** और **शीतल जल** द्वारा प्रत्येक नाम से इस '**यन्त्र**' **का अभिषेक** किया जाता है। यही '**यन्त्र**' **के पूजन की विधि** है। **१. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप, ५. नैवेद्य आदि पञ्चोपचार** इसके साथ होते ही हैं। '**पुष्प**'-**लाल होने चाहिए।**

ताँबे का कड़ा हाथ में पहनना, **ताँबे के पात्र** में रखे हुए जल का पान करना, या **मूँगा-रत्न** धारण करना '**मङ्गल**' की शान्ति के दूसरे उपाय हैं।

'**मङ्गल**' की शान्ति के लिए बहुत से लोग **मङ्गल-वार का व्रत** भी रखते हैं। इस व्रत में '**नमक**' नहीं खाया जाता। दिन में 'सन्ध्या'-काल में केवल एक बार ही भोजन किया जाता है।

'मङ्गल'-स्तोत्र पाठ करने की विधि

'**मङ्गल-स्तोत्र**' के पाठ में पहले उसका '**विनियोग**' पढ़ा जाता है। '**विनियोग**' को स्तोत्र का सन्दर्भ समझना चाहिए। उसमें उसके **रचयिता** और **सिद्धि-प्राप्त-कर्त्ता ऋषि** का नाम, छन्द, देवता और पाठ करने के उद्देश्य का प्रयोजन आदि सूचित किया जाता है।

'**विनियोग**' के बाद '**ऋष्यादि-न्यास**' कर '**मङ्गल देवता**' के स्वरूप का **ध्यान** किया जाता है। **रक्ताम्बर धारण किए, रक्त-वर्ण शरीरवाले, शिर पर रत्न-जटित मुकुट, मेष अर्थात् मेढ़े पर सवार, चार भुजाएँ, जिनमें क्रमशः–१. गदा, २. शक्ति, ३. त्रिशूल और ४. वर की मुद्रा है।** ऐसा स्वरूप है–'**मङ्गल ग्रह**' के अधिष्ठातृ देवता का।

यहाँ एक बात विशेष ध्यान देने की है। '**मङ्गल ग्रह**' और '**अग्नि**' के स्वरूप तथा स्वभाव में बहुत समानता है। वही **रक्ताम्बर**, वही **प्रज्वलित देह, मेष का वाहन** और **शक्ति का आयुध**–'**अग्नि**' का भी है। '**शक्ति**' ऊर्जा अर्थात् 'एनर्जी' को कहते हैं और 'एनर्जी' '**अग्नि**' का ही दूसरा नाम है। अतः इसमें सन्देह नहीं कि **मङ्गल और अग्नि दोनों में प्रकृति का साम्य है, तादात्म्य है।**

'लाल रङ्ग' में भी अपनी विशेषता है। 'लाल रङ्ग'-ऊष्मा का द्योतक है, 'ऊष्मा' प्रदान भी करता है। अतः 'लाल रङ्ग'-रक्त या चर्म-रोगों के लिए लाभ-दायक सिद्ध होता है। जन्म-जात उदासीनों को और परिवेश द्वारा पीड़ित निराशा-वादियों को 'लाल रङ्ग' मानसिक शक्ति तथा साहस प्रदान करता है। जिन महिलाओं और पुरुषों का 'मङ्गल' बली होता है, उन्हें स्वभाव से लाल रङ्ग प्रिय होता है। लाल कपड़े, लाल बिस्तर, लाल रङ्ग से पुता कमरा। **'मङ्गल' की आराधना में लाल रङ्ग के कपड़े और लाल रङ्ग के पुष्प, नैवेद्य** आदि उपचार विशेष रूप में सहायक सिद्ध होते हैं।

'मङ्गल' के 'ध्यान' के पश्चात् **'मानस-पूजा'** कर **'मङ्गल-स्तोत्र' का पाठ** किया जाता है। इस स्तोत्र में **'मङ्गल'** के अर्थ-गर्भित **इक्कीस नामों** का उल्लेख है। साधक को इन नामों का अर्थ-बोध होना चाहिए। स्तोत्र के पाठ का तभी वास्तविक लाभ होता है-तोते की तरह पढ़ लेने से नहीं। **'स्तोत्र'** के अन्त में ५ श्लोक **'पुष्पाञ्जलि'** अर्थात् **'मङ्गल' देवता को नमस्कार** के हैं। इन श्लोकों को पढ़कर **'मङ्गल'** देवता को लाल पुष्पों की अञ्जलि अर्पित करनी चाहिए।

'मङ्गल' की उत्पत्ति-कथा

'मङ्गल-स्तोत्र' पढ़ने के पूर्व **'मङ्गल'** की उत्पत्ति की कथा को जानना आवश्यक है। यह कथा **'शिव-पुराण'** की **'रुद्र-संहिता'** में है, जो इस प्रकार है-"दक्ष के यज्ञ में जब **सती** ने आत्म-दाह कर लिया, तो **भगवान् शङ्कर** शोकाकुल होकर **कैलास पर्वत** पर आ गए और समाधि लगाकर बैठ गए। असंख्य वर्ष व्यतीत हो गए, तब उनकी समाधि खुली। उस समय **भगवान् शिव** के ललाट से पसीने की बूँद पृथ्वी पर गिरी। वह बूँद तत्काल एक नव-जात शिशु के रूप में बदल गई। उस बालक के चार भुजाएँ थीं। शरीर का रङ्ग लाल था और आकृति मनोहर थी। दिव्य द्युति से युक्त वह शोभा-शाली बालक अति दुस्सह तेज से सम्पन्न था। तथापि उस समय **भगवान् शिव** के आगे वह साधारण शिशु की भाँति रोने लगा। तभी वहाँ **पृथ्वी** सुन्दर स्त्री का रूप धारण करके प्रकट हो गईं। उन्होंने उस बालक को अपनी गोद में ले लिया और उसे अपना स्तन-पान कराने लगीं। उन्होंने स्नेह से उसका मुख चूमा और अपना बालक मानकर हँस-हँसकर उसे खिलाने लगीं।

प्रसन्न होकर **भगवान् शङ्कर** बोले-हे **पृथ्वी**, तुम धन्य हो। तुम मेरे इस पुत्र का पालन करो। यह मेरे पसीने की बूँद से उत्पन्न हुआ है। तथापि इसकी ख्याति तुम्हारे पुत्र के रूप में होगी। यह **अत्यन्त बली, गुणवान्, धन और भूमि का देनेवाला होगा।**

किञ्चित् अन्तर से यही कथा **'मत्स्य-पुराण'** में भी दी हुई है। इसमें लिखा है कि **दक्ष-यज्ञ** का ध्वंस करने के लिए **वीरभद्र (मङ्गल)** की उत्पत्ति **शिव** के स्वेद-विन्दु से हुई थी। **वीरभद्र** ही पुनः भूमि से **'मङ्गल'** के रूप में उत्पन्न हुए। **'मङ्गल'** की पूजा से **प्रह्लाद** के पुत्र **विरोचन** को **रूप, सौन्दर्य** और **सौभाग्य** की प्राप्ति हुई थी।

अस्तु, **धन से पीड़ित** और **ऋण से ग्रस्त** स्त्री-पुरुषों को **'मङ्गल' का व्रत और स्तोत्र का पाठ** करना चाहिए। उन युवती स्त्रियों को भी यह पूजा करनी चाहिए, जिनका **दाम्पत्य-जीवन दुःखी** हो, उसमें दरार पड़ रही हो और एक दूसरे से दूर होने की चिन्ता दिनों दिन बढ़ती जा रही हो। यह ज्ञात होना चाहिए कि **'मङ्गल'**-शब्द का अर्थ ही है **सुख, सौभाग्य** और **कल्याण**।

ऋण-हर धन-प्रद 'मङ्गल-स्तोत्र'

१. विनियोग-ॐ अस्य भौम-स्तोत्रस्य श्रीगर्ग ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। मङ्गलो देवता। ऋण-हरणे धन-प्राप्त्यर्थे च विनियोगः।

२. ऋष्यादि-न्यास-श्रीगर्ग-ऋषये नमः शिरसि । त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । मङ्गल-देवतायै नमः हृदि । ऋण-हरणे धन-प्राप्त्यर्थे च विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

३. ध्यान- ॐ रक्ताम्बरो रक्त-वपुः किरीटी, चतुर्भुजो मेष-गतो गदा-भृत् ।
धरा-सुतः शक्ति-धरश्च शूली, सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ।।

४. स्तोत्र- ॐ मङ्गलो भूमि-पुत्रश्च, ऋण - हर्त्ता धन - प्रदः ।
स्थिरात्मजो महा-कायः, सर्व-कामार्थ-साधकः ।।१
लोहितो लोहिताङ्गश्च, सामगानां कृपा-करः ।
धरात्मजः कुजो भौमो, भूमिदो भूमि-नन्दनः ।।२
अङ्गारको यमश्चैव, सर्व - रोगापहारकः ।
वृष्टि-कर्त्ताऽपहर्त्ता च, सर्व-काम-फल-प्रदः ।।३

।। फल-श्रुति ।।

एतानि कुज-नामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य, धनं प्राप्नोति असंशयः ।।४

अङ्गारकोऽति बलवानपि यो ग्रहाणां । स्वेदोद्भवः त्रि-नयनस्य पिनाक-पाणेः ।
आरक्त-चन्दन-सुशीतल-वारिणा यः । अभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम् ।।५

५. पुष्पाञ्जलि के श्लोक-

ॐ धरणी-गर्भ-सम्भूतं, विद्युत्-कान्ति-सम-प्रभम् ।
कुमारं शक्ति - हस्तं तं, मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।१
ऋण-हर्त्रे नमस्तुभ्यं, दुःख-दारिद्र्य-नाशिने ।
नभसि द्योतमानाय, सर्व - कल्याण - कारिणे ।।२
देव - दानव - गन्धर्व - यक्ष - राक्षस - पन्नगाः ।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै, नमः धरणि - सूनवे ।।३
यो वक्र-गतिमापन्नो, नृणां दुःखं प्रयच्छति ।
पूजितः सुख-सौभाग्यं, तस्मै क्ष्मा-सूनवे नमः ।।४
प्रसादं कुरु मे नाथ ! मङ्गल - प्रद मङ्गल !
मेष-वाहन, रुद्रात्मन् ! सुखं देहि धनं यशः ।।५

६. अभिषेक के २१ मन्त्र-

१ ॐ मङ्गलाय नमः । २. ॐ भूमि-पुत्राय नमः । ३. ॐ ऋण-हर्त्रे नमः । ४. ॐ धन-प्रदाय नमः । ५. ॐ स्थिरात्मजाय नमः । ६. ॐ महा-कायाय नमः । ७. ॐ सर्व-कामार्थ-साधकाय नमः । ८. ॐ लोहिताङ्गाय नमः । ९. ॐ लोहिताक्षाय नमः । १०. ॐ सामगानां कृपा-कराय नमः । ११. ॐ धरात्मजाय नमः । १२. ॐ कुजाय नमः । १३. ॐ भौमाय नमः । १४. ॐ भूमिदाय नमः । १५. ॐ भूमिनन्दनाय नमः । १६. ॐ अङ्गारकाय नमः । १७. ॐ यमाय नमः । १८. ॐ सर्व-रोगापहारकाय नमः । १९. ॐ वृष्टि-कर्त्रे नमः । २०. ॐ वृष्ट्यपहर्त्रे नमः । २१. ॐ सर्व-काम-फल-प्रदाय नमः ।

७. होम के मन्त्र-अभिषेक के उक्त २१ मन्त्रों के अन्त में 'नमः' के स्थान पर 'स्वाहा' जोड़कर अग्नि में आहुति देना चाहिए । ❑❑❑

नव-ग्रह-यन्त्र-साधना

१. **विपरीत ग्रह** के दिन, उस ग्रह का '**यन्त्र**' लिखे। उदाहरणार्थ, यदि **सूर्य-ग्रह** विपरीत है, तो **सूर्य का १५ संख्यात्मक यन्त्र** रवि-वार को लिखे अथवा यदि **चन्द्र-ग्रह** विपरीत है, तो **चन्द्र का १८ संख्यात्मक यन्त्र** सोम-वार को लिखे। **राहु** और **केतु** के **यन्त्र** शनि-वार को लिखे।

२. **यन्त्र-'भोज-पत्र'** पर '**अष्ट-गन्ध**' से '**अनार की कलम**' द्वारा लिखे। '**अष्ट-गन्ध**' निम्न-लिखित आठ वस्तुओं से तैयार होती है–**१. केशर, २. कपूर, ३. अगर, ४. तगर, ५. कस्तूरी, ६. अम्बर, ७. गोरोचन** और **८. श्वेत या लाल चन्दन**। इन आठ वस्तुओं में यदि कोई वस्तु अप्राप्य हो, तो उसके स्थान पर '**जाय-फल**' या '**जावित्री**' ले सकते हैं।

३. **भोज-पत्र** पर उक्त प्रकार से लिखे गए '**यन्त्र**' को '**ग्रह**' के बीज-मन्त्र से **१०८ बार हवन** कर सिद्ध कर ले।

४. ग्रहों के लिए '**वीज-मन्त्र**', '**जप-संख्या**' एवं '**जप-काल**' निम्न प्रकार हैं–

ग्रह	वीज-मन्त्र	जप-संख्या	जप-काल
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः	६,०००	प्रातः
चन्द्र	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	११,०००	सायं
मङ्गल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	१०,०००	सन्ध्या
बुध	ॐ व्रां व्रीं व्रौं सः बुधाय नमः	१९,०००	सायं
गुरु	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	१९,०००	सन्ध्या
शुक्र	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः शुक्राय नमः	६,०००	सूर्योदय
शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः	२३,०००	सायं
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	१८,०००	रात्रि
केतु	ॐ म्रां म्रीं म्रौं सः केतवे नमः	७,०००	रात्रि

५. उक्त प्रकार सिद्ध हुए '**यन्त्र**' को '**ताबीज**' में रक्खे। **सूर्य** और **मङ्गल** के लिए '**ताम्र**' की, **चन्द्र** और **शुक्र** के लिए '**चाँदी**' की, **बुध** और **गुरु** के लिए '**स्वर्ण**' की तथा **शनि, राहु** और **केतु** के लिए '**लौह**' की ताबीज बनवाएँ।

६. ताबीज को **दाईं भुजा** या **गले** में धारण करें।

७. **विपरीत ग्रह-शन्ति** के लिए निम्न प्रकार **व्रत** रक्खे–**सूर्य-व्रत** : ३० रवि-वार। **चन्द्र-व्रत** : १० या ५४ सोमवार। **मङ्गल-व्रत** : २१ या ४१ भौम-वार। **बुध-व्रत** : १७ या २१ या ४५ बुधवार। **गुरु-व्रत** : १६ गुरुवार या १ य ३ वर्ष तक प्रति गुरुवार। **शुक्र-व्रत** : २१ या ३१ शुक्रवार। **शनि-व्रत** : १९ या ५१ शनिवार। **राहु-व्रत** : १८ शनि-वार। **केतु-व्रत** : ५ शनि-वार।

८. '**व्रत**' पूर्ण होने के बाद **दान** करे। ग्रहों के लिए **दान-वस्तुएँ** निम्न प्रकार हैं–

सूर्य : गेहूँ, जौ, गुड़, ताँबा, रक्त-वस्त्र, कमल, चन्दन, मूंगा।

चन्द्र : चावल, श्वेत-वस्त्र, चाँदी, शङ्ख, चन्दन, पुष्प, चीनी, मिश्री, घी, दही, मोती।

मङ्गल : ताँबा, सीसा, गेहूँ, रक्त-वस्त्र, चन्दन, पुष्प, गुड़, मसूर-दाल, मूंगा।

बुध : काँस, हाथी-दाँत, हरा-वस्त्र, पन्ना, सोना, कपूर, जौ, घी, षट्-रस भोजन ।

गुरु : पीला-वस्त्र, सोना, पुस्तक, मधु, शक्कर, छाता।

शुक्र : सोना, चाँदी, चावल, घी, श्वेत-वस्त्र, चन्दन, दही, सुगन्धित वस्तु, मिश्री।

शनि : काला वस्त्र, लोहा, काली उड़द, नीलम, सरसों-तैल, कुलथी, काले पुष्प।

राहु : अभ्रक, काला तिल, काला वस्त्र, कम्बल, तैल।

केतु : काला तिल, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्त-धान्य, कम्बल, तैल।

९. विपरीत ग्रह की शान्ति के लिए दाएँ हाथ की अँगुलियों में अँगूठी भी धारण कर सकते हैं। विभिन्न ग्रहों के लिए अँगूठी में 'नग' निम्न प्रकार होने चाहिए–

सूर्य : माणिक्य। चन्द्र : मुक्ता, चन्द्र-कान्त। मङ्गल : प्रवाल। बुध : पन्ना। गुरु : पुखराज। शुक्र : हीरा। शनि : नीलम। राहु : पिरोजा। केतु : लसुनिया।

१०. विशेष रूप में –'चन्द्र'-ग्रह हेतु भगवान् शिव की पूजा। बुध एवं गुरु के लिए अमावास्या-व्रत। शुक्र के लिए गो-सेवा, गो-पूजा। शनि के लिए महा-मृत्युञ्जय-जप, हनुमान-पूजा। राहु एवं केतु के लिए बटुक-भैरव की पूजा लाभ-कारक है। 'शनि'-ग्रह की पीड़ा दूर करने के लिए निम्न-लिखित 'श्रीशनि एवं शनि-भार्या-स्तोत्र' के नित्य तीन पाठ करने चाहिए। इससे 'शनि'-ग्रह की समस्त पीड़ा दूर होती है। और पाठ-कर्ता को सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है। यथा–

श्रीशनि एवं शनि-भार्या-स्तोत्र

यः पुरा राज्य-भ्रष्टाय, नलाय प्रददो किल। स्वप्ने शौरिः स्वयं, मन्त्रं सर्व-काम-फल-प्रदम्॥१॥
क्रोडं नीलाञ्जन-प्रख्यं, नील-जीमूत-सन्निभम्। छाया-मार्तण्ड-सम्भूतं, नमस्यामि शनैश्चरम्॥२॥
ॐ नमोऽर्क-पुत्राय शनैश्चराय, नीहार-वर्णाञ्जन-नीलकाय।
स्मृत्वा रहस्यं भुवि मानुषत्वे, फल-प्रदो मे भव सूर्य-पुत्र!॥३॥
नमोऽस्तु प्रेत-राजाय, कृष्ण-वर्णाय ते नमः। शनैश्चराय क्रूराय, सिद्धि-बुद्धि-प्रदायिने॥४॥
य एभिर्नामभिः स्तौति, तस्य तुष्टो भवाम्यहम्। मामकानां भयं तस्य, स्वप्नेष्वपि न जायते॥५॥
गार्गेयं कौशिकस्यापि, पिप्पलादो महा-मुनिः। शनैश्चर-कृता पीड़ा, न भवति कदाचन॥६॥
क्रोडस्तु पिङ्गलो बभ्रुः, कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। शौरिः शनैश्चरो मन्दः, पिप्पलादेन संयुतः॥७॥
एतानि शनि-नामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्। तस्य शौरेः कृता पीड़ा, न भवति कदाचन॥८॥
ध्वजनी धामनी चैव, कङ्काली कलह-प्रिया। कलही कण्टकी चापि, अजा महिषी तुरङ्गमा॥९॥
नामानि शनि-भार्यायाः, नित्यं जपति यः पुमान्। तस्य दुःखाः विनश्यन्ति, सुख-सौभाग्यं वर्द्धते॥१०॥

★★★

श्रीसूर्य-गायत्री-मन्त्र

ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

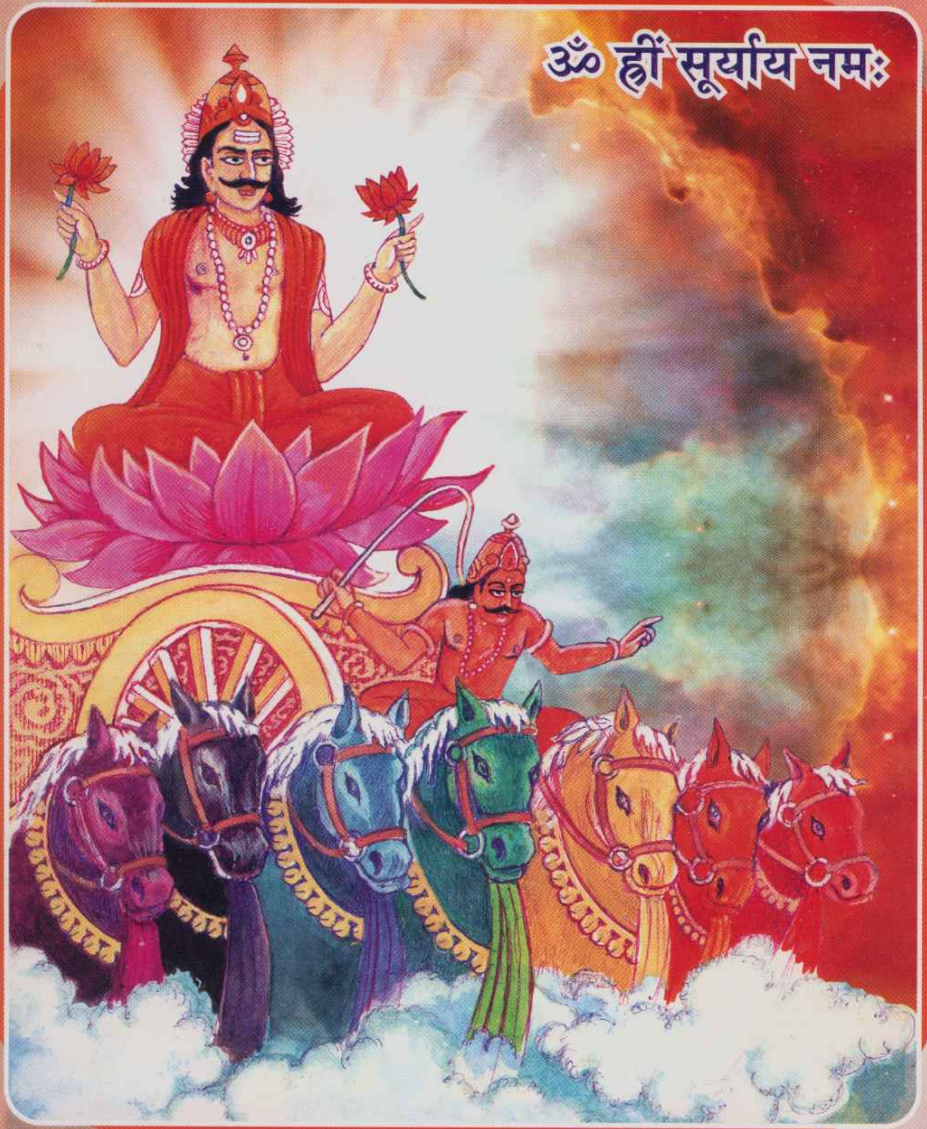

श्रीसूर्य ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ जपा-कुसुम-सङ्काशं, काश्यपेयं महा-द्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्व-पापघ्नं, प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।

ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो, लोक - रक्षण-कारकः ।
विषम - स्थान-सम्भूतां, पीडां हरतु मे रविः ।।

श्री सूर्य-यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

श्रीचन्द्र-गायत्री-मन्त्र

ॐ क्षीर-पुत्राय विद्महे अमृत-तत्त्वाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्।

श्रीचन्द्र ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ दधि-शङ्ख-तुषाराभं, क्षीरोदार्णव - सम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं, शम्भोर्मुकुट - भूषणम् ।।

ॐ रोहणीशः सुधा-मूर्तिः, सुधा-गात्रः सुधाशनः ।
विषम - स्थान-सम्भूतां, पीडां हरतु मे विधुः ।।

श्री चन्द्र-यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

श्रीमङ्गल-गायत्री-मन्त्र

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति-हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

श्रीमङ्गल ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ धरणी-गर्भ-सम्भूतं, विद्युत्-कान्ति-सम-प्रभम् ।
कुमारं शक्ति - हस्तं च, मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।
ॐ भूमि-पुत्रो महा-तेजा, जगतां भय - कृत-सदा ।
वृष्टि - कृत् वृष्टि - हर्ता च, पीडां हरतु मे कुजः ।।

श्री मङ्गल-यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

श्रीबुध-गायत्री-मन्त्र

ॐ सौम्य-रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।

श्रीबुध ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ प्रियंगु-कलिका श्यामं, रूपोणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्य-गुणोपेतं, तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ उत्पात-रूपो जगतां, चन्द्र-पुत्रो महा-द्युतिः ।
सूर्य-प्रिय-करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः ।।

श्री बुध-यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

श्रीबृहस्पति-गायत्री-मन्त्र

ॐ अङ्गि-रसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

श्रीबृहस्पति ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ देवानां च ऋषीणां च, गुरुं काञ्चन-सन्निभम्।
बुद्धि-भूतं-त्रिलोकेशं, तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
ॐ देव-मन्त्री विशालाक्षः, सदा लोक-हिते रतः।
अनेक - शिष्य-सम्पूर्णः, पीडां हरतु मे गुरुः ।।

श्री बृहस्पति-यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

श्रीशुक्र-गायत्री-मन्त्र

ॐ भृगु-वंश-जाताय विद्महे श्वेत-वाहनाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

श्रीशुक्र ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ हिम-कुन्द-मृणालाभं, दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्व-शास्त्र-प्रवक्तारं, भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ दैत्य-मन्त्री गुरुस्तेषां, प्राणदश्च महा-मतिः ।
प्रभुस्तारा-ग्रहाणां च, पीडां हरतु मे भृगुः ।।

श्री शुक्र-यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

श्रीशनि-गायत्री-मन्त्र

ॐ भग-भवाय विद्महे मृत्यु-रूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।

श्रीशनि ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ नीलाञ्जन - समाभासं, रवि - पुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया-मार्तण्ड - सम्भूतं, तं नमामि शनैश्चरम् ।।

ॐ सूर्य-पुत्रो दीर्घ-देहो, विशालाक्षः शिव-प्रियः ।
मन्द - चारः प्रसन्नात्मा, पीडां हरतु मे शनिः ।।

श्री शनि-यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

श्रीराहु-गायत्री-मन्त्र

ॐ शिरो-रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

श्रीराहु ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ अर्ध-कायं महा-दीर्घं, चन्द्रादित्य-विमर्दनम् ।
सिंहिका - गर्भ-सम्भूतं, तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ महा-शिरा महा-वक्त्रो, दीर्घ-दंष्ट्रो महा-बलः ।
अतनुश्चोर्ध्व - केशश्च, पीडां हरतु मे तमः ।।

श्री राहु-यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

श्रीकेतु-गायत्री-मन्त्र

ॐ पद्म-पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।

श्रीकेतु ध्यान एवं प्रणाम-मन्त्र

ॐ पलाश-पुष्प-सङ्काशं, तारका-ग्रह-मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं, तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ अनेक - रूप-वर्णाश्च, शत-शोभ-सहस्त्रशः ।
उत्पात-रूपो जगतां, पीडां हरतु मे शिखी ।।

श्री केतु-यन्त्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

नौ ग्रहों हेतु दीप-दान अथवा बलि-प्रदान

वैदिक सूक्त-'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे' के अनुसार प्रत्येक मनुष्य में सूर्यादि नौ ग्रहात्मक ज्योति-शक्ति विद्यमान है।

मानव शरीर में विद्यमान सूर्यादि नौ ग्रहात्मक शक्ति को समुचित रूप से विकसित करने के लिए नौ ग्रहों का नित्य पूजन-स्मरण, दीप-दान, बलि-प्रदान करना चाहिए।

सूर्यादि नौ ग्रहों द्वारा भावनात्मक रूप से दिव्य प्रेरणा-दायक शक्ति प्राप्त करने हेतु पहले नौ ग्रहों का ध्यान कर उनकी पूजा करनी चाहिए।

फिर उन्हें निम्न प्रकार से 'दीप-दान' अथवा 'बलि-प्रदान' करना चाहिए।

मध्य में भगवान् सूर्य, सूर्य के ऊपर पूर्व दिशा में भगवान् चन्द्र, अग्नि-कोण में भ० मङ्गल, दक्षिण दिशा में भ० बुध, नैर्ऋत्य-कोण में भ० बृहस्पति, पश्चिम दिशा में भ० शुक्र, वायु-कोण में भ० शनि तथा उत्तर दिशा में भ० राहु और भ० केतु को 'दीप-दान' अथवा 'बलि' देना चाहिए। यथा-

भ०सूर्य : ह्रीं तीग्म-रश्मये आरोग्यदाय स्वाहा।
भ०चन्द्र : क्लीं ह्रीं ऐं अमृत-करामृतं प्लावय प्लावय स्वाहा।
भ०मङ्गल : ऐं ह्रां ह्रीं सर्व-दुष्टान् नाशय नाशय स्वाहा।
भ०बुध : ह्रीं श्रीं सोम सर्वान् कामान् पूरय स्वाहा।
भ०बृहस्पति : ॐ ऐं ॐ सुर-गुरो अभीष्टं यच्छ यच्छ स्वाहा।
भ०शुक्र : शां शीं शूं शैं शौं शः।
भ०शनि : ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं सर्व-शत्रून् विद्रावय विद्रावय मार्तण्ड-सूनवे नमः।
भ०राहु : रां ह्रौं भ्रैं ह्रीं सोम-शत्रो शत्रून् विध्वंसय विध्वंसय राहवे नमः।
भ०केतु : क्रूं ह्रूं क्रैं केतवे स्वाहा।